जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 16 संख्याः 74 प्रभात चूरू, गुरुवार 11 जुलाई, 2024 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

दिया कुमारी ने अपने पहले बजट में रोजगार पर फोकस किया

5 साल में 4 लाख से ज्यादा नौकरियां देने की घोषणा की

जयपुर, 10 जुलाई (वि.सं.)। भजनलाल सरकार का पहला पूर्ण बजट पेश करते हुए उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने युवाओं, महिलाओं, किसानों के लिए कई बड़ी घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा कि सरकार इन 5 सालों में 4 लाख से ज्यादा नौकरियां देगी। इस साल 70 हजार की बजाय एक लाख नौकरियाँ दी जायेंगी। उन्होंने कहा कि पंचायत के चुनाव एक साथ कराए जाएंगे, अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग में आने वाले सरकारी कर्मचारियों को सस्ता लोन दिया जाएगा और सैल्फ हैल्प ग्रुप के साथ काम करने वाली महिलाओं को भी सरकार कम ब्याज पर लोन देगी। इसके अलावा राजस्थान के स्कूली छात्र छात्राओं को मेरिट में आने पर टैबलेट और तीन साल के फ्री इंटरनेट देने की भी घोषणा की गई है। सीकर जिले के खाटूश्यामजी मंदिर में कॉरिडोर बनाने के लिये बजट में 100 करोड़ रुपये की घोषणा की गई। यह कॉरिडोर काशी-विश्वनाथ की तर्ज बनाया जायेगा।

बजट में चिकित्सा और पुलिस विभाग में करीब 9 हजार नए पद भी सृजित करने की घोषणा की गई है। शहरी विकास के लिए बजट में 1300 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। भजनलाल सरकार ने इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर पर खास फोकस किया है। जलजीवन मिशन में इस साल 15 हजार करोड़ खर्च कर 25 लाख ग्रामीण घरों में नलों से पानी पहुंचाने की योजना है तथा प्रदेश के 5846 अतिरिक्त गांवों तक पानी पहुंचाने के लिए 20 हजार करोड़ से ज्यादा की 6 बड़ी परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। करौली, सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी के लिए चंबल आधारित पेयजल परियोजना शुरू करने की घोषणा भी की गई है। ग्रामीण क्षेत्र के साथ शहरी क्षेत्र में पेयजल योजनाओं के लिए अमृत 2.0 योजना के तहत प्रदेश के 183 शहरों में 5 हजार 180 करोड़ के काम होंगे और 127 करोड़ की लागत से 32 वॉटर बॉडीज़ का जीर्णोद्धार करवाने और हर विधानसभा क्षेत्र में 20-20 हैडपंप और 10-10 ट्यूबवैल लगवाने की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को अपना पहला बजट पेश किया।

- उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बतौर वित्त मंत्री रोजगारोन्मुखी बजट पेश किया, जिसमें इन्फ्रास्ट्रक्चर पर भी विशेष जोर दिया गया, इन्फ्रास्ट्रक्चर सैक्टर भी रोजगार सृजन में अहम् भूमिका निभाता है।
- दिया कुमारी ने बजट में कई बड़ी घोषणाएं कीं, जिनमें पंचायत चुनाव एक साथ कराने, अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग के सरकारी कर्मचारियों को सस्ता लोन, मैरिट में आने वाले विद्यार्थियों को लैपटॉप व तीन साल का फ्री इंटरनैट और महिला स्वयं सेवी संस्थाओं को कम ब्याज पर लोन देना प्रमुख हैं।
- दिया कुमारी ने खाटू श्याम जी मंदिर कॉरिडोर निर्माण के लिए 100 करोड़ रू. देने की घोषणा की।

कश्मीर में आतंकियों ने पुलिस चौकी को घेरा

श्रीनगर, 10 जुलाई। जम्मू-कश्मीर के कठुआ में आतंकी हमले के बाद एक और आतंकी वारदात सामने आई है। उधमपुर में आतंकियों ने पुलिस चौकी को घेर लिया है। जम्मू कश्मीर पुलिस के अनुसार, सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच गोलीबारी चल रही है। एस.एस.पी. जोगिंदर सिंह ने बताया कि बसंतगढ़ तहसील की सांग पुलिस चौकी को आतंकियों ने घेर दिया था और गोलीबारी शुरू कर दी थी। हालांकि तुरंत हरकत में आकर सुरक्षाबलों ने जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी है।

- कश्मीर के कठुआ जिलें में स्थित इस पुलिस चौकी पर सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरु हो गई है।

स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि रात 8 बजे के आसपास सांग पुलिस चौकी पर आतंकवादियों ने हमला कर दिया था। जिसके बाद सुरक्षाबलों ने जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। आतंकी जंगल की तरफ भाग गए हैं और उनकी तलाशी के लिए सुरक्षाबलों ने अभियान शुरू कर दिया है। रिपोर्टों के अनुसार, आसपास की सुरक्षा बलों की चौकियों से अतिरिक्त जवानों को मौके पर भेजा गया है। यह क्षेत्र उधमपुर से सड़क मार्ग से 164 किमी और पैदल मार्ग से 28 किमी दूर है।

थकाने वाले लोकसभा चुनाव व उसके बाद की कठिन राजनीतिक गतिविधियों के बाद राहुल विदेश गये

पार्टी के सूत्र यह बताने को तैयार नहीं हैं कि राहुल कहां गये हैं और कब विदेश यात्रा से लौटेंगे

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 जुलाई। कांग्रेस पार्टी सूत्रों ने कहा है कि लम्बे तथा कठिन चुनाव प्रचार और सरकार के गठन के बाद, राहुल गांधी विदेश गए हैं।

पार्टी राहुल की विदेश यात्रा और उनके विदेश प्रवास की अवधि के बारे में कुछ भी कहने को तैयार नहीं है। हालांकि ऐसा माना जा रहा है कि वे इंग्लैंड गए हैं तथा एक सप्ताह के अन्दर वापस आ जाएंगे।

महाराष्ट्र चुनाव सन्निकट होने के कारण सारा फोकस इसी पर है और इसी के तहत महाराष्ट्र के वरिष्ठ नेता शरद पवार ने राहुल गांधी को 14 जुलाई को पंढरपुर यात्रा के लिये आमन्त्रित किया है। यह एक महत्वपूर्ण आयोजन है, जिसमें लाखों भक्तगण हिस्सा लेते हैं। अगर राहुल तब तक लौट आते हैं तो पंढरपुर पदयात्रा में शामिल हो सकते हैं।

कांग्रेस नेताओं का कहना है कि आमन्त्रण तो राहुल गांधी के पास गया है लेकिन इस आयोजन में शामिल होने या न होने के बारे में उन्होंने कुछ भी नहीं कहा, हालांकि सभी विकल्प खुले हुये हैं।

- पर, आम चर्चाओं के अनुसार, राहुल ब्रिटेन गये हैं और लगभग एक सप्ताह में लौटेंगे।
- दूसरी ओर शरद पवार ने उन्हें पण्ढरपुर यात्रा में भाग लेने के लिये 14 जुलाई को आमंत्रित किया है, पर, अभी स्पष्ट नहीं है कि राहुल इस यात्रा में सम्मिलित होने के लिये समय से लौटेंगे या नहीं।
- शरद पवार को आशा थी कि राहुल इस पदयात्रा में सम्मिलित होंगे, क्योंकि लाखों लोग इस धार्मिक यात्रा में शामिल होते हैं, पूरे महाराष्ट्र से आते हैं।
- बहरहाल, महाराष्ट्र विकास अघाड़ी अलायंस ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिये सीटों के बंटवारे पर बातचीत आरम्भ कर दी है।
- पार्टी में यह चर्चा है कि विदेश यात्रा से लौटकर राहुल पार्टी के पुर्नगठन का काम भी शुरु करेंगे, जिससे सही व उपयुक्त व्यक्ति कांग्रेस की ओर से राज्यों में बागडोर संभालें, जिससे पार्टी आगे बढ़े।

इस बीच, महाराष्ट्र के गठबंधन महाराष्ट्र विकास अघाड़ी के तीनों घटक दलों ने महाराष्ट्र में सीट-शेयरिंग पर चर्चा शुरू कर दी है। भाजपा घोर हताशा का परिचय देते हुए उद्धव ठाकरे को गठबन्धन से तोड़ने की तथा भाजपा के खेमे में लाने की कोशिश कर रही है,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'हर महिला अपने पति से ''मेंटनैंस'' लेने का अधिकार रखती है'

सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्णय सुनाते समय कहा कि यह अधिकार हर महिला के लिये लागू होगा, चाहे वे किसी धर्म की अनुयायी हो

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट ने आज एक अभूतपूर्व फैसले में व्यवस्था दी कि कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसिज़र (सी.आर.पी.सी.) की धारा 125 तहत तलाकशुदा मुस्लिम महिला अपने पति से गुजारा भत्ता मांग सकती है और निर्वाह राशि मांगने का कानून सभी विवाहित महिलाओं पर लागू है। इसमें धर्म का कोई लेना-देना नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट ने अपनी टिप्पणी में कहा कि भारतीय पुरूषों के लिए यह जानने का समय आ गया है कि महिला घर को सहेज कर रखने वाली एवं परिवार के लिए त्याग करने वाली शख्स है और उसकी भूमिका अपरिहार्य है।

जस्टिस बी.वी. नागरत्ना और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की एक बैंच ने परिवार में पत्नियों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि पति को अपनी पत्नी को आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाना जरूरी है।

जस्टिस नागरत्ना ने अपने फैसले में टिप्पणी की कि भारत के विवाहित पुरूष को इस तथ्य के प्रति सावचेत हो जाना चाहिए कि उसे अपनी पत्नी को वित्तीय रूप से सशक्त करना है और आर्थिक सहयोग करना है, जिसके पास आय का कोई स्वतंत्र स्त्रोत नहीं होता।

उन्होंने अपने आदेश में कहा कि वित्तीय सशक्तीकरण से आर्थिक रूप से कमजोर पत्नी की स्थिति परिवार में अधिक सुरक्षित होगी। जो विवाहित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इस निर्णय के बाद, अब तलाकशुदा मुसलमान महिला भी कानूनन, अपने पति से मेंटनैंस मांगने का हक रखती है।
- सुप्रीम कोर्ट का तर्क था कि महिलायें अपने परिवार चलाने में तथा संतान को बड़ा करने में इतनी मशगूल रहती हैं कि अपना स्वतंत्र करियर व काम करने के विकल्प को नहीं चुन सकतीं। अतः परिवार की देखभाल व परिवार चलाने की उनकी जिम्मेवारी को कम नहीं आंकना चाहिए तथा अगर पति उन्हें तलाक देता है तो उसे उस तलाकशुदा महिला के ''पर्सनल खर्चों'' के लिये प्रावधान करना कानूनन जरूरी है।

उन्नाव में ट्रक ने बस को टक्कर मारी,18 मरे

उन्नाव, 10 जुलाई (वार्ता)। उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिले के बेहटा मुजावर क्षेत्र में बुधवार भोर ट्रक और प्राइवेट बस की भिड़ंत में 18 लोगों की मृत्यु हो गयी जबकि 19 अन्य घायल हो गये।

जिलाधिकारी गौरांठी राठी ने बताया कि आज सुबह करीब सवा पांच बजे आगरा लखनऊ एक्सप्रेस वे पर तेज रफ्तार निजी बस और दूध के टैंकर में टक्कर हो गयी। इस हादसे में 18 लोगों की मृत्यु हो गयी है जबकि 19 अन्य गंभीर रुप से घायल हैं जिनका इलाज चल रहा है। उन्होने बताया कि प्रथम दृष्टया बस की रफ्तार को हादसे का कारक बताया गया है हालांकि हादसे के कारणों का पता लगाया जायेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे पर दुख व्यक्त किया है।

- यह दुर्घटना लखनऊ एक्सप्रेसवे पर हुई, तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से बस को टक्कर मार दी जिससे बस पलट गई, हादसे में 19 अन्य घायल हुये हैं।

भाजपा का नया अध्यक्ष बनाने में क्यों इतना हिचकिचा रही है पार्टी?

नड्डा का कार्यकाल 30 जून को समाप्त हो गया था, पर, नया अध्यक्ष बनाने की कोई सुगसुबाहट नहीं दिख रही पार्टी में

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 जुलाई। भाजपा तकनीकी रूप से एक नेतृत्व विहीन पार्टी बन गई है, क्योंकि जे.पी. नड्डा, जिन्हें कार्यकाल विस्तार दिया गया था, का कार्यकाल 30 जून को खत्म हो चुका है। भाजपा अध्यक्ष के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त हो जाने के बाद भी उन्होंने जो निर्णय लिए हैं, उस पर सवाल उठाए जा सकते हैं।

अपने कार्यकाल की समाप्ति के पाँच दिन बाद,, नड्डा ने 23 राज्यों के प्रभारियों तथा सह-प्रभारियों, तथा पूर्वोत्तर के राज्यों के समन्वयक तथा संयुक्त समन्वयकों की नियुक्तियों की भी घोषण की तथा 9 जुलाई को उन्होंने हरियाणा में पार्टी विधायक मोहन लाल बाडोली को राज्य का भाजपा अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। बाडोली की नियुक्ति से पहले राज्य भाजपा अध्यक्ष का पद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के पास ही था तथा इस प्रकार, उस समय तक उनके पास दोनों पद थे। ऐसे आरोप लगाये गये हैं कि इस प्रकार के मामलों में उचित तथा आवश्यक प्रक्रिया नहीं अपनाई गई हैं।

23 जनवरी को उनका कार्यकाल समाप्त होने के बाद भाजपा द्वारा नड्डा की जगह नए अध्यक्ष के नाम की घोषणा नहीं किये जाने के बाद असन्तुष्ट पार्टी नेता डॉ. सुब्रमन्यम स्वामी ने चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराई थी कि पार्टी में ''आन्तरिक चुनावों'' का अभाव है तथा नड्डा को ''अवैध सेवा-विस्तार'' दिया गया है। इसके दो सप्ताह के अन्दर ही, भाजपा ने पार्टी संविधान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- नड्डा का पहला कार्यकाल 23 जनवरी को पूरा हो गया था, पर, तब भी नये अध्यक्ष की नियुक्ति की घोषणा नहीं हुई थी, तो सुब्रामण्यम स्वामी ने चुनाव आयोग के समक्ष शिकायत की थी कि भाजपा में ''इंटरनल डैमोक्रेसी'' का अभाव है।
- स्वामी ने जब शिकायत की उसी सप्ताह में भाजपा ने अपने संविधान में संशोधन किया कि पार्टी का पार्लियामैंटरी बोर्ड अगर आवश्यक समझे तो पार्टी अध्यक्ष का कार्यकाल बढ़ा सकता है और तब नड्डा का कार्यकाल छः माह के लिये बढ़ाया था संसदीय बोर्ड ने।
- पर, अब तक नये अध्यक्ष की नियुक्ति की कोई घोषणा नहीं हुई है।
- आर.एस.एस., नड्डा के उत्तराधिकारी की नियुक्ति में भारी रूचि ले रहा है, क्योंकि नड्डा के इस वक्तव्य से कि आर.एस.एस. एक सांस्कृतिक संस्था है और उसे इस भूमिका तक ही सीमित रहना चाहिये तथा भाजपा को आर.एस.एस. की मदद की कोई आवश्यकता नहीं है, आर.एस.एस. काफी अप्रसन्न है तथा नए अध्यक्ष की नियुक्ति का इंतज़ार कर रही है। क्या, नये अध्यक्ष की नियुक्ति कर भाजपा अपने कार्य में अपनी स्वतंत्रता दिखाने की कोशिश में है।

'विमानों जैसी सुविधायें बसों में मिलेंगीं'

नई दिल्ली 10 जुलाई। केंद्रीय सड़क-परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि भारत में जल्द ही ऐसी बसें चलने लगेंगी, जिसमें चाय-कॉपी और नाश्ता मिलेगा यानी बस में वह हर सुविधा मुहैया होगी, जो विमानों में मिलती है और इन बसों में किराया मौजूदा समय में डीजल से चलने वाली बसों के किराये से न्यूनत 30 प्रतिशत कम होगा।

गडकरी ने कहा कि यूरोप में 18 और 24 मीटर की बसे चलती हैं और बसें मेट्रो की तरह की तरह की होती हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि भारत में जल्द ही ऐसी बसें चलने लगेंगी, जिसमें चाय-कॉपी और नाश्ता मिलेगा यानी बस में वह हर सुविधा मुहैया होगी, जो विमानों में मिलती है।

'बजट की हर घोषणा पूरी होगी, अब डबल इंजन की सरकार है'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने बजट की घोषणाएं पूरी होने के संबंध के पूछे गए सवाल पर कहा

जयपुर, 10 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दावा किया है कि समयबद्ध रूप से बजट की घोषणाओं को पूरा किया जाएगा और आमजन की सुविधाओं के लिए सरकार कड़े निर्णय लेने से भी नहीं हिचकेगी। विधानसभा में बजट पेश होने के बाद आयोजित प्रेसवार्ता में मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में अब डबल इंजन की सरकार है और इनके सहारे ही राज्य के विकास को पटरी पर तेजी से दौड़ाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि सरकारें आती हैं बजट पेश करती हैं, लेकिन हमने बजट के साथ विज़न भी पेश किया है। इस बजट में बताया गया है कि 2047 में प्रदेश का विकास कैसा होगा? हमारी सरकार बिजली पानी के लिए कटिबद्ध है। इसके साथ-साथ किसान युवा, महिला और औद्योगिक विकास का ध्यान रखा है। प्रदेश की आठ करोड़ जनता को पूरा-पूरा लाभ हम दें, जनता की आशाओं को पूरा करने का जो वादा हमने किया, उस दिशा में हम बढ़ रहे हैं। हमारी सरकार संकल्प पत्र के एक-एक वादे को पूरा करेगी। हमने चार लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने का वादा किया है, इस साल एक लाख युवाओं को नौकरी देंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बजट में युवाओं की भागीदारी पर फोकस रखा गया है। पिछली सरकार में लोगों के साथ धोखा हुआ। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम से योजना में 500 करोड़ दिए जाएंगे वहीं औद्योगिक विकास के लिए 6 औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया जाएगा। दिल्ली-जयपुर के बीच औद्योगिक क्षेत्र का विकास होगा। सुशासन हमारी पहली प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री ने दीया कुमारी को धन्यवाद दिया कि उन्होंने 3 घंटे तक बजट को सदन में बहुत अच्छे तरीके से रखा। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा भी मौजूद थे।

पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की ओर से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बजट पेश होने के बाद मु. मंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि सरकारें आती हैं बजट पेश करती हैं, लेकिन हमने बजट के साथ विजन भी पेश किया है। बजट में सरकार का विजन भी होना चाहिए।

- मुख्यमंत्री ने कहा, सरकारें आती हैं, बजट पेश करती हैं, पर, हमने बजट में विज़न भी पेश किया है और हमारा विज़न 2047 तक का है।
- मुख्यमंत्री बोले कि पिछली सरकार में लोगों के साथ धोखा हुआ, पर हमारी कोशिश है कि प्रदेश की 8 करोड़ आबादी को पूरा लाभ दें। हमने चार लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने का वादा किया है और एक लाख नौकरियां तो इसी वर्ष दे दी जाएंगी।
- मुख्यमंत्री भजनलाल ने बजट पेश करने के लिए उपमुख्यमंत्री और वित्त मंत्री दिया कुमारी को धन्यवाद दिया।
- पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में बने नए जिलों को लेकर कोई घोषणा नहीं करने के संबंध में पूछे गए सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा, एक जिला बनाने पर 3,000 करोड़ रूपए खर्च आता है। पूर्व सरकार ने बिना बजट के ही नए जिलों की घोषणा कर दी।

तमिलनाडू में एक और शराब काण्ड

चेन्नई, 10 जुलाई (वार्ता)। तमिलनाडु में विक्रावंडी के पुरीकुडीसाई गांव में बुधवार को पुडुचेरी से तस्करी कर लाई गई शराब का सेवन करने वाले सात लोगों को उल्टी और चक्कर आने की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया।यहां विधानसभा उपचुनाव के लिए आज मतदान हो रहा है।

- पुडुचेरी से तस्करी करके तमिलनाडु लाई गई शराब पीने के बाद सात लोगों की तबीयत बिगड़ गई, जिन्हें गम्भीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, बीमार लोगों में से पांच को मुंडियांबक्कम के सरकारी विल्लुपुरम मेडिकल कॉलेज अस्पताल (जीवीएमसीएच) में इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई।

टेलीविजन रिपोर्ट्स के मुताबिक, शराब के पाउच बेचने वाले शख्स की पहचान प्रभु के रूप में की गयी है।

विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

बारिश में औषधीय पौधे लगाएं

मानसून के आते ही लोगों के समक्ष यह दुविधा बन जाती है की इस मानसून में कौन से पौधे लगाएं जो मानव जीवन के लिए हितकारी हो। यह हमारा कर्तव्य और दायित्व है कि हम इस मानसून में अपने घरों में औषधीय पौधे न केवल लगाएं अपितु उनका संरक्षण भी करें। औषधीय गुणों से भरपूर पौधे आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। अगर आप इन पौधों का उपयोग अपनी अच्छी सेहत के लिए करना चाहते हैं।

देशभर में मानसून की बारिश होने से लोगों को जहां भीषण गर्मी से निजात मिली है वहीं पेयजल की समस्या दूर होने की सम्भावना भी व्यक्त की जा रही है। मानसून अपने साथ अपार खुशियां लेकर आता है। लोगों को पीने के लिए जहाँ पानी मिलता है वहां किसान अपने खेतों में बुवाई शुरू कर देते है। इसी के साथ देशभर में पौधरोपण का कार्य भी शुरू हो जाता है। मानसून में अपने घरों में औषधीय पौधे न केवल लगाएं अपितु उनका संरक्षण भी करें। हमारे दादा–दादी और नाना–नानी इन औषधीय पौधों से घरेलु उपचार के लिए उपयोग करते आए हैं। औषधीय पौधें इम्युनिटी बढाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बडे–बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बडे–बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते। फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक रोगों को भोगते हुए जैसे तैसे अपने जीवन की गाडी को हांकते है। पेड़–पौधे हमारे शरीर में होने वाली बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही मनुष्य ने तरह–तरह के पेड़–पौधों का उपयोग किया है अपने–आप को बीमारियों से सुरक्षित रखने के लिए।

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही इस विज्ञान ने भी तरक्की किया। यही कारण है कि प्राचीन जितनी भी विकसित सभ्यताएँ थी उन सभी में औषधीय पौधों के उपयोग की सबल परम्परा थी, चाहे मिस्त्र हो, यूनान हो, बेबीलोन की सभ्यता हो, चीन हो या सिन्धु घाटी की सभ्यता हो। सभी के साथ कुछ ऐसा अवश्य था कि उन्होंने अपनी अलग परम्परा विकसित कर ली थी। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से निपटने के लिए उन परम्पराओं में औषधीय पौधों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। औषधीय पौधे ऐसे पौधे हैं जिनका पारंपरिक रूप से विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों के इलाज के लिए उनके चिकित्सीय गुणों के लिए उपयोग किया जाता रहा है।

इन पौधों में जैविक रूप से सक्रिय यौगिक होते हैं, जैसे अल्कलॉइड्स, फ्लेवोनोइड्स, टेरपेनोइड्स और फेनोलिक एसिड, जो औषधीय गुणों से युक्त पाए गए हैं। भारत में चार ऐसी औषधीय प्रणालियों का चलन है जिनमें औषधीय पौधों का उपयोग आवश्यक है। यह पद्धितयाँ हैं– आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा तथा तिब्बतन। भारत सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण (ऑल इण्डिया को–ऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन एथ्नो–बायोलॉजी) से यह तथ्य सामने निकलकर आया था कि लगभग 8000 पेड़–पौधे हैं भारत में जिनका उपयोग औषधीय गुणों के लिए होता है। आयुर्वेद में लगभग 1800, सिद्धा में लगभग 1100, यूनानी में लगभग 750, तिब्बती विधि में 300 के लगभग तथा लोक परम्परा में लगभग 4700 प्रकार के पेड़–पौधों के उपयोग की परम्परा वैज्ञानिक परम्परा पर आधारित रही है। आयुर्वेद, सिद्धा, तिब्बती तथा यूनानी से सम्बन्धित पुस्तकों में लगभग 2000 प्रकार के पेड़–पौधों के गुणों का विस्तार से विवरण है। 50000 से अधिक ऐसे नुस्खों का प्रचलन भारत में है जिनका उपयोग तरह–तरह की बीमारियों के इलाज के लिए होता है।

हमारे दादा-दादी और नाना-नानी इन औषधीय पौधों से घरेलु उपचार के लिए उपयोग करते आए हैं। औषधीय पौधें इम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े-बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े-बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते।

यह सर्व विदित है कोरोना जैसी महामारी का कहर बीमारों पर अधिक प्रहार करता है। ऐसे में औषधीय पौधें इम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते। फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक रोगों को भोगते हुए जैसे–तैसे अपने जीवन की गाड़ी को हांकते है। यदि हम कोरोना जैसे संक्रमण का मुकाबला करने के लिए अपने घरों पर औषधीय पौधे लगाएं तो ये हमें प्राण वायु तो देते ही है साथ ही स्वस्थ जीवन की राह भी दिखाएंगे। पेड़–पौधे हमारे शरीर में होने वाली विभिन्न बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं।

प्राचीन काल में मानव ने तरह–तरह के पेड़–पौधों की खोज कर खुद को निरोगी रखा। मानव सभ्यता के विकास के साथ विज्ञान ने हमें नयी नयी ऊंचाइयों तक पहुँचाया, इसमें कोई दो राय नहीं है मगर औषधीय पौधों की महत्ता कभी कम नहीं हुई। भारत में औषधीय गुण वाले असंख्य पेड़–पौधे हैं। भारतीय पुराणों, उपनिषदों, रामायण एवं महाभारत जैसे प्रमाणिक ग्रंथों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। रामायण में संजीवनी बूटी की चर्चा आज भी घर घर में सुनी जा सकती है। बहुत सारी अंग्रेजी दवाइयों में आज भी औषधीय पौधों का मिश्रण किया जाता है। सर्दी, जुकाम, बुखार, बीपी, शुगर, उलटी दस्त जैसी सामान्य बीमारियों से लेकर कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों का इलाज भी हमारे औषधीय पौधों में है। यदि इन पेड़ पौधों का हम उचित रखरखाव कर विभिन्न रोगों के इलाज में सही ढंग से उपयोग करें तो ये हमारे स्वस्थ जीवन के लिए बेहद लाभदायक हो सकते है।

औषधीय एवं सुरभित पौधे हमारी धरोहर हैं जिनका वैश्विक महत्व है। विश्व में असंख्य औषधीय एवं सुरभित पौधों की प्रजातियाँ हैं। उनमें से अनेक पौधों का उपयोग हम विभिन्न कारणों से करते हैं और अनेक हमसे अपरिचित हैं। भारत के रेड डाटा बुक में 427 संकटग्रस्त पौधों के नाम दर्ज हैं, इनमें से 28 लुप्त, 124 संकटग्रस्त, 81 नाजुक दशा में, 100 दुर्लभ तथा अन्य पौधे हैं। पारम्परिक औषधि का कोई विपरीत प्रभाव न होने के कारण तथा स्वस्थ जीवन शैली के लिए वर्तमान समय में भी इनका महत्व काफी अधिक बढ़ गया है।

अभी भी विकसित देशों में 80 प्रतिशत जनसंख्या पारम्परिक औषधीय ज्ञान पर ही निर्भर करती हैं। भारत के पहाड़ी और जंगली इलाकों में उपलब्ध तीन सौ से अधिक औषधीय वनस्पतियों की प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है। अगर सरकार इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी। सरकार यदि इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी।

हमारे विभिन्न ग्रंथों और प्राचीन पुस्तकों में हजारों ऐसे नुक्खे बताये गए है जो औषधीय पौधों से निकले है। हमारे देश में आज भी लाखों लोग इन नुस्खों का उपयोग करते है। नीम, तुलसी, बेंग साग, ब्राम्ही, हल्दी, चन्दन, चिरायता, अड़ूसारू, सदाबहार, गुलाब, सहिजन, हडजोरा, करीपत्ता, लहसून, एलोवीरा लेवेंडर, जीरा, पुदीना, गिलोय, सूरजमुखी,पीपल, आक, बरगद, आंवला, गूगल, अदरख नीम्बू, पत्थरचूर, शतावर, अजवायन, चुकंदर, चिरचिटी, कुल्थी, घृतकुमारी, करेला, पिपली, मेथी, पुनर्नवा, मदन मस्त, पिपली, चंपा, रजनीगंधा, श्वेत अपराजिता, सर्पगन्धा, अशोक और वलाक आदि औषधीय पौधों में से बहुत से ऐसे भी है जो घरों में लगाए जा सकते है। इनमें बहुत सी प्रजातियां अब लुप्तप्राय है। आवश्यकता इस बात की है इन बहु गुणकारी औषधीय पौधों के विकास की योजनाएं बनाकर आम आदमी को इनके प्रयोग और उपयोग की जानकारी दी जाएं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार : एक विश्लेषण

डॉ. रामावतार शर्मा

यदि आप गूगल करें तो पाएंगे कि आत्ममुग्धता पर लोग कई तरह के सवाल पूछते रहते हैं। ये सवाल कुछ इस तरह के होते हैं: आत्ममुग्ध लोग कैसे होते हैं? उन्हे कैसे नियंत्रित किया जा सकता है? उनको किस तरह से ठगा जा सकता है, डराया जा सकता है या उनसे कब भयभीत होना चाहिए? इस प्रकार से हम देखते हैं कि एक आत्ममुग्ध (नार्सिसिस्ट) व्यक्ति को लोग सामान्य मानव व्यवहार से बाहर मानते हैं और उस पर व्यंग्य करते हैं या फिर उससे दूर रहते हैं। जो लोग उसके नजदीक रहते हैं वे चाटुकारिता के माध्यम से उसका फायदा उठाना चाहते हैं। परंतु कितने ही ऐसे लोग जिनमें आत्मविश्वास होता है उन्हें भी लोग आत्ममुग्ध की श्रेणी में डाल देते हैं। यहां ध्यान देने की बात है कि आत्ममुग्धता एक मनोवैज्ञानिक निदान है जो किसी अनुभवी विशेषज्ञ द्वारा ही स्थापित किया जाना चाहिए। यह एक व्यक्तित्व विकार है जो पूर्ण विश्लेषण द्वारा ही जाना जाता है इसलिए मनचाहे ही किसी व्यक्ति को इस श्रेणी में नहीं डालना चाहिए।

आत्ममुग्धता एक स्वकेंद्रित अहंकार की स्थिति है जो अधिकतर एक मनोविकार होता है परंतु किसी–किसी में यह मनोरोग का रूप भी ले लेता है। इस विकार में व्यक्ति का सोचना अव्यावहारिक एवम आत्म केंद्रित होता है तथा अन्य लोगों के लिए हानिकारक हो सकता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति अपने आसपास और आधीन लोगों के विकास में बाधक बन जाता है या फिर उनके व्यक्ति को नष्ट तक कर देता है। आत्ममुग्धता एक जटिल निदान है जो अधिकतर मामलों में युवावस्था के प्रारंभिक काल में दृष्टिगत होने लगता है। स्वयं को लेकर भव्यता का अहसास, मानो बीते समय के एक सम्राट हैं और जो कुछ हासिल हुआ है वह उसका अधिकार है। विनम्रता के दिखावे के पीछे अपनी सर्वोत्तमता का प्रदर्शन इस विकार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

विकार ग्रसित व्यक्ति को आत्मप्रशंसा की तलाश रहती है और वह खुद को खुद के नाम से संबोधित करने लगता है। उसमें सत्ता, संपन्नता आदि को लेकर पात्रता का भाव जागृत रहता है जिसके फलस्वरूप वह लोगों का शोषण करने में हिचकता नहीं है। उसके व्यवहार में समानुभूति की जगह उद्दण्डता दिखने लगती है। आत्ममुग्ध व्यक्ति बड़ा ईर्ष्यालु होता है और वह स्वयं के प्रतिभाशाली साथियों और सहयोगियों को भी सहन नहीं करता है, उन्हे परदे के पीछे धकेल देता है। अधिकतर मामलों में वह दर्शाता है कि कितनी निम्न श्रेणी से वह किस विशिष्ट मुकाम तक अपनी प्रतिभा से पहुंचा है। वास्तविकता में देखा जाए तो कोई व्यक्ति यदि किसी बड़े या विशिष्ट मुकाम तक पहुंचता हैं तो उसमें कई लोगों का सहयोग होता है।

ज्ञानी हर सहयोग पर विनम्र होता है जबकि आत्ममुग्ध सब कुछ को नकार–सा देता है। समय के साथ बड़प्पन का यह अहसास व्यक्ति और उसके संस्थान दोनों के लिए नुकसानदेह होता है। बड़बोला व्यक्ति अपने घर परिवार में भी बिखराव को जन्म दे सकता है क्योंकि अपने अहंकारी स्वभाव के कारण वह अन्य सदस्यों के मार्ग को अवरूद्ध करने लगता है।

यहां जो बात विशेष रूप से देखी जानी चाहिए वह कुछ इस प्रकार है। इस लेख को पढ़ने के दौरान या फिर सामान्य जीवन में हम लोग अक्सर दूसरे लोगों में आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार ढूंढने लगते हैं। यह कोई बुद्धिमतापूर्ण व्यवहार नहीं है। सर्वप्रथम हमें अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करना चाहिए कि हमारे स्वयं के अंदर तो इस मनोविकार वाला दानव छुपा नहीं बैठा है। दूसरा अपनी जाने, हम में सबसे बड़ी प्राथमिकता अपने जीवन को विकसित करने की होनी चाहिए। आत्म विश्लेषण द्वारा हम हमारे व्यक्तित्व की खामियां तलाश सकते हैं। यह विश्लेषण यदि जीवनपर्यंत चलता रहे तो विश्वास कीजिए यात्रा आनंददायक बनी रहेगी। यदि स्वयं निदान न कर पाएं तो साल में एक दो बार किसी अनुभवी मनो सलाहकार से बातचीत करना एक उपयोगी निर्णय हो सकता है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

जलभराव से परेशान व्यापारियों ने हिण्डौन में बाजार बंद रखे

कई बाजारों में बरसात से हो रहे जलभराव के विरोध में व्यापारियों ने प्रदर्शन किया

हिण्डौन सिटी, (निसं)। हिण्डौन में बारिश के पानी से कटरा बाजार, सराफा बाजार, कंबलवाल गली में हो रहे जलभराव के विरोध में बुधवार को व्यापारियों ने बाजारों को बंद रखकर प्रदर्शन किया। बाजार में पहुंचे उपखंड अधिकारी के साथ अग्रवाल धर्मशाला में व्यापारियों ने बैठक की और समस्या समाधान की मांग की, जिसके बाद पानी निकासी के लिए नगर परिषद द्वारा नालियों की सफाई का कार्य और तेज कर दिया।

बाजार के व्यापारियों ने बताया कि हिण्डौन के गंदे नाले और छोटी नालियों की सफाई नहीं होने के कारण कटरा बाजार, सराफा बाजार, कंबलवाल गली मार्केट में मामूली बारिश में ही जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पिछले चार दिन हुई तेज बारिश से बाजार में कई–कई फीट पानी भर गया जिसने एक और जहां ग्राहकों को एवं स्थानीय लोगों को आने–जाने में परेशानी का सामना करना पड़ा वहीं दूसरी ओर बाजार में स्थित दुकानों में पानी भरने से व्यापारियों का लाखों रुपए का नुकसान हो गया। बारिश बंद होने के तीसरे दिन भी बाजार की सड़क पर पानी भरा है। जलभराव से परेशान होकर व्यापारियों ने बाजार बंद का आव्हान किया जिसके चलते बुधवार को कटरा बाजार, सराफा बाजार, कंबलवाल गली मार्केट, डेंप रोड के बाजार बंद रहे। दोपहर में एसडीएम हेमराज गुर्जर और नगर परिषद के अधिकारी बाजार पहुंचे और अग्रवाल धर्मशाला में व्यापारियों के साथ बैठक कर जल निकासी के उपायों पर चर्चा की। एसडीएम ने सुझाव दिया कि बाजार में बार–बार जलभराव नहीं हो इसके स्थाई समाधान हेतु प्रयास होने चाहिए। इसके लिए व्यापारियों की एक कमेटी बनाई जाए जो इस समस्या के स्थाई समाधान के लिए सुझाव दे। इसके बाद कार्य हेतु विभाग के तकनीकी विशेषज्ञों से प्रस्ताव बनाकर राज्य सरकार भेजा जाएगा। इस दौरान कई व्यापारियों ने जल निकासी के लिए नाले के पक्के पटाव को तोड़कर सफाई कराने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि इस समस्या के समाधान के लिए मुख्यमंत्री से भी मिल जाएगा। नगर परिषद और प्रशासन यदि कार्य करे तो व्यापारी हर संभव सहयोग के लिए तैयार हैं। वहीं कई लोगों ने सुझाव दिया कि मोहन नगर और स्टेशन रोड की नालियों के पानी को बयाना रोड की नालियों से जोड़कर खरेटा रोड पर सीधे खारी ने निकाला जाए। जिससे उधर का पानी बाजार में नहीं भरेगा। वहीं करौली रोड पर थाने के आसपास की कॉलोनियों से आने वाले पानी को भी दूसरी ओर मोड़ा जाए जिससे बाजार के नाले में अधिक पानी की आवक नहीं हो।

व्यापारियों ने कहा कि जलभराव की समस्या के लिए काफी समय से व्यापारी नगर परिषद, प्रशासनिक अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों से मिल चुके हैं लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं हो सका है। ज्ञात रहे कि हाईकोर्ट के निर्देश के बाद वसुंधरा राजे सरकार ने 17 करोड़ रुपए की राशि नाले के पटाव और उसके ऊपर ढकाव के लिए स्वीकृत की। लेकिन संवेदक द्वारा वाटर लेवल किए बिना ही नाले का पटाव और ढकाव कर दिया जिसके बाद से नाले में कचरा एकत्रित होने लगा। नाले के ऊपर आरसीसी की छत का ढकाव कर देने से अंदर भर कचरा साफ नहीं हो पा रहा है, जिससे जरा सी बारिश में बाजारों में कई फीट पानी जमा हो जाता है। गत दिनों हिण्डौन विधायक अनीता जाटव ने भी जिला कलेक्टर से मिलकर और उपजिला कलेक्टर को इस समस्या से अवगत कराकर ज्ञापन दिया था।

एसडीएम हेमराज गुर्जर और नगर परिषद के अधिकारियों ने व्यापारियों के साथ बैठक कर जल निकासी के उपायों पर चर्चा की।

- **उपखंड अधिकारी के साथ व्यापारियों ने बैठक कर समस्या के समाधान की मांग की**
- **पानी निकासी के लिए नगर परिषद द्वारा नालियों की सफाई का कार्य और तेज कर दिया**

मोहर्रम मिनी उर्स पर ख्वाजा की दरगाह में जायरीन की आवक बढ़ी

अजमेर, (कासं)। मोहर्रम यानी मिनी उर्स पर सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत के लिए आने वाले जायरीन की आवक से दरगाह सहित परिधि क्षेत्र में खासी रौनक बनी हुई है। देशभर के राज्यों से जायरीन के आने का सिलसिला लगातार जारी है। दरगाह सहित विश्राम स्थली पर यह रौनक मोहर्रम तक बनी रहेगी। दरगाह स्थित बाबा फरीद का चिल्ला गुरुवार अलसुबह चार बजे 72 घंटे के लिए आम जायरीन के लिए खोला जाएगा। मालूम हो कि बाबा फरीद के पाकिस्तान स्थित पाक पट्टन में सालाना उर्स के अवसर पर जो जायरीन पाक नहीं जा सकते वे चिल्ले की जियारत करने के लिए अजमेर आते हैं।

कायड़ विश्राम स्थली पर जायरीन के बुधवार को 200 से ज्यादा वाहन खड़े नजर आए। जायरीन की आवक के चलते ही विश्राम स्थली पर अस्थाई दुकान लगाने वालों के कारोबारियों के चेहरे पर खिल उठे हैं। विश्राम स्थली से दरगाह तक आने व जाने के लिए आटो रिक्शा व ई–रिक्शा चालकों के कारोबार में बढ़ोत्तरी हुई है। महाना छठी के बाद जायरीन की रवानगी शुरू हो जाएगी। जायरीन की आवक होने से कायड़ विश्राम स्थली में दरगाह कमेटी और जिला प्रशासन की ओर से तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है, जिससे वहां आने वाले जायरीन को परेशानी नहीं हो।

- **दरगाह स्थित बाबा फरीद का चिल्ला गुरुवार अलसुबह चार बजे 72 घंटे के लिए आम जायरीन के लिए खोला जाएगा**

सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह परिसर स्थित बाबा फरीद का चिल्ला साल में सिर्फ एक बार ही मोहर्रम के वक्त सिर्फ 72 घंटे के लिए खोला जाता है, जिसकी जियारत के लिए देश–विदेश से बड़ी संख्या में जायरीन यहां पहुंचते हैं। इस मौके पर मुस्लिम समुदाय के लोग के अलावा सभी समाजों के लोग बाबा फरीद की जियारत करने के लिए पहुंचते हैं। उल्लेखनीय है कि बाबा फरीद की मजार पाकिस्तान स्थित पाक–पटन में मौजूद है, जहां मोहर्रम की 5 तारीख को उर्स बनाया जाता है। उनके उर्स के मौके पर ही 11 जुलाई को अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह स्थित बाबा फरीद का चिल्ला आम जायरीन की जियारत के लिए खोल दिया जाता है। बाबा फरीद गंज शकर के नाम से भी जाने जाते हैं, जहां उन्होंने ख्वाजा साहब की दरगाह में 40 दिन इस स्थान पर इबादत की थी, उसी जगह को बाबा फरीद का चिल्ला है। चिल्ला की जियारत करने वालों के लिए जायरीन की लाइन लगाने का काम दरगाह परिसर की अकबरी मस्जिद से महफिल खाना होकर शाहजहानी मस्जिद के सामने सोलाखंबा गेट के करीब से लगेगी। इस दौरान कुछ खादिमों का समुदाय जायरीन को पीने का पानी उपलब्ध कराएगा।

खादिमों की संस्था अंजुमान यादगार के उपाध्यक्ष एवं मोहर्रम कनवीनर अब्दुल कलाम चिश्ती ने बताया कि मोहर्रम मिनी उर्स के अवसर पर ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत के लिए आने वाले आम जायरीन के लिए दरगाह परिसर में प्रतिदिन नि:शुल्क लंगर और शरबत उपलब्ध कराया जा रहा है।

दरगाह क्षेत्र में हर कोई हजरत इमाम हुसैन की याद में चिश्तिया रंग में डूबा हुआ नजर आने लगा है। क्षेत्र में ढोल ताशों की गूंज के बीच मर्सियाख्यानी और शहादत का दौर शुरू हो चुका है जहां चारों तरफ हजरत इमाम हुसैन की याद में हुए हरे कपड़े पहने अकीदतमंद नजर आने लगे हैं। मोहर्रम की 9 व 10 तारीख को दरगाह क्षेत्र स्थित अंदरकोट में तलवारों से हाईदौस खेलने की परम्परा है। इसके लिए दी पंचायत अंदरकोटियान को जिला प्रशासन से इजाजत लेनी पड़ती है।

कलेक्टर ने मनरेगा कार्यों का निरीक्षण किया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिला कलेक्टर नमित मेहता ने बुधवार को पंचायत समिति सुवाणा की ग्राम पंचायत देवली में महात्मा गांधी नरेगा के तहत धर्म नाडी में चल रहे कार्यों का आकस्मिक निरीक्षण किया। जिला कलेक्टर ने वहां मेट से श्रमिकों के भुगतान के बारे में जानकारी ली। कार्यस्थल पर पेयजल एवं फर्स्टएड किट के बारे में पूछा। साथ ही मस्टरोल, श्रमिकों की हाजिरी तथा उनके अनुरूप उपस्थिति की भी जांच की एवं आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए गये।

जिला कलेक्टर ने मेट से मजदूरों के टास्क संबंधी जानकारी लिए जाने पर संतोषप्रद जानकारी नहीं देने तथा कार्य में लापरवाही बरतने पर कार्यरत मेट को ब्लैक लिस्ट करने एवं कार्य के पर्यवेक्षण में लापरवाही बरतने पर कनिष्ठ अभियन्ता को हटाकर मुख्यालय जिला परिषद करने के निर्देश अधिशाषी अभियन्ता मनरेगा हरकेश सिंह को दिए।

इसके पश्चात जिला कलेक्टर ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवली का भी निरीक्षण किया। उन्होंने विद्यालय की विभिन्न व्यवस्थाओं, मिड–डे मील व्यवस्था, दुग्ध वितरण व्यवस्था आदि के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए गए। संस्था प्रधान व छात्राओं से मिड–डे मिल की गुणवत्ता के बारे में जानकारी ली। छात्राओं ने बताया कि मिड–डे मील के लिए पुराने विद्यालय परिसर में एक किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। इस पर जिला कलेक्टर ने तुरंत नवीन परिसर में ही एमडीएम के लिए व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने स्कूल में विद्यार्थियों के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया। सघन वृक्षारोपण अभियान के तहत विद्यालय परिसर में एक साथ 350 पौधे लगाए गए। जिला कलेक्टर ने विद्यार्थियों को पौधों पर अपना नाम लिखकर प्रत्येक पौधे की नियमित सार–संभाल के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान प्रधानाचार्य संतोष कुमार जीनगर, पूर्व सरपंच अशोक चौधरी, जिला परिषद के एक्सईएन गोपाल लाल टेलर, ग्राम विकास अधिकारी भैरूलाल धोबी तथा विद्यालय के स्टाफ ने भाग लिया।

- **जिला कलेक्टर ने समयबद्ध कार्य तथा प्रभावी मॉनिटरिंग करने के दिए निर्देश**
- **कलेक्टर ने स्कूल में विद्यार्थियों के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 11 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 1:04 तक, वारियान योग रात्रि 4:09 तक, बालव करण दिन 10:04 तक, चन्द्रमा आज सांय 7 49 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–मेष, बुध–कर्क, गुरू–वृष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 1:04 से आरम्भ होगा। आज स्कन्ध पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:26 तक, चर 10:50 से 12:32 तक, लाभ–अमृत 12:32 से 3:56 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:20

मेष

परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। धन हानि का भय है। घर/परिवार के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में शुभ के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन

अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

नगरपरिषद 70 हजार पौधे लगायेगी

सुजानगढ, (निसं)। नाथो तालाब स्थित ग्रीन स्पेस पार्क में सभापति नीलोफर गौरी ने पौद्यारोपण कर नगरपरिषद के पौद्यारोपण अभियान की शुरूआत की। इस दौरान सभापति ने बताया कि परिषद द्वारा ग्रीन स्पेस पार्क में पांच सौ पौद्ये लगाये जायेंगें तथा नगरपरिषद क्षेत्र में 70 हजार पौद्ये लगाये जायेंगे। नरेगा श्रमिकों द्वारा पौद्यों की देखभाल एवं संरक्षण किया जायेगा। इस दौरान परिषद के सचिव सुरेश चौहान, एटीपी उदयसिंह गुर्जर, सहायक लेखाधिकारी भंवरलाल मेहरडा, कनिष्ठ अभियंता कमलेश कुमार, एसआई ओमप्रकाश स्वामी, मुन्नालाल मीणा, तिलोक चंद, पवन कुमार रांकावत, इरशाद गौरी, पार्षद आसिफ चौहान, मोहन मेघवाल, जाकिर क्याल, शहरी मनरेगा के जेटीए यतेन्द्र सिंह, कृष्ण शर्मा, नरपत सिंह, सरिता, मनीषा सहित अनेक नगरपरिषद कार्मिक, जनप्रतिनिधि एवं नरेगाकर्मी मौजूद थे।

इसी प्रकार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 76 वें स्थापना दिवस पर सोना देवी सेठिया कन्या महाविद्यालय में वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान छात्राओं को पौद्ये वितरित किये गये। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. साधना सिंह, एबीवीपी के प्रांत कार्यसमिति सदस्य राहुल सामरिया, जिला संयोजक विशाल, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य देवांश एवं स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

राज्य की अर्थव्यवस्था को बूस्टर डोज देने वाला है बजट : राजेन्द्र राठौड़

चूरू, (कासं)। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने राजस्थान की वित्त मंत्री एवं उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी द्वारा सदन में प्रस्तुत राज्य बजट 2024-25 पर प्रतिक्रिया दी है। राठौड़ ने इसे राज्य की अर्थव्यवस्था को बूस्टर डोज देने वाला विकासोन्मुखी व जनकल्याणकारी बताते हुए मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री सहित मंत्रिमंडल के सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। राठौड़ ने कहा कि राज्य की भजनलाल सरकार द्वारा प्रस्तुत पहला पूर्णकालिक बजट 2024-25 जन-जन की आकांक्षाओं और आशाओं को पूरा करने वाला है। यह आपणो अग्रणी राजस्थान की संकल्पना की सिद्धि को समर्पित लोक-कल्याणकारी व सर्वसमावेशी संकल्पों को धरातल पर साकार करेगा एवं नये व सशक्त राजस्थान के निर्माण की नींव

- **पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने बजट 2024-25 पर प्रतिक्रिया दी**

रखते हुए राज्य के समग्र विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

राठौड़ ने कहा कि भाजपा की डबल इंजन की सरकार द्वारा प्रदेश में निर्बाध बिजली आपूर्ति हेतु चूरू सहित प्रदेश में 132 केवी जीएएस व लाइनों के निर्माण की स्वीकृति से जिले में पर्याप्त बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। 15 करोड़ रुपए की लागत से चूरू की सड़कों के सुदृढ़ीकरण और बेहतर कनेक्टिविटी के लिए तारानगर शहर व क्षेत्रों की विभिन्न सड़कों व मिसिंग लिंक का कार्य और 200 करोड़ की लागत से तारानगर रोड़ से वाया भालेरी रोड़ वाया सरदारशहर रोड़ वाया रतनगढ रोड़ वाया देपालसर रोड़ से नेशनल हाईवे 52 चूरू तक रिंग रोड़ का निर्माण किया जायेगा। 75 करोड़ की लागत से बाइपास एनएच . 58 से मेगा हाइवे सुजानगढ़ चूरू का निर्माण कार्य व 5-5 करोड़ रुपए की की लागत से राम नगर तिराहा चूरू और ओम कॉलोनी में चूरू में आरओबी का निर्माण, 7 करोड़ 25 लाख रुपए की लागत से मोलीसर रतनगढ़ रेलवे स्टेशन चूरू पर आरओबी 75 निर्माण कराया जाएगा। यह हाइवे, आरओबी और सड़कें चूरू के विकास के नए मार्गों को प्रशस्त करेंगे और शहरवासियों के आवागन को सुलभ बनाएगी तथा शहर में जगह जगह लगने वाले जाम की परेशानी से भी निजात मिलेगी।

राठौड़ ने कहा कि देश और प्रदेश में करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र चूरू के सालासर मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य धार्मिक और पर्यटन को बढ़ावा देने में सार्थक होगा और कृषि के क्षेत्र में अहम स्थान रखने वाले चूरू में कृषि महाविद्यालय खुलने से जिले के विद्यार्थियों को उन्नत खेती और किसानी के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बेहतर अवसर मिलेंगे। मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य के जरिए चूरू में चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए गढ़ चूरू के शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से सैटेलाइन चिकित्सालय में क्रमोन्नयन होने यहां के लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा मिल सकेगी। 100 करोड़ की लागत से सरदारशहर चूरू मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट को उन्नत व सुदृढ़ीकरण किया जाएगा।

चिड़ावा रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया

चिड़ावा, (निसं)। उत्तर पश्चिम रेलवे ने एडीआरएम संजीव दीक्षित आज चिड़ावा रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। दीक्षित शाम के समय चिड़ावा पहुंचे। स्टेशन अधीक्षक आजाद सिंह ने उनका स्वागत किया। दैनिक रेल यात्री संघ सदस्यों ने अध्यक्ष देवेंद्र वर्मा के नेतृत्व में साफा और माला पहनाकर दीक्षित का अभिनंदन किया। एडीआरएम संजीव दीक्षित स्टेशन दफ्तर में सिग्नल प्रक्रिया, स्टोर रूम, रिटायरिंग रूम, ई टिकटिंग प्रणाली, स्टेशन के बाहर पौधारोपण सहित अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली और स्टेशन अधीक्षक आजाद सिंह को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। एडीआरएम संजीव दीक्षित को दैनिक रेलयात्री संघ चिड़ावा अध्यक्ष देवेन्द्र वर्मा ने विभिन्न मांगों के लिए ज्ञापन दिया। एडीआरएम संजीव दीक्षित ने सभी मांगों को ध्यानपूर्वक पढा और इनको जल्द ही पूरा करने का आश्वासन दिया।

पुरानी पेंशन को लेकर विद्युत श्रमिक संघ की बैठक

झुंझुनूं, (निसं)। अजमेर विद्युत वितरण निगम श्रमिक संघ संबद्ध भारतीय मजदूर संघ जिला झुंझुनूं के अधीक्षण अभियंता वृत्त कार्यालय परिसर में पुरानी पेंशन को लेकर बैठक संपन्न हुई। बैठक श्रमिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रघुवीर सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में वृत्त कार्यालय परिसर संघ के जिला महामंत्री सुरेश कुमार शर्मा ने बताया कि पुरानी पेंशन बिजली कर्मचारियों का अधिकार है। परंतु जीपीएफ कटौती चालू नहीं की गई। इसके लिए जल्द जयपुर मुख्यालय विद्युत भवन पर प्रदर्शन किया जाएगा तथा श्रमिक समस्याओं पर चर्चा की गई। समस्याओं के निदान के लिए अधीक्षण अभियंता से वार्ता कर निस्तारण के लिए आश्वस्त किया गया। बैठक में उपस्थित डिस्कॉम महामंत्री देवकरण सैनी की अनुमति से अधीक्षण अभियंता कार्यालय परिसर वृत्त इकाई की कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से किया गया। जिसमें हजारीलाल सैनी को संरक्षक, मूलचंद महला को अध्यक्ष तथा रामावतार शर्मा को सचिव उपस्थित रहे।

'प्रदेश के विकास को दिशा और गति देगा बजट'

चूरू, (कासं.)। भारतीय जनता पार्टी के नेता पद्मभूषण देवेंद्र झाझड़िया ने राज्य सरकार की ओर से बुधवार को पेश किए गए बजट की सराहना करते हुए बजट को राजस्थान के विकास की दिशा और गति तय करने वाला बताया है। झाझड़िया ने कहा कि बजट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मंशा के अनुसार हर वर्ग और हर क्षेत्र को तवज्जो दी गयी है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में विकसित राजस्थान/2047 के लक्ष्य के साथ आगामी 5 वर्ष की कार्ययोजना के तहत 10 लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। उप-मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री दीया कुमारी ने आज सदन में वर्ष 2024-25 का पूर्ण बजट प्रस्तुत करते हुए विकसित और उन्नत राजस्थान के ध्येय को चरितार्थ करते हुए प्रदेश के युवा, किसान, मजदूर, महिला व विद्यार्थी वर्ग के लिए विभिन्न उत्कृष्ट योजनाएँ प्रारम्भ करने की घोषणा की है।

सरपंचों ने विभिन्न मांगों को लेकर दिया धरना

चिड़ावा, (निसं)। सरपंच संघ राजस्थान के प्रदेश व्यापी आव्हान पर चिड़ावा ब्लॉक में उपखंड अधिकारी कार्यालय के बाहर सरपंच संघ के बैनर तले सरपंचों ने धरना दिया और उपखंड अधिकारी, विधायक पितराम काला, सांसद बृजेन्द्र ओला और पंचायत समिति विकास अधिकारी को ज्ञापन दिया। सरपंच संघ चिडावा के अध्यक्ष विनोद डांगी व सचिव संजय सैनी ने बताया कि सरपंच संघ 14 सूत्री मांगों को लेकर अन्दोलनरत है। उनमें मुख्य मांगे करीब 2 साल से बकाया चल रहे एसएफसी, एफएफसी की करीब 7700 करोड़ की किस्तों के भुगतान, मनरेगा की बकाया राशि का भुगतान, जल जीवन मिशन का संचालन जलदाय विभाग को सौंपने, सरपंचों के मानदेय में बढ़ोतरी, समायोजन के नाम पर सरपंचो का शोषण बन्द कर नियमानुसार समायोजन करवाने, खाद्य सुरक्षा में नए परिवारों को जोड़ने आदि प्रमुख हैं।

आंदोलन के चलते सरकार ने 1100 करोड़ की कुछ राशि का भुगतान किया है, लेकिन ये अभी नाकाफी है। सरपंचों ने आंदोलन जारी रखने की बात कही है। आंदोलन ने तहत अब 12 जुलाई को जिला कलेक्टर को ज्ञापन देंगे। फिर भी मांगे नही मानी गई तो 18 जुलाई को विधनसभा का घेराव किया जाएगा।

ज्ञापन देने वालों में सरपंच विनोद डांगी ओजटू, संजय सैनी लाम्बा गोठड़ा, अनिल कटेवा बख्तावरपुरा, उम्मेद सिंह बराला सारी, सुब. महावीर सिंह खुडाना, सरपंच प्रतिनिधि जंग्शेर अली गिडानिया, शीशराम धतरवाला, आशीष झाझडिया नारी, इन्द्राज सिंह , विजय सिंह श्योपुरा आदि शामिल रहे।

'झुंझुनूं के साथ सौतेला व्यवहार किया'

झुंझुनूं, (निसं)। कांग्रेस जिलाध्यक्ष दिनेश सुंडा ने बुधवार को राज्य के बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए इसे नए पैकेट में पुरानी चीज बताया है। सुंडा ने कहा कि झुंझुनूं जिले के साथ सरकार ने सौतेला व्यवहार किया है। गहलोत सरकार ने चिड़ावा और खेतड़ी की सीएचसी को उप जिला अस्पताल में क्रमोन्नत कर उनके भवन के लिए बजट का प्रावधान किया था। लेकिन नई सरकार ने पहले तो इसे रोका और अब अपने बजट में शामिल कर उप जिला अस्पताल के नाम पर वाहवाही लूटना चाहती है।

यही हालत इंदिरा नहर परियोजना का है। झुंझुनूं जिले के हर क्षेत्र को कांग्रेस ने इस परियोजना से जोड़ने का फैसला ले लिया था। मंडावा, खेतड़ी और झुंझुनूं विधानसभा क्षेत्रों में हर घर में पानी पहुंच रहा है। उदयपुरवाटी और सूरजगढ़ विधानसभा में कांग्रेस सरकार ने बजट देकर टेंडर तक की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। वहीं पिलानी व नवलगढ़ के लिए वित्तीय स्वीकृति जारी कर दी थी। लेकिन सरकार बदलने के बाद तकनीकी स्वीकृति जारी नहीं हुई। भाजपा ने तकनीकी स्वीकृति नहीं दी और वित्तीय स्वीकृति को भी निरस्त कर दिया। अब पूर्व में स्वीकृत योजना के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। यही हाल यमुना नहर के पानी की डीपीआर के नाम पर है। ताजेवाला हैड से पूर्व में आवंटित पानी की बजाय कम पानी पर राजस्थान डीपीआर तैयार कर हरियाणा के सामने विवश साबित हो रहा है। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी साजिश तो बजट में खेल यूनिवर्सिटी के नाम पर रची गई है। एक बार फिर भाजपा, खेल यूनिवर्सिटी को दूसरी जगह ले जाने का खेल इस बजट में खेल गई है। झुंझुनूं की खेल यूनिवर्सिटी को लेकर बजट में कोई प्रावधान नहीं रखा। वहीं एक नई महाराणा प्रताप खेल यूनिवर्सिटी की स्थापना की बात कही गई है। जिससे स्पष्ट है कि भाजपा झुंझुनूं जिले का विकास नहीं चाहती। जो विकास झुंझुनूं में होना चाहिए। उसे भी दूसरे रास्तों से दूसरी जगह ले जा रही है। लेकिन कांग्रेस महाराणा प्रताप खेल यूनिवर्सिटी का कोई विरोध नहीं है। पर झुंझुनूं की खेल यूनिवर्सिटी को दूसरी जगह नहीं जाने दिया जाएगा। सुंडा ने कहा कि नवलगढ़ में नगरपालिका को नगर परिषद में क्रमोन्नत करने, शौर्य उद्यान के लिए बजट देने, पुलिस लाइन के पुलिया के निर्माण के लिए बजट देने जैसे कई मुद्दे ऐसे है। जिन्हें सुलझाने के लिए भाजपा के मंत्रियों से लेकर झुंझुनूं के भाजपा नेताओं तक ने दौरे किए। फोटो खिंचवाई और दावा किया कि इन कामों के लिए बजट देंगे।

कार्यालय नगर परिषद, झुन्झुनू (राज.)

कमांक:-एफ-6 भूमि ( )/2024-25/3553 दिनांक :- 05.07.2024

पट्टा निरस्तीकरण आदेश

कार्यालय हाजा द्वारा अनुमोदित ले आउट प्लान स्टेशन रोड के पूर्व का क्षेत्र में स्थित भूखण्ड संख्या 07, क्षेत्र. 700.00 वर्गगज का पट्टा विलेख दिनांक 21.06.2013 को श्री संदीप ,प्रदीप ,कुलदीप, जगदीप मांजू पुत्रगण रामसिंह मांजू को जारी किया गया है। कार्यालय हाजा द्वारा उक्त पट्टा विलेख के सन्दर्भ में में परिवादी श्री खुर्शीद पुत्र इस्माईल खां निवासी मौहल्ला बटवालान झुंझुंनू द्वारा प्रार्थना पत्र पेश कर लिखा है कि भूखण्ड संख्या 07 स्टेशन रोड़ के पूर्व का क्षेत्र , क्षेत्रफल 700 वर्गगज का पट्टा विलेख श्री संदीप ,प्रदीप ,कुलदीप, जगदीप मांजू पुत्रगण रामसिंह मांजू के पक्ष में जारी किया गया है। उक्त पट्टा विलख कुटरचित मिथ्या दस्तावेज पेश करते हुये प्राप्त किया गया है। पट्टा विलेख मे खसरा संख्या 2988 अंकित किया गया है,जबकि आवेदकगणों द्वारा प्रस्तुत क्रय दस्तावेज में कोई खसरा संख्या उल्लेखित नहीं है। खसरा संख्या 2988 के पुराना खसरा संख्या 759/1 राजस्व रिकार्ड में इस्माईल पुत्र जहुर खां उर्फ जुहरा खां के नाम दर्ज है। मेरे पिता द्वारा अपने जीवनकाल में भूमि का बेचान नहीं किया गया है। उक्त भूमि पर हम वारीसान का अधिकार है। इसलिये उक्त पट्टा निरस्त किये जाने बाबत निवेदन किया गया है।

प्रस्तुत परिवाद की सुनवाई करने हेतु कार्यालय पत्रांक 3128 दिनांक 24.06.24 जारी कर दिनांक 28.06.24 को प्रातः 11:00 बजे मय ठोस साक्ष्य उपस्थित होने का जारी किया गया, जिसके कम में पट्टाधारको द्वारा दिनांक 28.06.2024 को प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर जवाब दिये जाने हेतु समय की मांग की गई। परिवाद के सन्दर्भ में नगरपरिषद् के विधि सलाहकार से विधिक राय प्राप्त की गयी , प्राप्त विधिक रिपोर्ट अनुसार " **आवेदकगण द्वारा कय भूमियों से अधिक भूमि रास्ते की भूमि को शामिल करते हुए हस्तगत पट्टा प्राप्त किया गया है तथा पत्रावली संलग्न पीएस कोतवाली झुन्झुनू की अन्तिम रिपोर्ट में आवेदकगण को धारा 199 आईपीसी के अपराध का आरोपी माना है, जिससे प्रकट होता है कि आवेदकगणों द्वारा प्रथम दृष्ट्या मिथ्या दस्तावेजात एवं घोषणा पत्रावली के आवेदन के साथ संलग्न की है, जिसके संबंध में नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 73 ख के प्रावधानो के अनुसार हितबद्ध व्यक्तियों को सुनवाई का समुचित अवसर देने के पश्चात् नगरपालिका को पट्टे व उससे संबंधित प्रस्ताव या कार्यवाही को पूर्णतः या भागतः उपान्तरित, रद्द या विखण्डित करने का अधिकार निहित है। इसलिए उक्त पत्रावली में हितबद्धपक्षकारान को पूर्ण सुनवाई का नोटिस देकर उक्त पट्टे के संबंध में 73(ख) अनुसार कार्यवाही सम्पादित की जानी उचित होगी**"

परिवाद की जांच करने पर संज्ञान में आया कि आवेदकगणों द्वारा जरिये पंजीकृत विक्रय पत्रों के 55.55 वर्गगज(प्रदीप मान्जू), 55.55 वर्गगज (संदीप मान्जू), 250.00 वर्गगज (जगदीप मान्जू), 250.00 वर्गगज (कुलदीप मान्जू) क्रय किया गया है। उक्त पंजीकृत विक्रय पत्रों में 10'0" रास्ता दर्शाया गया है। आवेदकगणों द्वारा उक्त कय की गयी भूमि 611.10 वर्गगज + रास्ते की भूमि 110'0"*10'0"=122.22 वर्गगज कुल क्षेत्र. 733.33 वर्गगज का पट्टा चाहने बाबत आवेदन प्रस्तुत किया गया है। जिसका अनुमोदित ले आउट प्लान के अनुसार क्षेत्रफल, सड़क की चौड़ाई मध्य से 50 फीट होने के कारण 700 वर्गगज का पट्टा जारी किया गया है किन्तु उक्त जारी पट्टा विलेख में रास्ते की भूमि का पट्टा जारी हुआ है। उक्त रास्ते की भूमि का पट्टा पट्टाधारको द्वारा मिथ्या दस्तावेजात प्रस्तुत कर प्राप्त किया गया है।

कार्यालय पत्रांक 3128 दिनांक 24.06.24 के कम में पट्टा धारको द्वारा अनुचित समयावधि की मांग की गयी, जो स्वीकार्य नही होने , प्राप्त विधिक राय के अनुसार एवं पत्रावली अंकित तकनीकी रिपोर्ट के अनुसार पट्टाधारको को सुनवाई का अंतिम अवसर प्रदान करते हुये कार्यालय पत्रांक 3266 दिनांक 28.06.2024 से पट्टाधारको द्वारा कय की गई भूमि से अधिक भूमि का पट्टा विलेख प्राप्त किये जाने के सन्दर्भ में अपना स्पष्टीकरण/जवाब दिनांक 01.07.2024 को प्रातः 11:00 बजे तक प्रस्तुत किये जाने हेतु जारी किया गया। जिसके कम में पट्टाधारको द्वारा कोई तथ्य/ठोस साक्ष्य प्रस्तुत नही किये गये।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि श्री संदीप ,प्रदीप ,कुलदीप, जगदीप मांजू पुत्रगण रामसिंह मांजू द्वारा उक्त पट्टा विलेख आवेदन में मिथ्या तथ्य एवं दस्तावेज प्रस्तुत कर प्राप्त किया गया है। अतः स्वायत शासन नगरीय विकास एवं आवासन विभाग की अधिसूचना दिनांक 31.05.2012 की धारा 34 व राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 73(ख) के अधीन उपरोक्त जारी पट्टा विलेख दिनांक 21.06.2013 से संबंधित समस्त राशि को राजसात करते हुए उक्त पट्टा विलेख दिनांक 21.06.2013 को निरस्त किया जाता है। उक्त पट्टे के आधार पर जारी किसी भी प्रकार की स्वीकृति/अन्तरण को भी निरस्त समझा जावे।

यह पट्टा निरस्तीकरण आदेश मेरे हस्ताक्षर और मोहर के अधीन आज दिनांक 05.07.2024 .को जारी किया गया है।

राज.संवाद/सी/24/2065 **आयुक्त**

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)

कार्यालय सहायक आयुक्त (द्वितीय) देवस्थान विभाग, जयपुर

राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस

समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को

मुकदमा नम्बर 57/2027

(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)

चूंकि श्री चुन्नीलाल पूनियां पुत्र शोलाराम जी पूनियां, ग्राम पोस्ट नाहरसिंघानी, तहसील नवलगढ़, जिला झुंझुंनू ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत प्रन्यास आर्शीवाद बालाजी मंदिर ट्रस्ट, ग्राम पोस्ट नाहरसिंघानी तहसील नवलगढ़, जिला झुंझुंनू के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।

अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियो के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।

और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 08.07.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।

आइदा तारीख पेशी 12.09.2024

मोहर अदालत

सहायक आयुक्त (द्वितीय)
देवस्थान विभाग, जयपुर

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना MAA-YOJANA

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना आयुष्मान भारत PM-JAY

विश्व जनसंख्या दिवस

के अवसर पर

राज्य स्तरीय समारोह

दिनांक: 11 जुलाई, 2024 | समय: दोपहर 01.00 बजे

श्री भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री **श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

स्थान: राजस्थान इन्टरनेशनल सेंटर, झालाना डूंगरी, जयपुर

मां और बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य के लिए
सही समय और उचित अंतराल पर गर्भधारण

मुख्य अतिथि
श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

अध्यक्षता
श्री गजेन्द्र सिंह खींवसर
माननीय मंत्री, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग

परिवार की खुशहाली के लिए प्लान करें

पहला बच्चा शादी के 2 साल बाद	2 बच्चों में कम से कम 3 साल का अंतर	बच्चों में अंतर रखने के लिए गर्भ निरोधक साधनों का उपयोग करें	लड़की की शादी 18 तथा लड़के की शादी 21 साल के बाद

राजस्थान संवाद

विकसित भारत की नई पहचान - परिवार नियोजन हर दम्पती की शान

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाएं, (आई.ई.सी.) राजस्थान, जयपुर

NATIONAL HEALTH MISSION राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन राजस्थान

चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं प. क. संस्थान राजस्थान

हरियाणा में डॉ. सतीश पूनियां के भव्य स्वागत में उमड़ा जनसैलाब

भिवानी, हिसार से लेकर रोहतक तक डॉ. सतीश पूनियां के स्वागत में किसानों, माता-बहनों और युवाओं ने ताकत दिखाई

चंडीगढ़/हिसार/रोहतक। भाजपा केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा हरियाणा भाजपा प्रदेश प्रभारी नियुक्त होने के बाद पहली बार हरियाणा आए डॉ. सतीश पूनियां का भिवानी, हिसार से लेकर रोहतक तक भाजपा कार्यकर्ताओं, जन प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों, किसानों, युवाओं एवं माता-बहनों ने भव्य स्वागत अभिनंदन कर तीसरी बार हरियाणा में भाजपा सरकार बनाने का संकल्प लिया। आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर राजनीतिक हलचल बढ़ने लगी है तथा नेता सक्रिय होकर चुनावी मैदान में उतर चुके हैं।

इसी कड़ी में बुधवार को भाजपा हरियाणा प्रभारी सतीश पूनियां भिवानी, हिसार, रोहतक पहुंचे। उनके साथ कैबिनेट मंत्री कमल गुप्ता, जेपी दलाल, प्रदेश महामंत्री सुरेंद्र पूनिया, पूर्व मंत्री कैप्टन अभिमन्यु इत्यादि मौजूद रहे। इस मौके पर झुप्पा बस स्टैंड पर भाजपा जिला अध्यक्ष मुकेश गौड ने हरियाणा प्रभारी का स्वागत किया। पूनियां का अभिनंदन करने उमड़े हजारों लोगों ने फूलों के हार पहनाए और भाजपा जिंदाबाद के नारे लगाए। इस मौके पर भाजपा हरियाणा प्रभारी सतीश पूनिया ने कहा कि वर्ष 2014 के बाद भारत बदल चुका है। अब पहले वाला भारत नहीं रहा कि पाक से आकर आतंकी हमारे सैनिकों के सिर काट ले जाए और तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी, राहुल गांधी मौन ही रहते थे। डॉ. पूनियां ने कहा कि आज दिल्ली में शेर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बैठा है। छोटी सी घटना पर भी पाक की सीमा में घुस कर बदला लिया जाता है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने देश की जनता को गुमराह करके अपनी औछी राजनीति का प्रदर्शन किया गया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस द्वारा भाजपा की सरकार बनने पर संविधान बदल देने का झूठा प्रचार किया जाता रहा, जबकि सच्चाई थी कि भाजपा नेताओं ने कभी ऐसा बयान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि उनका ये खेल जनता समझ चुकी है तथा विधानसभा चुनाव में ऐसे झूठे लोगों को सिरे से नकारने का काम करेगी। उन्होंने कहा कि देश व प्रदेश की जनता को अब भाजपा के विजन पर भरोसा है तथा वे तीसरी बार भी प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने का काम करेंगे। पूनिया ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने हर वर्ग के उत्थान के लिए अनेक योजनाएं लागू की है तथा अनेक घोषणा भी की है, जिनका सिलसिला जारी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के भ्रष्टाचार के चर्चे हरियाणा में अब भी गूंजते हैं।

हरियाणा का इतिहास सदा कांग्रेस के खिलाफ रहा है। जनता ने लगातार दस साल से कांग्रेस को नकारा हुआ है और आगे भी कांग्रेस का सूपड़ा साफ करने के लिए जनता तैयार बैठी है। डॉ. पूनिया बुधवार को हिसार में विस्तारित जिला कार्यकारिणी को संबोधित कर रहे थे। यहां पूनिया ने पार्टी कार्यकर्ताओं की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता जब मेहनत करता है तो देश और प्रदेश में कमल खिलता है। हिसार पहुंचने पर जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़ ने प्रदेश प्रभारी का स्वागत किया। प्रदेश प्रभारी ने कहा कि विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस के झूठ का सामना करना होगा। चुनाव में कांग्रेस फिर से कोई नया भ्रम फैलाएगी और मतदाताओं को भ्रमित करेगी। कैबिनेट मंत्री डा. कमल गुप्ता ने कहा कि विधानसभा चुनाव में प्रचंड जीत के लक्ष्य को लेकर हमें काम करना है। उन्होंने कहा कि जनता को बीजेपी के विकास के विजन पर भरोसा है। नायब सरकार हर वर्ग का विकास कराने के लिए गंभीरता से काम कर रही है।

भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़ ने विस्तारित जिला कार्यकारिणी में आए सभी अतिथियों का स्वागत किया और आभार जताया। इस मौके पर प्रदेश महामंत्री सुरेन्द्र पुनिया, जिला प्रभारी जवाहर सैनी, पूर्व राज्य सभा सांसद डॉ. डीपी वत्स, प्रदेश सचिव कैप्टन भूपेंद्र वीरचक्र, चेयरमैन श्रीनिवास गोयल, जिला महामंत्री अशोक सैनी, पूर्व विधायक वेद नारंग, पूर्व मेयर गौतम सरदाना, जिला उपाध्यक्ष धर्मवीर रतेरिया, मनदीप मालिक, पूर्व प्रदेश सचिव सरोज सिहाग, संजीव रेवाड़ी, रवि सैनी, डॉ. वैभव बिदानी, जगदीश जिंदल, पूर्व विधायक छत्रपाल, सोनू डाटा, रतन सैनी, रणधीर पनिहार, मीडिया प्रभारी सुरेश गोयल धूप वाला आदि उपस्थित रहे।

हरियाणा भाजपा प्रदेश प्रभारी नियुक्त होने के बाद पहली बार हरियाणा आए डॉ. सतीश पूनियां का स्वागत किया गया।

‘देश व प्रदेश की जनता को अब भाजपा के विजन पर भरोसा है तथा वे तीसरी बार भी प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने का काम करेंगे’

पूर्व विधायक संयम लोढा व अन्य की गिरफ्तारी पर रोक

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश अरूण मोंगा ने सिरोही में संत पोमजी महाराज की पत्नी सत्तु बाई के हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सिरोही में हुए जन आंदोलन में पुलिस द्वारा दर्ज किए मुकदमे में पूर्व विधायक संयम लोढा व अन्य की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। लोढा व अन्य ने उच्च न्यायालय में मामले को झूठा बताते हुए एफआईआर निरस्त करने की याचिका दायर की है। याचिकाकर्ताओं को पुलिस जांच में सहयोग करने के लिए कहा गया है।

वरिष्ठ अधिवक्ता एमएस सिंघवी ने बताया है कि उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि यह मुकदमा राजनैतिक द्वेषवश दर्ज किया गया है। पुलिस ने अपने अधिकारों का दुरूपयोग किया है। सिंघवी ने बताया कि आंदोलन विधिवत अनुमति लेकर किया जा रहा था, लेकिन पुलिस ने आंदोलन को दबाने के लिए झूठे आधार बनाकर बिना किसी साक्ष्य के मुकदमा दर्ज कर दिया। ऐसा याचिकाकर्ताओं को सबक सिखाने के लिए राजनैतिक द्वेषवश किया गया है। इस बाबत राज्य सरकार को नोटिस जारी किया गया है।

याचिका में कहा गया कि लोढा 15 साल सिरोही विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहे हैं और उन्हें 2020-21 में राजस्थान विधानसभा में सर्वश्रेष्ठ विधायक के पुरस्कार सम्मानित किया गया और वे कॉमनवेल्थ पार्लियामेंट्री एसोसिएशन राजस्थान इकाई (सीपीए) के सचिव भी रहे हैं। मुकदमा राजनैतिक बदलने की भावना से उनको क्षति पहुंचाने के लिए दर्ज किया गया है।

राजस्थान कायमखानी महासभा
(पंजीयन क्र. 316/79-80)
संशोधन
राष्ट्रदूत समाचार पत्र में दिनांक 10 जुलाई 2024 को AGM मीटिंग की प्रकाशित आम सूचना में सहवन से पंजीकृत संख्या 316/77-80 अंकित हो गया है। कृपया जिसे 316/79-80 पढ़ा जावे।
(रि.) ले. कर्नल शौकत अली खां (संयोजक) — अमजद खां कसनाउ (कार्यवाहक अध्यक्ष)

दो कांस्टेबल निलम्बित

अजमेर, (कासं)। अजमेर में शराब पीकर उत्पात मचाने और ठेले वालों से अवैध वसूली के मामले में पुलिस अधीक्षक देवेंद्र कुमार विश्नाई ने दो कांस्टेबल को निलंबित कर दिया है, दोनों कांस्टेबल पुलिस लाइन में तैनात हैं। मंगलवार को प्रभात सिनेमा गली पुलिस लाइन में तैनात दो कांस्टेबल ने शराब पीकर हाई वोल्टेज ड्रामा किया था। मामला उजागर होने के बाद पुलिस अधीक्षक विश्नोई ने तत्काल कार्यवाही करते हुए दोनों को निलंबत कर दिया। उल्लेखनीय है कि पुलिस लाइन में तैनात कांस्टेबल सीताराम चौधरी नशे की हालत में नाश्ता करने पहुंचा था। एक अन्य पुलिसकर्मी भी शराब के नशे में धुत्त होकर सड़क किनारे बैठा हुआ था। कांस्टेबल सीताराम चौधरी ने ठेले वालों को ठेला हटाने की धमकी दी थी। ठेले वालों का आरोप था कि पुलिसकर्मी ने खाने के पैसे भी नहीं दे रहे थे। कांस्टेबल सीताराम पहले भी कई बार शराब के नशे में धुत्त होकर हंगामा कर चुका है।

कार्यालय नगरपालिका तारानगर (चूरू) राज.
Office Telephone No. 01561-240245, E-mail - eotrn2009@gmail.com
क्रमांक :- न.पा.ता./2024/1264 - 67 — दिनांक :- 09/07/2024
ई-निविदा सूचना 02/2024-25
सर्व साधारण एवं पंजीकृत ठेकेदारो/फर्मो की जानकारी हेतु प्रसारित किया जाता है कि तारानगर नगरपालिका क्षेत्र में नगरपालिका तारानगर द्वारा स्वीकृत कार्य ऑनलाईन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है। नगरपालिका तारानगर द्वारा नगरपालिका, राज्य व केन्द्र सरकार के सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारो को कार्य हेतु पंजीकृत संवेदको से टेण्डर के माध्यम से दिनांक 09.07.2024 से दिंनाक 18.07.2024 को निविदा ऑनलाईन आमंत्रित की जायेगी। जिसकी निविदा से सम्बन्धित अन्य विवरण व शर्ते वेबसाईट **https://eproc.rajasthan.gov.in** पर देखी जा सकती है।
UBN No DLB2425A0863, Amount :- 16.00 Lakh
राज.संवाद/सी/24/2040 — अधिशाषी अधिकारी

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम) एसबीयू एण्ड पीसी-लाईमस्टोन, 8, वेस्ट पटेल नगर, सर्किट हाउस रोड, जोधपुर- 342001 (राज.), फोन नम्बर: (0291)2511031/2516199 फैक्स: (0291)2511029
ई-निविदा — दिनांक :- 09/07/2024

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
आर.एस.एम.एम./एसबीयू एण्ड पीसी-एल.एस./जीजीएम-एलएस/ संविदा-06/2024-25 दिनांक:-08.07.2024 UBN No- MML2425WSOB00059	सानू माईन्स जैसलमेर के लिये पानी स्प्रिंकलरयुक्त दो 10,000 लीटर अथवा इससे अधिक क्षमता के ट्रक चैसिस (मॉडल वर्ष 2020 अथवा उसके बाद का) पर बने पानी के टैंकरो द्वारा रामगढ़ नहर/रामगढ़ स्थित पी.एच.ई.डी. हाईड्रेट से कम्पनी की सानु लाईमस्टोन माईन्स तक पानी परिवहन कर निविदा में दर्शित विभिन्न कार्य निष्पादित करना। अनुमानित राशि- रू. 68.40/- लाख, धरोहर राशि - रू. 136000/-, निविदा प्रपत्र मूल्य- रू 4720/-

उपरोक्त निविदा की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.rsmm.com, www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in अथवा प्रबन्धक (अनुबंध) से उपरोक्त पतें पर सम्पर्क करें।
राज.संवाद/सी/24/2037 — उप महाप्रबन्धक (का.एवं.प्रशा.)

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान
No. :- F-2(01)Acct/Contract/2024-25/34 - 36 — Date : 05/07/2024
ई-निविदा सूचना संख्या : 10/2024-25
उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा कार्यो की कुल लागत	:	रूपये 264.30 लाख (09 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/ अपलोड करने की अवधि	:	10.07.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 19.07.2024 को सांयः 6.00 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	:	10.07.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 19.07.2024 को सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	:	22.07.2024 को प्रातः 11.00 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
UBN No. : ITU2425WSOB00090 To ITU2425WSOB00098
राज.संवाद/सी/24/2044 — अधिशाषी अभियन्ता-तृतीय, उदयपुर विकास प्राधिकरण

छात्रसंघ चुनाव कराने की मांग

भरतपुर, (निसं)। पूर्व छात्रसंघ महासचिव हरजीत सिंह सांखला, कौशल फौजदार, रजत पूनियां के नेतृत्व में भरतपुर के बिजली घर चौराहे मथुरागेट थाने के पास पानी की टंकी पर चढ़कर छात्रसंघ चुनाव कराने को लेकर प्रदर्शन किया। कौशल फौजदार ने कहा कि छात्रसंघ चुनाव लोकतंत्र की प्रथम पाठशाला माने जाते हैं। राजस्थान में छात्रसंघ चुनावों का बहुत पुराना इतिहास है। यही कारण है कि राजस्थान प्रदेश में छात्रसंघ चुनावों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों ने प्रदेश की राजनीति में मंत्री, विधायक व मुख्यमंत्री पदों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हरजीत सिंह सांखला ने कहा कि गत वर्ष राजस्थान सरकार ने सत्ता में आने से पहले घोषणा पत्रों में यह आश्वासन दिया था कि राज्य में अगर उनकी सरकार आती है तो छात्रसंघ चुनावों को बहाल किया जाएगा। युवाओं के भविष्य का ध्यान रखा जाएगा। युवाओं के लोकतांत्रिक अधिकारों का सरकार द्वारा हनन किया जा रहा है। विद्यार्थियों की ओर से लगातार चुनाव कराए जाने की मांग जोर-शोर से की जा रही है। विद्यार्थियों में लोकतान्त्रिक व प्रदेश में युवाओं को राजनीति के लिए प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार पुनः छात्रसंघ चुनावों को कराए।

शिक्षा के साथ-साथ कौशल विकास से भी विद्यार्थियों को जोड़ें विश्वविद्यालय : मिश्र

कोटा में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा, (निसं)। कुलाधिपति एवं राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि खुला विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम इस तरह से बनें कि उनमें युग की आवाज ध्वनित हों। उन्होंने नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों के भविष्य के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम निर्मित करने और पहले से बने पाठ्यक्रमों को अपडेट करने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा के साथ-साथ कौशल विकास से भी विद्यार्थियों को जोड़ें। मिश्र बुधवार को वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में संबोधित कर रहे थे।

समारोह को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा कि यह समय सूचना क्रांति और इंटरनेट का है। इस दौर में खुला विश्वविद्यालय की प्रासंगिकता तेजी से बढ़ रही है। राज्यपाल ने कहा कि आज शिक्षा का परिदृश्य पूरी तरह बदल गया है और दूरस्थ शिक्षा की महती आवश्यकता है। इसका दायरा बढ़ रहा है। मिश्र ने कहा कि आज डिजिटल का युग है और शिक्षा में तकनीक का उपयोग बहुत जरूरी हो गया है जो शिक्षार्थियों को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। मिश्र ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को पूरा करने के लिए कौशल विकास से जुड़ी शिक्षा ही अधिक उपयोगी है।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा जीवन गढ़ती है। शिक्षा का उजियारा अंदर एवं बाहर के अंधियारे को नष्ट करता है। दीक्षांत प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के जीवन में एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। वे यहां से ज्ञान के अथाह सागर में प्रवेश कर रहे हैं। जो ज्ञान अभी तक उन्होंने अर्जित किया है उसका उपयोग समाज एवं देश को आगे बढ़ाने में करें। राज्यपाल ने खुला विश्वविद्यालय को शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ऐसी शोध पीठों की स्थापना अपने यहां करें जिससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मंतव्य को प्रभावी रूप में पूरा किया जा सके। मिश्र ने खुला विश्वविद्यालय के शिक्षकों का आव्हान किया कि वह अपने पाठ्यक्रम को निरंतर अपडेट करते रहें जिससे भावी विद्यार्थियों को कोई परेशानी ना हो। मिश्र ने कोटा खुला विश्वविद्यालय द्वारा बालिकाओं को निशुल्क शिक्षा प्रदान किए जाने के कदम की सराहना की। उन्होंने शैक्षिक नवाचारों के साथ विश्वविद्यालय को ज्ञान की भारतीय परम्परा का उत्कृष्ट केन्द्र बनाए जाने का आह्वान किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कैलाश सोढानी ने विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। दीक्षांत समारोह में जून 2021 और दिसंबर 2021 की परीक्षाओं के कुल 39,065 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की।

कोटा में राज्यपाल कलराज मिश्र ने दीक्षांत समारोह में छात्र-छात्राओं को उपाधियां प्रदान की।

कार्यालय नगरपरिषद, राजसमन्द
जिला परिषद रोड, राजनगर
टेलिफोन नं. 02952-220034, फेक्स नं. 02952.221233, ई-मेल rajsamandnagarpalika@gmail.com
क्रमांक : एफ( )नपरा/इंजी/ई निविदा/3/2024-25/1518 — दिनांक :- 03.07.2024
ई-निविदा सूचना संख्या 3/2024-25
नगर परिषद राजसमन्द द्वारा निम्नांकित योजनाओं के विकास कार्यो हेतु समस्त विभागों में पंजीकृत संवेदकों, कम्पनी, संगठनों/संस्थानों से ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन तकनीकी व वित्तिय निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड़ की जा सकती है।

निविदा क्रार्यक्रम	तिथि व समय
कार्य की संख्या	17
कार्यो की अनुमानित लागत	256.13 लाख
निविदा अपलोड की तिथि	08.07.2024 06:00 PM
निविदा डाउनलोड प्रारम्भ तिथि	09.07.2024 02:00 PM
ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	22.07.2024 03:00 PM
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथि	23.07.2024 02:00 PM
ऑनलाईन निविदा हेतु वेबसाईट	http://eproc.rajasthan.gov.in
दोष निवारण अवधी	नियमानुसार

UBN NO. DLB2425WSOB02641, DLB2425WSOB02642
सभापति, नगरपरिषद राजसमन्द — आयुक्त, नगरपरिषद राजसमन्द
राज.संवाद/सी/24/2006

‘30 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों को प्रतिदिन 12 घंटे से भी कम बिजली मिलती है’

ये निष्कर्ष, ऑरेंज ट्री फाउंडेशन द्वारा किए अंडरस्टैंडिंग द अवेलेबिलिटी एंड क्वालिटी ऑफ इलेक्ट्रिक सप्लाई शीर्षक से अध्ययन के हिस्से के रूप में जारी किया है

जयपुर। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिदिन औसतन 12 घंटे तक बिजली कटौती होती है, जबकि राज्य के शहरी क्षेत्रों में काफी कम कटौती होती है (प्रतिदिन 0 से 6 घंटे तक)। इसके अतिरिक्त, राजस्थान में करीब 60 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को शिकायत के बाद बिजली बहाली के लिए 6 घंटे से अधिक समय तक इंतजार करना पड़ता है, जबकि केवल 13 प्रतिशत शहरी उपभोक्ताओं को ही इतनी लंबी देरी का सामना करना पड़ता है। ये निष्कर्ष, ऑरेंज ट्री फाउंडेशन द्वारा किए गए अंडरस्टैंडिंग द अवेलेबिलिटी एंड क्वालिटी ऑफ इलेक्ट्रिक सप्लाई शीर्षक से अध्ययन के हिस्से के रूप में जारी किया गया है।

- **प्रदेश में गांवों की अपेक्षा शहरों में बिजली की पहुंच अधिक है, बिजली की पहुंच और गुणवत्ता में गंभीर ग्रामीण-शहरी असमानताएं उजागर**
- **60 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को बिजली बहाल के लिए 6 घंटे से अधिक इंतजार करना पड़ता है**

जयपुर (उत्तर), बांसवाड़ा (दक्षिण) और जोधपुर (पश्चिम) में 12 स्थानों (6 गांवों और 6 वार्डों) को कवर करते हुए, अध्ययन का उद्देश्य बिजली आपूर्ति की उपलब्धता और गुणवत्ता के साथ-साथ जीवन, आजीविका और व्यवसायों पर अनिश्चित और निम्न-गुणवत्ता वाली बिजली के प्रभावों का आकलन करना था। देश भर में 100 प्रतिशत विद्युतीकरण हासिल करने के बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों को अभी भी बिजली की निश्चित और गुणवत्तापूर्ण आपूर्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। जिसका नकारात्मक प्रभाव बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, छोटे व्यवसायों के साथ-साथ दैनिक गतिविधियों पर पड़ रहा है।

रिपोर्ट में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच काफी असमानता पाई गई, जहां केवल 3 प्रतिशत ग्रामीण उपभोक्ताओं को शिकायत दर्ज कराने के एक घंटे के भीतर बिजली बहाल हो जाती है, जबकि लगभग 51 प्रतिशत शहरी उपभोक्ताओं को शिकायत दर्ज कराने के एक घंटे के भीतर त्वरित बहाली का अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त, राजस्थान में लगभग 25 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने वोल्टेज में उतार-चढ़ाव के कारण व्यवधान और उपकरण खराब होने की बात कही है। बार-बार बिजली कटौती और वोल्टेज में उतार-चढ़ाव ने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका को प्रभावित किया है, जहां कृषि गतिविधियों और लघु-स्तरीय व्यवसायों के लिए बिजली की पहुंच महत्वपूर्ण है। ऑरेंज ट्री फाउंडेशन की अध्ययन प्रमुख एवं सलाहकार, शोभना तिवारी ने कहा कि अध्ययन में पिछले दशक में बिजली की उपलब्धता और आपूर्ति की गुणवत्ता में व्यापक सुधार पर प्रकाश डाला गया है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में 2015 से बिजली की आपूर्ति में वृद्धि देखी गई है। हालांकि, अभी भी कई दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्र ऐसे हैं जहां बिजली की पहुंच अभी भी कम है। यह ग्रामीण बनाम शहरी क्षेत्रों के बीच का अंतर है, वह विकास की राह को भी प्रभावित करता है।

समता पावर के निदेशक, डी.डी. अग्रवाल ने कहाकि सरकार राजस्थान में बिजली की आपूर्ति और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही है। हालांकि, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अंतर अभी मौजूद है, इसलिए गांवों में विद्युतीकरण में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है। इस डिजिटल युग में, जहां शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कई अन्य सेवाएं विश्वसनीय इंटरनेट और कंप्यूटर सेवा पर निर्भर करती हैं, वहां निरंतर चौबीस घंटे बिजली की आपूर्ति महत्वपूर्ण है।

राजस्थान में 60 प्रतिशत से अधिक उपभोक्ताओं, विशेषकर शहरी उपभोक्ताओं, ने वोल्टेज में उतार-चढ़ाव के कारण उपकरण खराब होने की शिकायत की। अध्ययन में यह भी पाया गया कि राजस्थान में लगभग 50 प्रतिशत उपभोक्ताओं को अपने घरों में स्थिर बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए लगभग 1000 रुपये का खर्च उठाना पड़ा। अध्ययन के निष्कर्ष एक राउंडटेबल, पीपल्स व्यू ऑन क्वालिटी ऑफ इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई इन राजस्थान में जारी किए गए, जिसमें विभिन्न उद्योग विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और जन प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह रिपोर्ट पॉलिसी मेकर्स, स्टेकहोल्डर्स और कम्यूनिटी के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में कार्य करती है, जिसका उद्देश्य अंतर्निहित अंतराल को कम करना और राजस्थान में बिजली आपूर्ति परिदृश्य में सुधार करना है।

भगवान श्री जगन्नाथ की रथयात्रा निकली

भरतपुर, (निसं)। भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा समिति एवं इस्कॉन भरतपुर के संयुक्त तत्वावधान में भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा का कार्यक्रम एक होटल में सम्पन्न हुआ। समिति महामंत्री महेश चंद सिंघल ने बताया कि भगवान श्री जगन्नाथ, भाई बलराम एवं बहिन सुभद्राजी विग्रहों का वृन्दावन से आगमन होने पर होटल के मुख्य गेट पर पूर्व विधायक विजय बंसल, समिति संरक्षक संजीव गुप्ता, अध्यक्ष मोहन मित्तल, कार्यक्रम संयोजक विष्णु लोहिया, इस्कॉन के रसराज दास ने पुष्पवर्षा एवं विशेष प्रार्थना द्वारा भगवान की अगवानी कर उन्हें होटल के मुख्य हॉल में पुष्प सुसज्जित रंग बिरंगी इन्द्रधनुषी छटा से अलौकिक स्टेज के आसनों पर आरूण कराया।

इस्कॉन वृन्दावन के महन्तों द्वारा भगवान के विग्रहों को नवीन अलंकृत पोषाक धारण करायी गयी, पुष्प पत्र, इत्र गुलाब जल एवं मलयागिरी चंदन आदि से अनुपम श्रृंगार किया, विशिष्ट 56 प्रकार के व्यंजनों से भगवान को भोग लगाया गया। संतों द्वारा भगवान की महिमा का गुणगान एवं हरिनाम संकीर्तन किया गया। इस्कॉन वृन्दावन के निर्देशक राधाश्याम सुन्दरदास ने भगवान श्री जगन्नाथ स्वामी की कथा सुनायी। जिसको सुनकर सभी भाव विभोर हो गये।

इस्कॉन भरतपुर जॉन के निदेशक विष्णु नाम प्रभु ने भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रथ पर आरूण भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने मात्र से पापों से मुक्ति मिलती है। ख्याति प्राप्त नृत्यांगना देवावलि देव ने भरतनाट्ययम का मनमोहक मंचन किया। कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि डॉ. अमित यादव, जिला कलेक्टर एवं मृदुल कच्छावा पुलिस अधीक्षक का समिति पदाधिकारियों ने दुपट्टा ओढ़ाकर एवं स्मृति चिंह प्रदान कर स्वागत किया इनके द्वारा महाआरती करायी गई। जगन्नाथजी की पालकी सिर पर धारण कर भक्तों का मनोहारी नृत्य भक्तिभाव में हरीनाम संकीर्तन प्रत्येक दर्शक के हृदय में भक्ति एवं आस्था का संचार कर रहा था।

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज) बीकानेर
क्रमांक:- 8630961 — **ई-बोली आमंत्रण सूचना 02/2024-25** — दिनांक:- 04.07.2024
कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज)बीकानेर द्वारा निम्नांकित व्यवस्थाओं/सेवाओं के संचालन के लिए उपापन ठेका पद्वति द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए अनुभवी फर्मो/ठेकेदारों/सद्भावी व्यवहारियों से सफाई, चौकीदारी एवं ईनाम जॉब बेसिस व्यवस्था ठेका हेतु ई-टेण्डरिंग के अन्तर्गत ऑनलाईन बोली आमंत्रण सम्बन्धित विवरण एवं शर्तो को वेबसाइट http://sppp.rajasthan.gov.in तथा www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है-

क्र. सं.	कार्य का विवरण	कार्य की राशि (लाख में)	प्रतिभूति राशि रु.	ई-प्रोसेसिंग शुल्क	निविदा फार्म शुल्क
1.	मुख्य मण्डी प्रांगण में सफाई व्यवस्था	50.00	1.00 लाख रू	1000 रू	1000 रू
2	मुख्य मण्डी प्रांगण में चौकीदारी व्यवस्था	50.00	1.00 लाख रू	1000 रू	1000 रू
3	मुख्य मण्डी प्रांगण में ईनाम परियोजना जॉब बेसिस	21.00	0.42 लाख रू	1000 रू	1000 रू

निविदा डाउनलोड प्रारम्भ तिथि	दिनांक 05.07.2024 प्रातः 10.00 बजे से
निविदा फार्म पूर्ण भरकर ऑनलाईन अपलोड करने की अन्तिम तिथि	दिनांक 24.07.2024 प्रातः 10.00 बजे तक
निविदा फार्म पूर्ण भरकर कार्यालय में प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	दिनांक 24.07.2024 दोपहर 01.00 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि	दिनांक 24.07.2023 दोपहर 02.00 बजे से

बोली की शर्तेः- कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज) बीकानेर के मुख्य मण्डी प्रांगण एवं गौण मण्डी प्रांगण छतरगढ़ में विभिन्न मदों हेतु रजिस्टर्ड फर्मो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेंट (eproc-rajasthan-gov-in) के माध्यम से ऑनलाईन निविदाऐं आमत्रित की जाती है। **बोली सम्बन्धित नियम/शर्ते किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय में प्राप्त कर सकतें है।** बोली दस्तावेजों को राज्य उपापन पोर्टल http://sppp.rajasthan.gov.in (UBN No.- DAM2425SLOB00375, DAM2425SLOB00374, DAM2425SLOB00373 पर भी देखा जा सकता है। तकनीकी बोली दस्तावेज के साथ बोली प्रपत्र, शुल्क, प्रतिभूति राशि का डी.डी. एव ई-टेण्डरिंग के लिए ई प्रोसेसिंग शुल्क का चालान बोली जमा करने की निर्धारित **दिनांक व समय तक कार्यालय में जमा करवाया जाना अनिवार्य है** एवं देर से प्राप्त होने वाले दस्तावेजों/शुल्क को स्वीकार नहीं किया जावेगा। बोली प्रपत्र शुल्क एवं प्रतिभूति राशि के अभाव में ई-निविदा पर कोई विचार नही किया जायेगा।
राज.संवाद/सी/24/2052 — सचिव

कार्यालय जिला कलक्टर (भू.अभिलेख) झालावाड
क्रमांक- भू.अभि./DILRMP/2024/4026 — दिनांक-03.07.2024
ई-निविदा आमंत्रण सूचना संख्या 01/2024-25
राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013 के अनुसरण में कार्यालय जिला कलक्टर झालावाड (भू अभिलेख) के अधीनस्थ तहसील कार्यालयों में तहसील कार्यालय के रिकार्ड रूम के मोडिफिकेशन एवं स्कैनिंग कार्य हेतु इच्छुक निर्माता/ रजिस्टर्ड/संबंधित अनुभव रखने वाली प्रतिष्ठित फर्म से मोहरबंद द्वि-लिफाफा पद्धति से ई-निविदाएं http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	सामग्री का विवरण	अनुमानित लागत (लाखों में)	बिड सिक्यूरिटी राशि (रूपयों में)	निविदा शुल्क (रूपयों में)	RISL प्रोसेसिंग शुल्क (रूपयों में)
1	रिकॉर्ड रूम मोडिफिकेशन चारों चरण निविदा दस्तावेज अनुसार 03 तहसील हेतु।	75.00	150000/-	2000	1500
2	स्कैनिंग कार्य एवं चतुर्थ चरण निविदा दस्तावेज अनुसार 08 तहसील हेतु	27.00	54000/-	500	1000

निविदा समय विवरण

क्र. सं.	निविदा डाउनलोड प्रारंभ की तिथि व समय	निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि व समय	निविदा जमा करने की अंतिम तिथि व समय	तकनीकी बिड खोलने की अंतिम तिथि व समय
1	03.07.2024 समय सायं 06 बजे	23.07.2024 समय सायं 06 बजे	23.07.2024 समय सायं 06 बजे	24.07.2024 समय दोपहर 12 बजे
2	03.07.2024 समय सायं 06 बजे	23.07.2024 समय सायं 06 बजे	23.07.2024 समय सायं 06 बजे	24.07.2024 समय दोपहर 12.30 बजे

UNB NO. CJH2425WSOB00002 & CJH2425WSOB00003, NIB NO. CJH2425A0004
DIPR/C/5579/2024 — जिला कलक्टर (भू.अभि.), झालावाड

वित्त मंत्री दीया कुमारी ने 2 घंटे 51 मिनट में पेश किया भजनलाल सरकार का पहला बजट

बजट के दौरान कांग्रेस नेताओं ने हंगामा किया तो स्पीकर ने फटकार लगाई

-विधानसभा संवाददाता-

- **पूर्व मंत्री शांति धारीवाल ने टोकाटाकी की तो स्पीकर ने आपत्ति जताते हुए कहा, ''कुछ तो गरिमा रखिए, आप बीमार हो, बैठिए! सत्ता में थे तब भी यही करते थे, आज भी वहीं कर रहे हो।''**
- **कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा समेत विपक्षी विधायकों ने बार-बार हंगामा किया तो स्पीकर ने फटकारते हुए कहा, ''नेता प्रतिपक्ष चुप बैठे हैं, आप बिना इनकी अनुमति नेतागिरी कर रहे हो।''**

जयपुर। उपमुख्यमंत्री व वित्त मंत्री दीया कुमारी ने बुधवार को राजस्थान विधानसभा में भजनलाल सरकार का पहला पूर्ण बजट पेश किया। करीब 2 घंटे 51 मिनट में दीया कुमारी ने शायराना अंदाज में राज्य के लिए कई घोषणाएं की। उन्होंने सदन में बताया कि, वर्ष 2024-25 का राजकोषीय घाटा 70 हजार 9 करोड़ 47 लाख है, जो जीएसडीपी का 3.93 प्रतिशत है। जबकि बजट अनुमानों में राजस्व घाटा 25 हजार 758 करोड़ 11 लाख रुपए हैं। उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने राज्य सरकार के परिवर्तित बजट वर्ष 2024-25 को सदन में पेश किया, जिसमें वर्ष 2024-25 के बजट अनुमानों में दो लाख 64 हजार 461 करोड़ 29 लाख रुपए की राजस्व प्राप्तियां और वर्ष 2024-25 में बजट अनुमानों में दो लाख 90 हजार 219 करोड़ 40 लाख रुपए का राजस्व व्यय है।

बजट पेश करने के दौरान जब कांग्रेस विधायकों ने बार-बार हंगामा कर व्यवधान डाला तो स्पीकर वासुदेव देवनानी ने उन्हें कड़ी फटकार लगाई। जब वरिष्ठ कांग्रेस नेता व पिछली सरकार में संसदीय मंत्री रहे शांति धारीवाल भी बजट घोषणाओं पर टोकाटाकी करने से नहीं थमे, तो स्पीकर ने उन्हें आड़े हाथों ले लिया। देवनानी ने कहा, ''कुछ तो गरिमा रखिए, आप बीमार हो, बैठिए! सत्ता में थे तब भी यही करते थे, आज भी वहीं कर रहे हो।'' इस पर विपक्ष के अन्य विधायकों ने विरोध करना चाहा तो स्पीकर ने उन्हें भी लताड़ते हुए कहा, ''नेता प्रतिपक्ष चुप बैठे हैं, आप बिना इनकी अनुमति नेतागिरी कर रहे हो। बजट के बीच में कोई भी व्यवधान बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।''

हालांकि देवनानी ने इससे पहले हंगामा कर रहे विपक्षी विधायकों को समझाने की कोशिश की थी। बजट घोषणाओं के बीच में जब कांग्रेस ने बार-बार टोकाटाकी की तो वित्त मंत्री चुप हो गई। इस पर स्पीकर ने विपक्ष से कहा, आज बजट पूरा सुनिये, चर्चा कल करेंगे। इसके बाद भी जब हंगामा शांत नहीं हुआ तो उन्होंने विपक्ष को लताड़ते हुए शांत कराया और इसके बाद दीया कुमारी को बजट आगे पढ़ने के लिए कहा। डोटासरा को टोकते हुए कहा कि ''डोटासरा मैं आपको अंतिम चेतावनी दे रहा हूं। आप डिस्टर्ब नहीं करेंगे, कल परसों जब भी बोलना है, तब बोलिएगा, लेकिन आज चुप रहिए। मैं आपकी इस हरकत को बर्दाश्त नहीं करूंगा। आप लोग सदन की मर्यादा को भंग करोगे, तो मैं इसे सहन नहीं करूंगा।''

इसी बीच विपक्ष पर तंज कसते हुए दीया कुमारी ने कहा, ''युवाओं के भविष्य की बात कर रही हूं, वो तो सुन लीजिए। इसके बाद उन्होंने राजस्थान में अगले 5 साल में 4 लाख नौकरियां देने और इस साल में 70 हजार के बजाय 1 लाख युवाओं को नौकरी देने की घोषणा की। दीया कुमारी ने सदन में कहा कि, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में हमारी सरकार ने अब तक 20 हजार युवाओं को प्रदेश में नियुक्तियां दे दी है।'' बजट घोषणा के दौरान दीया कुमारी ने स्वामी विवेकानंद, भीमराव अंबेडकर, विनोबा भावे, संत हरिदास, निदा फाजली और एमएस स्वामीनाथन की पंक्तियां भी पढ़कर सुनाई।

इससे पहले बजट घोषणाओं के दौरान जब दीया कुमारी जब पेज पलटकर आगे बढ़ाने लगी तो विपक्ष ने तंज कसना चाहा, जिस पर उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि, बहुत लंबी सूची है। इस पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा समेत भाजपा विधायकों ने मेज थपथपाकर समर्थन किया। इसके बाद भी दीया पन्ने पलटती रहीं तो विपक्ष ने आपत्ति जताई। जिस पर विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने कहा कि अभी आपको भी बहुत कुछ मिलेगा। बहुत कुछ मिल रहा है। फिर दीया कुमारी ने कहा ये तो सुनिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके बाद विपक्ष के सदस्य चुप हुए। बार-बार हंगामे के लिए खड़े होने पर स्पीकर ने कांग्रेस नेताओं पर चुटकी लेते हुए पूछा, ''आपके नीचे स्प्रिंग लगी है क्या?'' इस पर मुख्यमंत्री समेत सत्ता पक्ष की भी हंसी छूट पड़ी।

वित्त मंत्री की ओर से महिला सुरक्षा की बजट घोषणा के दौरान डोटासरा ने कहा- कुछ भी कहो, आज राजेंद्र राठौड़ की कमी खल रही है। इसे सुनकर दीया कुमारी भी मुस्कुराने लगी। इस पर स्पीकर ने डोटासरा से कहा- आप उनकी कमी को पूरा कर रहे हो क्या?

बजट भाषण के बाद विधानसभा अध्यक्ष ने ध्वनिमत से बजट पारित करने के लिए सबसे पहले सत्ता पक्ष के विधायकों से ''हां'' पक्ष को लेकर स्वर मांगा। इस पर ध्वनिमत से सत्ता पक्ष के विधायकों ने ''हां'' कहा। इसके बाद उन्होंने बजट पर विपक्ष को लेकर पूछा। इस पर विपक्ष के नेता तो शांत रहे। इस पर कैबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल ने खड़े होकर कहा, ''सन्नाटा।''

असम के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया आये विधानसभा

असम के राज्यपाल गुलाब चन्द कटारिया बुधवार को विधानसभा आये। स्पीकर वासुदेव देवनानी ने पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। कटारिया और देवनानी की लगभग आधे घंटे की मुलाकात भी हुई। कटारिया ने विधान सभा की कार्यवाही भी देखी। विधान सभाअध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सदन को अवगत करवाया कि असम के राज्यपाल गुलाब चन्द कटारिया राज्यपाल दीर्घा में बैठकर सदन की कार्यवाही देख रहे हैं। विधानसभा का डिजिटल म्यूजियम देखने आये शिव के विभिन्न विद्यालयों के बच्चों से स्पीकर देवनानी ने परिचय लिया। उनके विद्यालय और शिक्षा की जानकारी ली। असम के राज्यपाल कटारिया भी बच्चों से मिले।

बजट में समृद्ध राजस्थान की आधारशिला रखी : सी.पी.जोशी

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने आज राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्तुत पूर्ण बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए इसे विकसित, समग्र, सशक्त औ समृद्ध राजस्थान की आधारशिला रखने वाला बताया।

उन्होंने कहा बजट में किसान, युवा, महिला, शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, रोजगार सहित मैट्रो रेल और एयरपोर्ट से लेकर ग्रामीण विकास तक हर क्षेत्र में जनता को महत्पूर्ण सौगातें मिली है। उन्होंने आमजन की सुख-सुविधा और मजबूती को ध्यान में रखकर तैयार किए गए बजट के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और वित्त मंत्री दिया कुमारी का आभार व्यक्त किया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि बजट में चार लाख नई भर्तियों की घोषणा, दस लाख से ज्यादा रोजगार के अवसर प्रदान करने की घोषणा, स्कूलों में लाईब्रेरी और टॉयलेट सहित बुनियादी सुविधाओं के विकास की घोषणा, दिल्ली के भारत मंडपम की तर्ज पर राजस्थान मंडपम तैयार करने की घोषणा, प्रदेश में 2750 किमी से अधिक की लंबाई के 9 ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे के निर्माण की घोषणा, पीएम सूर्य घर योजना के तहत आदर्श सौर ग्राम बनाने की घोषणा, 25 लाख ग्रामीण घरों में नल से जल पहुंचाने की घोषणा, राजस्थान इरिगेशन वाटर ग्रिड मिशन शुरू करने, ऑर्गेनिक फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए अलग से बोर्ड बनाने की घोषणा, किसानों को मॉर्डन कृषि उपकरण खरीदने के लिए अनुदान देने की घोषणा, 500 नए एफपीओ खोलने की घोषणा, बालिकाओं को पुलिस-सेना में भर्ति के लिए संभागों में बालिका सैनिक स्कूल खोलने की घोषणा, 15 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाने की घोषणा, आदिवासी समुदाय की के बच्चों के लिए 250 नई मां बाड़ी खोलने की घोषणा, राजस्थान डिजिटल हेल्थ मिशन शुरू करने की घोषणा, खेलो इंडिया की तर्ज पर हर साल जिला व राज्य स्तर पर खेलो राजस्थान यूथ गेम्स के आयोजन की घोषणा, 1300 करोड रूपये की लागत से कमजोर लोगों के लिए मकान और बुनियादी सुविधाएं विकसित करने सहित अनेक प्रकार की घोषणाओं से प्रदेश को मजबूती मिलेगी और विकास को पंख लगेंगे।

शिक्षा मंत्री ने बजट को बताया बेहतरीन

जयपुर। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने बजट को प्रदेश का बेहतरीन और ऐतिहासिक बजट बताया। जिस मे हमारी सरकार ने हर वर्ग के लिए कुछ ना कुछ दिया है। यानी हर वर्ग की बेहतरी का ध्यान रखा गया है। यह बजट डबल इंजिन सरकार के उद्देश्य व विकसित ,सशक्त राजस्थान के निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा। इसमें विकास के सभी पहलुओं को समाहित किया गया है।खास कर युवाओं के रोजगार पर विशेष ध्यान हमारी सरकार का है। 5 साल मे 4 लाख युवाओं को रोजगार हम देनेवाले है। वित्त मंत्री दिया कुमारी को इस शानदार बजट के लिए बधाई।

भाजपा प्रदेश सह-प्रभारी विजया राहटकर ने भाजपा के पूर्णकालिक बजट 2024-2025 पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि राजस्थान को अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में सकारात्मक एवं दूरदर्शी पहल है।

राजस्थान में लागू होगी मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना

-विधानसभा संवाददाता-

- **आगामी 3 वर्षों के लिए सरकार ने रखा 15 हजार करोड़ का बजट**

जयपुर। मोदी सरकार की 'आयुष्मान भारत' स्कीम की तर्ज पर राजस्थान में मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना लागू की जायेगी। भजनलाल सरकार ने राज्य विधानसभा में बुधवार को बजट पेश करते हुए इसकी घोषणा की। राज्य की वित्त मंत्री दीया कुमारी ने कहा कि आगामी 3 वर्षों में सरकार ने 15 हजार करोड़ रु. के बजट का प्रावधान किया है। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक-एक आयुष्मान मॉडल सामुदायिक केन्द्र बनाने पर 125 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे।

बजट में सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय, जयपुर के आयुष्मान टावर के लिए लगभग 200 करोड़ रुपये व्यय, अजमेर में आयुर्वेद , योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं एक हजार 500 चिकित्सकों तथा चार हजार नर्सिंग कर्मियों के नये पद सृजित किए जायेंगे।

इसी तरह सड़क सुरक्षा क्षेत्र में आरयूएचएस जयपुर, कोलाना (बांदीकुई) दौसा , साण्डेराव , देसूरी-पाली एवं प्रतापगढ़ सहित छह नये ट्रोमा सेंटर , 25 अतिरिक्त उन्नत जीवन सुरक्षा एम्बुलेंस, प्रत्येक संभाग मुख्यालय पर सड़क सुरक्षा टॉस्क फोर्स का प्रावधान किया गया है। इसी तरह सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र में बाबा साहेब अम्बेडकर आदर्श ग्राम विकास योजना में 10 हजार से अधिक जनसंख्या वाले गांवों में वंचित वर्ग की आबादी सकी आधारभूत संरचनाओं के लिए दो सौ करोड रुपये का प्रावधान , शहरी क्षेत्रों एवं कस्बों में स्ट्रीट वेंडरों के साथ अन्य जरुरतमंद एवं असहाय परिवारों के लिए, प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लाभार्थियों को 25 हजार रुपये का अनुदान , ईडब्ल्यूएस हेतु रियायती ब्याज दर पर ऋण के लिए 25 करोड़ रुपये का प्रावधान , प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में पांच-पांच नवीन आंगनबाडी केन्द्र , लखपति दीदी योजना के अंतर्गत इस वर्ष के लिए निर्धारित लक्ष्य का पांच लाख से बढ़ाकर 15 लाख रुपये करने तथा दो हजार दिव्यांगजन को स्कूटी देने का प्रावधान किया गया है। जयपुर पुलिस आयुक्तालय में पृथक से सुरक्षा पुलिस बल , पद्मिनी , कालीबाई एवं अमृतादेवी महिला पुलिस बटालियनों की स्थापना , पुलिस के लिए 750 मोटरसाइकिल एवं पांच सौ हल्के वाहन एवं विभिन्न नये न्यायालयों की स्थापना , प्रत्येक जिले में एक महिला थाना एवं 10 नये पुलिस थाने खोलने का प्रावधान किया गया है। इसी तरह कार्मिक कल्याण पेंशनर्स को देय आउट डोर चिकित्सा सुविधा व्यय की सीमा का 30 हजार रुपये से बढ़ाकर 50 हजार रुपये प्रतिवर्ष , ग्रेच्युटी की वर्तमान अधिकतम सीमा को 20 लाख से बढ़ाकर 25 लाख रुपये करने का प्रावधान किया गया है।

'गुलाबी नगरी' को पूरे देश में नंबर-1 स्मार्ट सिटी बनाने का विजन पेश किया भजनलाल सरकार ने

जयपुर में 9 स्थानों पर एलिवेटेड रोड और रेलवे ओवर ब्रिज बनेंगे, इलेक्ट्रिक बसों का संचालन भी होगा

-विधानसभा संवाददाता-

- **सांगानेर और विद्याधर नगर क्षेत्र में सड़क निर्माण और नवीनीकरण पर 165 करोड़ रु. खर्च किए जाएंगे**
- **जयपुर परकोटे और हैरिटेज बिल्डिंगों के संरक्षण के लिए 100 करोड़ रुपए का बजट दिया**
- **आमेर, जयगढ़ और नाहरगढ़ पर रोप-वे बनाने की घोषणा, दिल्ली की तर्ज पर जयपुर में ''राजस्थान मंडपम'' भी बनाया जायेगा**

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुलाबी नगरी (जयपुर) को देश में अव्वल स्मार्टसिटी बनाने की कवायद शुरू कर दी है। इसका रोडमैप बुधवार को विधानसभा में पेश हुए पहले बजट में खुलकर नजर आया। शहर में 9 जगहों पर फ्लाईओवर व रेलवे ओवर ब्रिज, इलेक्ट्रिक बसों का संचालन, जयपुर परकोटे के हैरिटेज संरक्षण, सड़कों के नवीनीकरण, पर्यटन स्थलों पर सुविधाएं विकसित करने की घोषणाओं के साथ यह विजन पेश किया गया है।

भजनलाल सरकार ने अपने पहले पूर्ण बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष जोर दिया है। जयपुर में 9 स्थानों पर एलिवेटेड रोड व फ्लाई ओवर ब्रिज बनाने, केन्द्र सरकार की मदद से जयपुर मेट्रो के अधूरे प्रोजेक्ट को पूरा करने और इलेक्ट्रिक बसों के संचालन की सौगात दी गई है। जयपुर परकोटे और हैरिटेज बिल्डिंगों के संरक्षण के लिए 100 करोड़ रुपए का प्लान बनाकर काम शुरू करवाया जाएगा। सांगानेर एयरपोर्ट की टर्मिनल कैपेसिटी को 50 लाख यात्री प्रतिवर्ष से बढ़ाकर 70 लाख करने और नया टर्मिनल भी बनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और डिप्टी सीएम दीया कुमारी के विधानसभा क्षेत्रों में करीब 165 करोड़ रुपए की लागत से सड़कों का नेटवर्क बिछाया जाएगा। इसमें नई सड़क बनाने के साथ-साथ पुरानी सड़कों का नवीनीकरण होगा।

गुलाबी नगर के प्रमुख पर्यटन स्थल आमेर, जयगढ़ और नाहरगढ़ किले पर रोप-वे भी बनाए जाएंगे। आमेर में लाइट एंड शो का बेहतर तरीके से करवाया जाएगा। एस.एम.एस. स्टेडियम में खिलाड़ियों की सुविधा के लिए ''स्टेट ऑफ दि आर्ट अल्ट्रा फिटनेस सेंटर'' स्थापित किया जाएगा। दिल्ली की तर्ज पर जयपुर में ''राजस्थान मंडपम'' भी बनाया जाएगा।

बजट घोषणाओं के मुताबिक जयपुर के विद्याधर नगर क्षेत्र में 70 करोड़ रुपए की लागत से सीवरेज लाइनें बिछाई जाएगी। ट्रैफिक की समस्या का समाधान के लिए 1500 से ज्यादा पुलिस वॉलेंटियर्स दिए जाएंगे। प्रताप नगर स्थित आर.यू.एच.एस. अस्पताल में नया ट्रोमा सेंटर बनाया जायेगा। जयपुर के पर्यटन स्थलों पर इनफॉरमेशन टैक्नोलॉजी (आई.टी.) से संबंधित कार्य करवाए जाएंगे। जयपुर में पौधा रोपण और पार्क के विकास कार्य के लिए अलग से बजट दिया जाएगा। जयपुर में नाहरगढ़ जैविक उद्यान में 20 करोड़ की लागत से वॉक इन एवियरी बनाई जाएगी। झालाना में फॉरेस्ट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की स्थापना की जाएगी। जयपुर में अटल इनोवेशन इंस्टीट्यूट बनाया जाएगा, जिसमें इनोवेशन से संबंधित लोगों को प्लेटफार्म दिया जाएगा।

इसके अलावा जनक मार्ग से शुरू होकर खातीपुरा मोड से क्वींस रोड होते हुए पुरानी चुंगी पर अंडरपास बनाते हुए झारखंड मोड से सिरसी रोड पर गौतम मार्ग तक एलीवेटेड रोड बनाया जायेगा। इसकी डिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डी.पी.आर.) जल्द बनाई जाएगी।

सिरसी रोड पर राणा कुम्भा मार्ग से होते हुए सिरसी मोड तक एलिवेटेड रोड की डी.पी.आर. बनाई जाएगी। मुरलीपुरा इलाके में नाडी का फाटक पर 86.89 करोड़ की लागत से 4 लेन का आरओबी बनाने की घोषणा की गई है। सीतावाली फाटक से बैनाड़ फाटक के बीच 14.37 करोड़ रुपए की लागत से रेलवे अंडरब्रिज (आरयूबी) बनाने की घोषणा की गई है। जगतपुरा स्थित सीबीआई फाटक पर 95 करोड़ की लागत से रेलवे ओवरब्रिज बनाया जायेगा। सालीग्रामपुरा फाटक पर 86 करोड़ रुपए की लागत से रेलवे ओवरब्रिज बनाया जायेगा।

अम्बेडकर सर्किल से ओ.टी.एस. चौराहा और यहां से जवाहर सर्किल तक एलिवेटेड रोड बनायी जायेगी। इसके लिए फिजिबिलिटी रिपोर्ट और डी.पी.आर. बनाने का काम जल्द शुरू होगा। सांगानेर फ्लाईओवर से चौरड़िया पेट्रोल पंप तक 170 करोड़ रुपए की लागत से एलिवेटेड रोड बनेगा। जयपुर में कलेक्ट्री सर्किल से राजमहल चौराहे तक एलिवेटेड रोड बनाने के लिए भी जल्द काम शुरू होगा।

कृषकों को बजट में कोई राहत नहीं दी है : पायलट

- **राज्य सरकार का पहला पूर्ण बजट आमजन को निराश करने वाला**

जयपुर। राजस्थान की भजनलाल सरकार के पहले पूर्ण बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस नेताओं ने इसे दिशाहीन बजट बताया है और कहा है कि इसमें न तो जनता को राहत मिली है और न ही विकास का रोडमैप है। शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा से भी इस बजट का कोई सरोकार नहीं है।

एआईसीसी महासचिव सचिन पायलट ने बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा पेश किया गया पहला ही पूर्ण बजट आमजन को निराश करने वाला है। कृषि व कृषकों को इस बजट में कोई राहत नहीं दी गई है। सदन में एम.एस. स्वामीनाथन जी के कथन को पढ़ा परंतु एमएसपी को कानूनी दर्जा देने एवं उन्हें लागू करने को लेकर कुछ बोला होता तो बेहतर रहता। डबल इंजन की सरकार एमएसपी के कानूनी प्रावधान पर चुप है।

पायलट ने कहा कि ईआरसीपी को राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने को लेकर भी बजट में कोई ज़िक्र नहीं किया गया। युवाओं के रोजगार, महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त, शिक्षा व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण, महंगाई एवं बेरोजगारी को लेकर इस बजट में न तो कोई नीति दिखाई देती है और न ही कोई योजना। जमीनी वास्तविकता एवं समस्याओं से दूर यह बजट पूर्ण रूप से दिशाहीन एवं लोगों की अपेक्षाओं के विपरीत है।

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोशल मीडिया पर बजट को लेकर लिखा कि, हमारी सरकार ने मिशन-2030 के तहत राजस्थान को नंबर 1 बनाने का लक्ष्य रखा था। मुझे आशा थी कि हमारी सरकार जाने के बाद भाजपा सरकार कम से कम राजस्थान की बेहतरी के लिए इस मिशन को ध्यान में रखकर काम करेगी और विकास की बेहतरीन योजनाएं लाएगी। बुधवार को राजस्थान सरकार की ओर से लाए गए बजट का शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा से कोई सरोकार नहीं लगता है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने बजट को लेकर कहा कि बजट में सिर्फ किलों और महलों की बातें गांव, गरीब, ग्रामीण, किसान की कोई बात नहीं है।राजस्थान की भाजपा सरकार का बजट पूर्णतया दिशाहीन है। बजट भाषण थोथी घोषणाओं, झूठे तथ्यों एवं हताशा से भरा हुआ था। बजट में किसान के लिए एमएसपी, कृषि लागत कम करने, आमजन को महंगाई से राहत देने एवं गरीब को 25 लाख तक नि:शुल्क इलाज देने का कोई प्रयास नहीं दिखा। बजट में किसानों, महिलाओं, युवाओं, नौकरीपेशा एवं मध्यमवर्ग के साथ शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की भी उपेक्षा की गई। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने बजट को दिशाहीन बताते हुए कहा कि बजट पूर्व अपेक्षित निराशाओ से ही पूर्णतह घिरा हुआ नजर आया। गाँव, देहात में किसान,जवान,मज़दूर किसी तबके के लिए इस बजट में कुछ दिखाई नहीं देता है ।इस पूरे बजट में सिर्फ़ भाजपा नेताओं की सामंतवादी विचारधारा नजर आती है।

सी.एन.जी. गैस पर वैट 14.50 से घटाकर 10 फीसदी किया

जयपुर (विसं)। भजनलाल सरकार ने अपने पहले बजट में सी.एन.जी. गैस और 50 लाख रु. की कीमत तक के फ्लैट्स पर रजिस्ट्री सस्ती करने की घोषणा की है। उपमुख्यमंत्री व वित्त मंत्री दीया कुमारी ने बुधवार को सदन में बजट पेश करते हुए इसकी घोषणा की। वित्त मंत्री ने राज्य में सीएनजी-पीएनजी पर लगने वाले वैट को 14.5 फीसदी से घटाकर 10 फीसदी करने का ऐलान किया। वहीं फ्लैट की रजिस्ट्री पर लगने वाली स्टाम्प ड्यूटी को 6 से घटाकर 5 फीसदी कर दिया है।

देखा जाए तो वर्तमान में जयपुर शहर में सी.एन.जी. गैस की दरें 79.47 रुपए प्रति किलोग्राम है। एक किलोग्राम सीएनजी पर 14.50 फीसदी की दर से 11.52 रुपए वैट देना पड़ता है। इस तरह एक किलो सीएनजी गैस बाजार में 90.99 रुपए में मिलती है। अब राज्य सरकार द्वारा सी.एन.जी. गैस पर वैट की दर 14.5 फीसदी से कम करके 10 फीसदी कर दी है। अब एक किलो सीएनजी की कीमत 79.47 पर 10 फीसदी की दर से 7.94 रुपए वैट देना होगा। इस तरह एक किलोग्राम सीएनजी 87.41 रुपए की दर से उपलब्ध होगी।

इसी प्रकार वर्तमान में 50 लाख रुपए कीमत के फ्लैट की रजिस्ट्री करवाने पर 6 फीसदी की दर से 3 लाख रुपए स्टाम्प ड्यूटी के लगते हैं। स्टाम्प ड्यूटी पर 30 फीसदी सरचार्ज लगता है। फ्लैट की कीमत का एक फीसदी पंजीयन शुल्क चुकाना पड़ता है। अब स्टाम्प ड्यूटी 1 फीसदी घटाने के बाद आमजन को काफी राहत मिलेगी।

इसके साथ ही पत्नी, पुत्रवधू, पोता, पोती एवं दोहिता, दोहिती के पक्ष में निष्पादित सेटलमेंट डीड पर स्टाम्प डॅयूटी एवं पंजयीन शुल्क पर पूरी छूट दी गई हैं। इसी तरह परिवार के सदस्यों के संयुक्त स्वामित्व के अधीन दो या अधिक गैर कृषि संपत्तियों के बदलने पर स्टाम्प ड्यूटी घटाकर दो प्रतिशत की गई हैं। सैनिकों एवं अद्धसैनिक बलो के शहीदों की वीरांगनाओं, उनके पुत्र, पुत्री या माता पिता को सरकार, निजी संस्था अथवा व्यक्ति विशेष के द्वारा निशुल्क आवास दिय जाने पर स्टाम्प डॅयूटी के साथ ही पंजीयन शुल्क की भी छूट दी गई हैं। निर्माणाधीन फ्लैट्स एवं भवनों पर जीएसटी राशि पर स्टाम्प ड्यूटी की छूट का प्रावधान किया है।

सरकार ने अब उन मकानों-जमीनों की रजिस्ट्री पर भी छूट देने का ऐलान किया है, जिनकी खरीद-फरोख्त पूर्व में केवल सामान्य एग्रीमेंट के जरिए की गई हो। ऐसी संपत्तियों या सोसाइटी के पट्टों पर अब स्टाम्प ड्यूटी मौजूदा डीएलसी दरों की 20 फीसदी रेट पर लगाई जाएगी।

बजट पेश के दौरान उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी का शायराना अंदाज

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर। उपमुख्यमंत्री व वित्त मंत्री दीया कुमारी ने बुधवार को विधानसभा में बजट पेश करते हुए शायराना अंदाज में अपनी बातें रखी। उन्होंने स्वामी विवेकानंद, भीमराव अंबेडकर, विनोबा भावे, संत हरिदास, निदा फाजली और एमएस स्वामीनाथन की पंक्तियां दोहराते हुए अपना विजन सदन के समक्ष रखा।

बजट भाषण के दौरान दीया कुमारी ने सबसे पहले निदा फाजली का शेर पढ़ा :

''सफर में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो,
सभी हैं भीड़ में तुम भी निकल सको तो चलो;
किसी के वास्ते राहें कहां बदलती हैं,
तुम अपने आप को खुद बदल सको तो चलो।''

इसके बाद उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने सदन में कविता सुनाई।

''लेकर अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य नित करें हम मानव कल्याण, दे सहारा करें असहाय वृद्ध जन का सम्मान, दे नारी को प्रोत्साहन।

है भार युवा कंधों पर, आओ कंधे उनके मजबूत बनाएं। आओ मिलकर विकास की ओर एक साथ कदम बढ़ाए।

धरती ओढ़े चुनरी हरि साफ स्वच्छ रहे, पर्यावरण रोशन कर घरों को उनके करें हर पल तिमिर का हरण।

प्यास बुझे ढाणी-ढाणी, मगरे-मगरे पहुंचे पानी, विकसित हो उद्योग, मिले सबको रोजगार हैं मिलकर हमने ठानी।

मंद हो गई जो प्रगति, आओ फिर उसको गतिमान बनाए।

आओ मिलकर विकास की ओर एक साथ कदम बढ़ाए।

चलो मिलकर हम सब विकसित राजस्थान बनाएं।

इसके बाद दीया कुमारी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की रचना सदन में पढ़कर सुनाई।

टूटे हुए तारों से फूटे वासंती स्वर, पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर

झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात, प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूं। गीत नया गाता हूं।

टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी, अंतर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी।

हार नही मानूंगा, रार नई ठानूंगा, काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूं। गीत नया गाता हूं। गीत नया गाता हूं।

इससे पहले दीया कुमारी ने संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की पंक्तियां दोहराते हुए ''आर्थिक उन्नित और सामाजिक उत्थान की पूंजी औद्योगीकरण में है। औद्योगिक विकास बढ़ाने से हम रोजगार दे सकते हैं, गरीबी कम कर सकते हैं और जीवन स्तर को ऊंचा कर सकते है।''

प्रदेश को विकास के नए पथ पर ले जाने वाला बजट : शेखावत

जयपुर। केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सर्वसमावेशी विकास का बजट प्रस्तुत करने के लिए राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी को शुभकमानाएं दीं। अपनी प्रतिक्रिया में शेखावत ने कहा कि भजनलाल सरकार का पहला पूर्ण बजट हर वर्ग के सपने पूरे होने की गारंटी है। अब डबल इंजन की सरकार राजस्थान को विकास के नए पथ पर लेकर जाएगी। इस बजट के माध्यम से राजस्थान देश का ग्रोथ इंजन बनेगा। शेखावत ने कहा कि भजनलाल सरकार के बजट के दायरे से कोई छूटा नहीं है। हर वर्ग को यह बजट अपने लिए लगेगा और हर वर्ग स्वयं को सशक्त महसूस करेगा। नारी शक्ति, अन्नदाता, युवाओं और गरीबों का बजट में विशेष ख्याल रखा गया है। 5 साल में 4 लाख नौकरियों से युवा सशक्त होगा। ब्याज मुक्त लोन देने के अलावा किसानों के लिए कई घोषणाएं बताई हैं कि भाजपा सरकार किसानों की हितैषी है। 15 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाने से हमारी माताएं-बहनें का सशक्तीकरण होगा। साथ ही, महंगाई से राहत देने के लिए कई ठोस कदम बजट में उठाए गए हैं।

पुलिस कांस्टेबल का बीमारी से निधन

खेतड़ी, (निसं) खेतड़ी थाना क्षेत्र के कंकराय गांव के राजस्थान पुलिस कांस्टेबल सुधीर कुमार जांगिड़ का बीमारी के कारण बुधवार को निधन हो गया। उनके पैतृक गांव में पुलिस सम्मान से अंतिम संस्कार किया गया।

सीआई भंवरलाल कुमावत ने बताया कि खेतड़ी थाना क्षेत्र की मांदरी पंचायत के कंकराय निवासी सुधीर कुमार जांगिड़ (39) पुत्र लीलाधर जांगिड़ राजस्थान पुलिस ने कांस्टेबल के पद पर कार्यरत थे। वर्तमान में वह कोटपूतली बहरोड़ जिले के शाहजहांपुर थाने में पद स्थापित थे। वह सात मई को छुट्टी लेकर घर आए थे कि अचानक ब्रेन हेमरेज की समस्या हो गई। कांस्टेबल सुधीर कुमार जांगिड़ को परिजन उपचार के लिए जयपुर ले गए, जहां पिछले दो माह से उनका उपचार चल रहा था।

जयपुर के निजी अस्पताल में उपचार के दौरान कांस्टेबल सुधीर कुमार जांगिड़ का निधन हो गया। सुधीर कुमार के एक बेटी प्रिती(17) की है। कांस्टेबल के पिता लीलाधर जांगिड़ भी राजस्थान पुलिस में कार्यरत थे, जिनकी 2004 में एक सड़क हादसे में मौत हो गई थी। इसके बाद सुधीर कुमार ने वर्ष 2005मे राजस्थान पुलिस में कांस्टेबल के रूप में ज्वाइन किया था।

शिक्षक पर जानलेवा हमला करने के मामले में चार जने गिरफ्तार

सादुलपुर, (निसं)। घर से स्कूल जा रहे शिक्षक पर पांच रोज पूर्व हुए जानलेवा हमला के मामले में हमीरवास थाना पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी मदलाल बिश्नोई ने बताया कि घटना के बाद जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव के निर्देशन में तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक किशोरी लाल आरपीएस तथा आईपीएस प्रशांत किरण सहायक पुलिस अधीक्षक के सुपरविजन में पुलिस ने आरोपियों की धरपकड हेतु विशेष टीम का गठन किया तथा आरोपियों की तलाश के लिए हर संभावित स्थानों पर दबिश दी गई।

प्रकरण में संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गई तथा घटना से सम्बन्धी सूचना इकट्ठी की गई तथा प्रकरण में शामिल आरोपी नितेश जाट उम्र 25 साल निवासी ढाणी खींवा पुलिस थाना हमीरवास जिला चूरु, राहुल जाट उम्र 25 साल निवासी वार्ड नंबर 13 मलसीसर पुलिस थाना मलसीसर जिला झुंझुनू, अनिल गोदारा जाट उम्र 25 साल निवासी चिमनपुरा पुलिस थाना राजगढ, अंकित उर्फ हाऊ जाट उम्र 27 साल निवासी बिगोवा पुलिस थाना सदर चरखी दादरी हरियाणा को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने बताया कि आरोपियों से मामले पूछताछ की जा रही है। थानाधिकारी विश्नोई ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी नितेश शिक्षक का भतीजा है तथा पारिवारिक रंजिश के चलते घटना को अंजाम दिया गया था तथा पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जांच के बाद ही वास्तविक स्थिति का खुलासा हो सकेगा। गौरतलब है 05 जुलाई 2024 को शिक्षक सतवीर जाखड उम्र 50 साल निवासी ढाणी खींवां ने पर्चा बयान पर मामला दर्ज करवाकर बताया कि डाबली ढाणी से रावतसर कुंजला सडक पर मोटरसाइकिल से स्कूल जा रहा था।

उसी दौरान एक कैंपर गाडी सफेद रंग की आई, जिसमें सवार लोगों ने उसे रोक लिया एवं कैंपर गाडी से तीन व्यक्ति उतरे जिनके पास लोहे के सरिया ओर रॉड थे।

दो आरोपियों ने मुंह पर कपडा बांध रखा था। जीप से उतरते ही आरोपियो ने सरियों ओर लोहे की रॉड से उस पर जान लेवा हमला कर दिया। जिसके कारण उसे गंभीर चोट लगी पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शरू की थी।

हमीरवास थाना पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- पांच दिन पहले स्कूल जा रहे शिक्षक पर सरियों और लोहे की रॉड से किया था हमला
- मामले में एक आरोपी शिक्षक का भतीजा है

140 विद्यार्थियों को बैग एवं स्टेशनरी बांटी

सुजानगढ, (नि.स.)। निकटवर्ती गांव ठरडा स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में सुरपत चैरिटीज बैंगलोर के सौजन्य से विद्यार्थियों को स्कूल बैग एवं शिक्षण सामग्री वितरित की गई। प्रधानाध्यापक रामनिवास बाकोलिया की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एडीजे कोर्ट में आशु लिपिक अशोक कुमार पारीक थे, जबकि भामाशाह प्रेरक ताराचंद स्वामी विशिष्ट अतिथी थे। संस्था प्रधान रामनिवास बाकोलिया ने बताया कि सुरपत चैरिटीज द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत सभी 140 विद्यार्थियों को स्कूल बैग एवं स्टेशनरी वितरित की गई है। चैरिटीज द्वारा वर्ष 2013 से लगातार प्रतिवर्ष विद्यालय में अध्ययनरत सभी बच्चों को स्कूल बैग एवं स्टेशनरी का वितरण किया जाता है। इसके अलावा सुरपत चैरिटीज द्वारा विद्यालय में एक सफाई कर्मी लगाया हुआ है तथा विद्यालय का बिजली बिल दिया वहन किया जाता है। इसके साथ ही सुरपत चैरिटीज द्वारा विद्यालय में अनेक विकास कार्य करवाये गये हैं। मुख्य अतिथि अशोक कुमार पारीक ने विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित कर मन लगाकर पढाई करने के लिए प्रेरित किया।

सार-समाचार

डॉ. सतीश पूनिया का स्वागत किया

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ प्रवास पर बुधवार को आए भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं हरियाणा भाजपा के प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया का भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। ज्ञातव्य है कि डॉ. सतीश पूनिया जयपुर से हरियाणा के हिसार रोहतक में पार्टी कार्यकर्ताओं की संगठनात्मक बैठक में जाते समय राजगढ में रुके थे। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता वेद प्रकाश पूनिया, प्रोफेसर दिलीप पूनिया, जिला मंत्री डॉ. कौशल पूनिया, जोगेंद्र झाझडिया, डॉ. मानसिंह राठौड, विमल पूनिया, कृष्ण जांगिड बैरासर, प्रवेश ख्यालिया, कृष्ण भाकर, कृष्ण सांगवान, रामवतार बैरासरिया, गणेश दाहिमा, पूर्व सरपंच कैलाश भोजाणिया, रिशाल सिंह बल्लारा, जगदीश प्रजापत, रणसिंह गागडवास, मानसिंह निमड, नत्थू राम प्रजापत आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

518 यूनिट रक्त संग्रहण किया

झुंझुनूं, (निसं)। पूर्व उप सभापति वीरेंद्र डारा के 50वें जन्मदिवस के अवसर पर बंधे का बालाजी के समीप स्थित फॉर्म हाउस पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें जिला स्तर की अब तक की रिकॉर्ड 518 यूनिट का संग्रहण किया गया। डारा की माताजी पूर्व पार्षद भगवती डारा, चंचलनाथ टीले के ओमनाथ महाराज, कमरूदीन शाह दरगाह के गद्दीनसीन एजाज नबी खां व गीतांजली ज्वैलर्स के चेयरमैन शिवकरण जानूं ने फीता काटकर व केक कटवा कर शिविर का शुभारंभ किया। शिविर प्रभारी डॉ. कपिल सिहाग व डाइट उपप्रधानाचार्य दीपेंद्र बुडानिया ने सर्वप्रथम रक्तदान कर शुरूआत की। शिविर में सुबह 8 बजे से ही रक्तदान को लेकर डारा समर्थकों में उत्साह देखा गया। जिसकी वजह से बीडीके टीम की समुचित व्यवस्था के बावजूद बड़ी संख्या में लोग अपनी बारी का इंतज़ार करते दिखे। इस मौके पर 38 वर्षीय डॉ. विकास धूपिया ने डारा के 50वें जन्मदिवस पर अपने जीवन का 50वीं बार रक्तदान किया। वहीं दुल्हा बने शशि बसेरा ने भी वैवाहिक कार्यक्रमों में से समय निकालकर रक्तदान किया। रक्तदान महादान के संकल्प के साथ साथ रक्तदाता, बंधे बॉयज सदस्यों व डारा समर्थकों द्वारा वृहद् स्तर पर पौधारोपण भी किया गया।

एबीवीपी का 76वां स्थापना दिवस मनाया

रतनगढ़(निसं)। रतनगढ़ के सेठ मोहनलाल जालान राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में स्थानीय इकाई द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 76वें स्थापना दिवस पर वृक्षारोपण महा अभियान की शुरुआत की गई परिषद के कार्यकर्ताओं ने महाविद्यालय प्राचार्य ए के सक्सेना जी के कर कमलों से वृक्षारोपण प्रारंभ करवाया । स्थापना दिवस कार्यक्रम में प्रवासी कार्यकर्ता के रूप में पधारे सुजानगढ़ जिला के जिला संयोजक विशाल सोनी ने बताया कि विद्यार्थी परिषद इस सत्र के दौरान युवाओं को प्रकृति से जोड़ने का कार्य करेगा बढ़ते जलवायु परिवर्तन में प्रकृति संरक्षण अति आवश्यक है,क्योंकि प्रकृति सुरक्षित नहीं रहेगी तो मानव सभ्यता की सुरक्षित नहीं रह पाएगी ।कार्यक्रम में रतनगढ़ के नगर मंत्री दीनदयाल रैगर ने कार्यकर्ताओं को संगठन की स्थापना के इतिहास से अवगत करवाया और सभी कार्यकर्ताओं का कार्यक्रम में पधारने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर परिषद् के विशाल स्वामी, गौतम सैनी, विवेक बंसीवाल, कार्तिक कुमार, संदीप शर्मा, हेमंत शर्मा, रजत सिसोदिया, मोहित शर्मा, आशीष कुमार, अरविंद प्रजापत, महिपाल सिंह, राधिका, सुमित्रा कुमारी,रवि वाल्मीकि सहित दर्जनों कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

वृक्षारोपण कर जन्म दिवस मनाया

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत डूंगा की नांगल के राजस्व ग्राम पांचू खरकड़ा निवासी एवं राजस्थान पुलिस के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक फूलचंद मीणा एवं उनकी धर्मपत्नी प्रेम देवी के जन्म दिवस पर परिजनों ने लबोडा जोहड़ा पर स्थित सरकारी स्कूल एवं आसपास में 101 पौधे लगाकर जन्म दिवस मनाया। ग्रामीणों ने बताया कि मीणा अपने और अपनी पत्नी के जन्मदिवस पर रचनात्मक कार्य करते रहे हैं, जो युवा पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण संदेश देता है। इस मौके पर वासुदेव शर्मा ,सुवालाल ,सुणाराम , हरि सिंह खोरी,मालाराम सरपंच, उमराव, महेश ( ), छगनलाल मीणा, यादराम प्रधानाचार्य, प्रभु दयाल , दिनेश ,हरिराम, भोजराज सिराधना , दारा सिंह, श्यामलाल, राजवीर, मुकेश पंच, नीरज ,अनुराग ,रूपचंद गुर्जर सत्या गुर्जर, मुकेश गुर्जर ,आशुतोष मीना, रमेश ,रामबाबू मीणा,अंकित व स्कूल के स्टाफ में बच्चे भी एवं गांव के गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

पांच हजार पौधे लगाने का लक्ष्य

झुंझुनूं, (निसं)। शहर स्थित अनंत पब्लिक सीसै स्कूल फौज का मौहल्ला वार्ड नं. 24 में पर्यावरण व प्रकृति संरक्षण के लिए पांच हजार पेड़ों के लक्ष्य को लेकर वरिष्ठ भाजपा नेता राजेंद्र भांबू के नेतृत्व में पौधारोपण किया गया। जिसमें विद्यालय के अध्यक्ष नरेंद्र शर्मा, सचिव रीटा शर्मा, मैनेजमेंट डायरेक्टर महेश शर्मा, राहुल शर्मा, भाजपा नेता महेश बसावतिया, रवि गुप्ता, पार्षद संजय पारीक, पार्षद विनोद जांगिड़, पार्षद अशोक प्रजापति, मनोज सैनी, रोहन सैनी, दिनेश योगी, रामचरण शर्मा, मतलूब चायल, भामाशाह हुक्मीचंद लाम्बीवाल, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु सिंह, डॉ. भावना शर्मा, राधेश्याम मोरवाल, ओमप्रकाश मोरवाल, अनिल केडिया एवं अन्य शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

पूर्व न्यायाधिपति खाटूश्यामजी आएंगे

सीकर (निसं)। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सीकर ने बताया कि राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति कैलाश चन्द्र शर्मा 11 जुलाई गुरूवार को खाटूश्यामजी आएंगे। पूर्व न्यायाधिपति शर्मा जयपुर से प्रात: 7 बजे प्रस्थान कर प्रात: 8 बजे खाटूश्यामजी पहुंचेंगे तथा खाटूश्यामजी मंदिर में पूजा-दर्शन करेंगे। पूर्व न्यायाधिपति शर्मा खाटूश्यामजी से प्रात:8.30 बजे बीकानेर के लिए प्रस्थान कर जायेंगे।

जन्मदिन पर पौधारोपण किया

झुंझुनूं, (निसं)। भाजपा नेता डॉ. राजेश बाबल के जन्मदिवस पर बुधवार को पौधारोपण किया गया। जिला खेल स्टेडियम में विभिन्न प्रकार के छाया व फलदार पौधे लगाए। उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने भाजपा नेता डॉ. राजेश बाबल की लंबी उम्र की कामना की। पौधारोपण के दौरान खेल अधिकारी राजेश ओला, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी हरिराम महण, जयप्रकाश लमोरिया, बैंक ऑफ बड़ौदा के आरएम सज्जन सिहाग, विजयपाल, कृष्ण गावड़िया, संजय कस्वां, विकेश सिहाग, सूबेदार मोहर सिंह, करणीराम सहित खिलाड़ी व कोचिंग स्टाफ मौजूद रहा।

मारपीट के आरोप में दो जने गिरफ्तार

सुजानगढ, (नि.स.)। ई मित्र संचालक के साथ मारपीट करने के आरोप में कोतवाली पुलिस ने दो जनों को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी धर्मेन्द्र मीणा ने बताया कि ई मित्र संचालक फिरोज खान पुत्र रोशन अली तेली निवासी वार्ड नं. 6 खानपुर रोड, सुजानगढ ने गत दो जुलाई को रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। जिसमें उसने बताया था कि 28 जून की शाम साढे सात बजे वह अपनी दुकान बंद कर घर जा रहा था। होटल हयात के पास अरबाज पुत्र सिकन्दर तेली उम्र 22 वर्ष निवासी हनुमान धोरा सुजानगढ व फरमान पुत्र मो. अली अगवान उम्र 20 वर्ष निवासी कटाई बास, सुजानगढ ने रास्ता रोक कर उसके साथ मारपीट की तथा रूपये छीन लिये।

तंबाकू उत्पादों से दूर रखने के लिए कार्यशाला आयोजित

सीकर, (निसं)। नगर परिषद आयुक्त शशिकांत शर्मा ने बताया कि शिक्षा नगरी सीकर को नशा मुक्त नगरी बनाने के लिए नशा करने वाले व गुटका, पान मसाला सहित तंबाकू उत्पाद खाने व पीने वाले को "रोके व टोके" का अभियान चलाने की महत्ति आवश्यकता है।

- सीकर को नशा मुक्त बनाने के लिए अभियान की आवश्यकता

बुधवार को नगर परिषद के सभा कक्ष में तंबाकू वेंडर लाइसेंस प्रक्रिया को प्रभावी बनाने तथा युवा पीढ़ी को तंबाकू उत्पादों से दूर रखने के लिए नगर परिषद द्वारा आयोजित एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

आयुक्त शर्मा ने कार्यशाला में कहा कि युवा पीढ़ी को तंबाकू उत्पादों से दूर करने के लिए पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग व स्वैच्छिक संगठन सामूहिक प्रयास करेंगे तो ही संभव हो पाएगा। उन्होंने कहा कि शहर के थोक विक्रेताओं के साथ एक बैठक आयोजित कर गुटका ,पान मसाला सहित अन्य तंबाकू उत्पाद बेचने वालों को लाइसेंस लेने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा।

आयुक्त ने बताया कि सोमवार व गुरुवार को नगर परिषद ,पुलिस विभाग ,स्वास्थ्य विभाग व एनजीओ द्वारा विशेष अभियान चलाकर नशा मुक्त नगरी बनाने के लए नशे के प्रथम सीढ़ी गुटका ,पान मसाला सहित तंबाकू को बेचने वालों के माध्यम से युवा पीढ़ी को बचाने का प्रयास करेंगे ।उन्होंने कहा कि शीघ्र ही समस्त शहर के तंबाकू उत्पाद विक्रेताओं को लाइसेंस लेना आवश्यक होगा। कार्यशाला में डिप्टी सीएमएचओ डॉक्टर अशोक महरिया ने एनटीसीपी द्वारा किए गए कार्यों की प्रगति की जानकारी देते हुए सामूहिक अभियान शुरू करने व वेंडर लाइसेंस लागू करने की आवश्यकता जताई।

अवैध शराब बेचने वाले के खिलाफ कार्रवाई की मांग

सादुलपुर, (निसं)। नीमा गांव के ग्रामीणों ने जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव को लिखित शिकायत कर गांव में अवैध शराब की बिक्री करने वाले एक व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। गांव के जय सिंह, सतवीर व बलजीत सिंह आदि सहि अनेक लोगों ने बताया कि नीमा गांव में आरोपी पवन राजपूत ने विद्यालय के पास से गुजरने वाले आम रास्ते पर एक शराब का ठेका खोल रखा है।

जिसके पास अटल स्वास्थ्य केंद्र, सरकारी राशन की दुका, उप स्वास्थ्य के केंद्र तथा मस्जिद भी हैं। तथा आरोपी पवन राजपूत के खिलाफ हमीरवास पुलिस ने 08 जुलाई 2024 को मामला भी दर्ज किया था तथा पुलिस द्वारा आरोपी के कब्जे से शराब भी बरामद की थी।

शिकायत में आरोप लगाया है कि आरोपी गत कई वर्षों से शराब की तस्करी कर रहा है। जिसके कारण गांव में असंतोष फैला हुआ है तथा गांव की जनरेशन बर्बाद हो रही है तथा गांव के लोगों को शराब के नशे की आदत लग रही है।

'कथा रंग' कार्यशाला 20 से 25 जुलाई तक

चूरू, (कासं)। भारतीय शास्त्रीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए साई शिंजिनी अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स एंड कल्चर ने पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड के सहयोग से कथा रंग कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा।

- भारतीय शास्त्रीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

यह कार्यशाला 20 से 25 जुलाई 2024 तक लोहिया कॉलेज चूरू में आयोजित की जाएगी। कार्यशाला का समापन 25 जुलाई को एक भव्य समारोह के साथ होगा, जिसमें सभी प्रतिभागी छात्रों द्वारा प्रस्तुतियां दी जाएंगी। कथा रंग कार्यशाला की पहल का उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय कला और संस्कृति की धरोहर को संजोए रखना और नई पीढ़ी को इन कलाओं के प्रति प्रेरित करना है। इस पहल के माध्यम से पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड ने अपने कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी कार्यक्रम के तहत भारतीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुन: दर्शाया है। इस कार्यशाला का आयोजन पिछले वर्ष कोची में भी सफलतापूर्वक किया गया था। इस 5 दिवसीय कार्यशाला का नेतृत्व दो प्रमुख कलाकार करेंगे, जो बच्चों को प्रशिक्षित करेंगे। शिंजिनी कुलकर्णी एक प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना, जिन्होंने अपनी कला के माध्यम से देश-विदेश में ख्याति प्राप्त की है। वह पंडित बिरजू महाराज की शिष्या हैं और कथक नृत्य में गहन ज्ञान और अनुभव रखती हैं। उनकी नृत्य शैली और शिक्षण विधि छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी होगी।

सजीब गोगोई एक प्रतिष्ठित चित्रकार हैं, सजीब गोगोई ने अपनी चित्रकला के माध्यम से कला जगत में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनके चित्रकला के अनूठे तकनीक और दृष्टिकोण छात्रों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेंगे। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले छात्रों की आयु 7 वर्ष और उससे अधिक होनी चाहिए। यह कार्यशाला छात्रों को प्रतिष्ठित गुरुओं से सीखने का अवसर प्रदान करेगी और उनके कला कौशल को निखारने में सहायक होगी। कार्यशाला के समापन समारोह में छात्रों द्वारा प्रस्तुतियों के माध्यम से उनके द्वारा अर्जित कौशल का प्रदर्शन किया जाएगा। पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड की इस सीएसआर पहल का उद्देश्य न केवल भारतीय शास्त्रीय कलाओं को संरक्षित करना है, बल्कि यह नई पीढ़ी को भी इन कलाओं के प्रति जागरूक और प्रेरित करना है। इस कार्यशाला के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य, और चित्रकला की समृद्ध परंपराओं को नए आयाम मिलेंगे और यह नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगी।

इस अनूठी पहल के माध्यम से पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखने की अपनी प्रतिबद्धता को पुन: स्थापित किया है।

कारगिल विजय दिवस 26 जुलाई को मनाया जाएगा

झुंझुनूं, (निसं)। 26 जुलाई को दोपहर एक बजे जिला मुख्यालय पर कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ (सिल्वर जुबली) के उपलक्ष में शेखावाटी (झुंझुनूं, चुरू, सीकर, नीम का थाना) के कारगिल युद्ध में विजेता योद्धाओं एवं शहीदों की वीरांगनाओं का सम्मान किया जाएगा।

आयोजक डॉ. सलाउदीन चोपदार ने कारगिल दिवस पर होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी।

कार्यक्रम के आयोजक डॉ. सलाउदीन चोपदार फाउंडेशन के डायरेक्टर एवं राजस्थान मदरसा बोर्ड के चेयरमैन एमडी चोपदार ने बताया कि कार्यक्रम में शेखावाटी के सभी पूर्व सैनिक एवं उनके परिजन भी उक्त कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। समारोह में राज्यसभा के सांसद एवं प्रखर वक्ता इमरान प्रतापगढ़ी आएंगे। सम्मान समारोह के संयोजक कर्नल शौकत अली खान ने बताया कि कार्यक्रम में बतौर अतिथि मेजर जनरल एजेबी जानी, कर्नल आरके शर्मा, लेफ्टिनेंट जनरल एसएस कटेवा (वीएसएम), ब्रिगेडियर अजीत सिंह, ब्रिगेडियर साकिब खान शामिल होंगे।

कार्यक्रम के सह संयोजक कैप्टन टीपू सुलतान, कैप्टन सुलतान खान, एक्स सर्विसमैन लीग के उपाध्यक्ष कैलाश सूरा ने बताया कि हमारी टीम शीघ्र ही वीरांगनाओं के परिजनों से एवं योद्धाओं से मिलकर उन्हें कार्यक्रम में आने का न्यौता दिया जाएगा एवं सभी पूर्व सैनिकों एवं सैनिकों से भी मिलकर उन्हें आने का न्यौता दिया जाएगा। कार्यक्रम के आयोजक एमडी चोपदार ने बताया कि सम्मान समारोह के लिए टीमें गठित कर दी गई है एवं इस अवसर पर देश के मशहूर देशभक्त कवि एवं कवयित्री भी शिरकत करेंगे।

विधि कॉलेज में बर्ड फीडर लगाये

चूरू, (कासं.)। विधि कॉलेज के पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में पक्षियों के दाना चुगने के लिए बुधवार को बर्ड फीडर लगाये गए।

कार्यक्रम में प्रधानाचार्य डॉ. एस के सैनी ने कहा कि परिस्थितिकी संतुलन के लिए पक्षियों को बचाना अनिवार्य है। हम सभी को इनके लिए दाने-पानी की व्यवस्था करनी चाहिए। बर्ड फीडर परिस्थितिकी विकास व पर्यावरण संतुलन की दिशा में काम कर रही संस्था नेचर एनवायरनमेंट एन्ड वाइल्ड लाइफ सोसायटी ताल छापर द्वारा आमजन व संस्थाओं को वितरित किये जा रहे हैं। सोसायटी के अध्यक्ष कन्हैया लाल स्वामी ने बताया कि गौरैया के लिए मिट्टी के घौसले व बर्ड फीडर लगाने से आसपास के क्षेत्र में पक्षियों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा सकती है। कार्यक्रम में सूर्यप्रकाश, लक्ष्मण, अरविंद, कमल व अन्य छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन विधि छात्रा अन्नपूर्णा सुथार ने किया।

नाथ समाज ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

पाटन, (निसं)। राजस्थान नाथ समाज जिला नीमकाथाना के प्रतिनिधिमंडल ने जिला अध्यक्ष प्रहलाद सहाय योगी के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम का 11 सूत्रीय मांग का ज्ञापन सौंपा है।

- गुरु गोरखनाथ बोर्ड के अध्यक्ष की नियुक्ति मांग

पाटन-नीमकाथाना तहसील अध्यक्ष लालचंद योगी ने बताया कि मुख्यमंत्री को जो 11 सूत्रीय मांग का ज्ञापन सौंपा गया है उनमें प्रमुख मांग गुरु गोरखनाथ बोर्ड के अध्यक्ष की नियुक्ति करके पर्याप्त बजट आवंटित किया जाए, अनैतिक, सामाजिक, आपराधिक एवं अमर्यादित गतिविधियों के लिए गोरख धंधा शब्द के प्रयोग को प्रतिबंधित किया जाए, वैशाख पूर्णिमा को गुरु गोरखनाथ प्रकाटोत्सव दिवस घोषित किया जाए, सरकार की अन्य कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नाथ समाज को दिया जाए, प्रत्येक जिला मुख्यालय एवं तहसील मुख्यालय पर नाथ समाज का छात्रावास निर्माण हेतु सरकारी जमीन उपलब्ध करवाई जाए, सामुदायिक भवन के लिए निशुल्क भूमि आवंटित कर राजकीय खर्चे पर निर्माण कराया जाए, समाधि लगाने हेतु निशुल्क जमीन उपलब्ध कराई जाए, जिला मुख्यालय पर किसी भी एक प्रमुख चौराहे का नाम गुरु गोरखनाथ चौक रखा जाए, प्रदेश में राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित की जाए, समाज के अध्यनरत बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाए जैसी प्रमुख मांगों का ज्ञापन दिया गया है। इस मौके पर सीकर जिला अध्यक्ष प्रहलाद योगी जुगलपुरा, जिला महामंत्री राजेंद्र प्रसाद योगी गोविंदपुरा, पाटन -नीमकाथाना अध्यक्ष लालचंद योगी, पूर्व सरपंच सुरेश निमोद राजेंद्र कुंडला आदि नाथ समाज के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

छात्रसंघ चुनाव को लेकर युवाओं ने कॉलेज के सामने प्रदर्शन किया

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी के स्वामी विवेकानंद राजकीय कॉलेज के सामने बुधवार को युवाओं ने छात्रसंघ चुनाव करवाने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान युवाओं ने उच्च शिक्षा मंत्री का पूतला जलाकर कालेजों में छात्रसंघ चुनाव करवाने की मांग की। एसएफआई तहसील अध्यक्ष संजय कुमार सैनी ने बताया कि भाजपा सरकार छात्र संघ चुनाव न करवाकर विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला कर रही है ।

- उच्च शिक्षा मंत्री का पुतला जलाकर की चुनाव करवाने की मांग

छात्र संघ चुनाव करवाने से नई पीढ़ी को राजनीति में आने का मौका मिलता है और भाजपा सरकार छात्र संघ चुनाव न करवाकर छात्र आंदोलन को दबाना चाहती है। पहले भी भाजपा सरकार ने सता से आते ही छात्रसंघ चुनाव पर रोक लगा दी थी, जिसके बाद युवाओं के विरोध को देखते हुए कांग्रेस की सरकार ने छात्र हितों को लेकर चुनाव करवाए गए।

अब दोबारा से भाजपा सरकार ने सत्ता में आते ही चुनाव पर रोक लगाकर युवाओं के हितों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है तथा युवाओं को आगे बढ़ने से पहले ही उन्हें रोका जा रहा है। अगर सरकार ने छात्र हित में जल्द फैसला नहीं लिया तो पूरे प्रदेश भर में छात्र-छात्राओं द्वारा आंदोलन किए जाएंगे, जिसकी जिम्मेदार भाजपा सरकार होगी। कालेज व यूनिवर्सिटी में होने वाले छात्रसंघ चुनाव युवाओं को महाविद्यालय में लीडरशिप निभाना सीखाता है , विद्यार्थियों के हक एवं अधिकारों के लिए लड़ना सीखाता है। इसलिए छात्र संघ चुनाव होना अति आवश्यक है। इस दौरान युवाओं ने कालेज के सामने नारेबाजी कर विरोध जताया तथा तय समय पर चुनाव करवाने की मांग की। इस मौके पर संजय कुमार सैनी, पायल नायक, करण सैनी, सीमा सैनी, सोनू, सपना सिंघाना, मंजु, अनिल स्वामी, मोनू, आशीष, पुनीत, पियुश, विक्रम सैनी बबाई सहित अनेक युवा मौजूद थे।

खेतड़ी के स्वामी विवेकानंद राजकीय कॉलेज के सामने युवाओं ने विरोध प्रदर्शन किया।

साक्षरता के नये बैच का शुभारम्भ

चूरू, (कासं.)। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र- 2024-25 के साक्षरता के नये बैच का शुभारम्भ जिला कारागृह में बुधवार को जिला साक्षरता एवं सतत शिक्षा अधिकारी ओम प्रकाश फगेड़िया द्वारा किया गया। इस अवसर पर जिला साक्षरता अधिकारी फगेड़िया ने बताया कि निरक्षर बन्दियों को वन टीच वन कार्य योजना के अन्तर्गत पढ़े-लिखे बन्दियों द्वारा असाक्षरों को पढ़ाया जायेगा तथा एक निरक्षर बन्दी के नाम एक साक्षर पेड़ भी लगाया जायेगा।

इस अवसर पर कारागृह अधीक्षक नरेन्द्र स्वामी ने निरक्षर बन्दियों को साक्षर होने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की शुरूआत विद्या की देवी सरस्वती के चित्र के समक्ष अगरबत्ती व दीप प्रज्वलन तथा पुष्प भेंट करके सरस्वती वन्दना से की गई। मन्त्रोच्चारण के साथ पट्टी और पोथी पूजन किया गया। तीन महिला और 14 पुरूष नव प्रवेशार्थियों का तिलकार्चन कर ऑन लाइन पंजीयन पंजीयन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय राजकीय विधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. श्रवणकुमार सैनी की ओर से नवीन आपराधिक कानूनों की पुस्तकों का सेट जेल अधीक्षक को भेंट किया गया।

जी.पी.एफ. कटौती चालू करने के लिए सौंपा ज्ञापन

झुंझुनूं, (निसं)। राजस्थान विद्युत तकनीकी कर्मचारी एसोसिएशन के जिला महामंत्री आशीष पचार ने बताया कि बुधवार को सहायक अभियंता को डिस्कॉम चेयरमैन और प्रबंध निदेशक प्रसारण निगम, प्रबंध निदेशक उत्पादन निगम के नाम पांच सूत्री मांगों का ज्ञापन सौंपा। जिसमें बताया कि राज्य सरकार द्वारा पांचों विद्युत निगमों के कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना लागू करने के आदेश जारी किए गए हैं। सेवानिवृत्त कर्मचारियों के जीपीएफ खाते आवंटित कर पेंशन जारी की जा चुकी है एवं नवनियुक्त कर्मचारियों को भी जीपीएफ खाते आवंटित कर दिए गए हैं। परंतु सेवारत कर्मचारियों की सीपीएफ कटौती बंद नहीं की गई है और ना ही जीपीएफ खाता नंबर आवंटित किए गए हैं। जिससे कर्मचारियों में गहरा रोष व्याप्त है। इसलिए जल्द से जल्द जीपीएफ कटौती चालू कर सीपीएफ कटौती बंद कि जाए और पुरानी पेंशन को प्रभावी ढंग से लागू करने, इंटर डिस्कॉम स्थानान्तरण नीति बनवाने, आरजीएचएस योजना को विद्युत कार्मिकों पर राज्य सरकार के समरूप लागू करवानआदि मांगों के लिए ज्ञापन सौंपा।

मुझे गौतम गंभीर का टीम इंडिया के नए हेड कोच के तौर पर स्वागत करके बहुत खुशी हो रही है। आज के समय का क्रिकेट बहुत तेजी से बदला है, गंभीर ने इस बदलाव को करीब से देखा है। उन्होंने अपने करियर के कई रोल में नजर आए और सभी शानदार काम किया। - **जय शाह**

गंभीर के टीम इंडिया के हेड कोच बनने पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

अभिषेक नायर

40 वर्षीय अभिषेक नायर ने भारत के लिए तीन वनडे मैच खेले हैं। साथ ही वह गौतम गंभीर के साथ केकेआर में काम कर चुके हैं और उनके बहुत करीबी माने जाते हैं। नायर भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के भी करीबी हैं। वह टीम में सहायक कोच के रोल में रहेंगे जबकि गौतम गंभीर बल्लेबाजी कोच का पद भी खुद ही संभालेंगे। इसके अलावा रिपोर्ट्स के मुताबिक फील्डिंग कोच टी दिलीप को फिर से इस पद के लिए चुना जा सकता है। दिलीप फील्डिंग मेडल को लेकर बहुत ज्यादा चर्चा में रहे थे। बीते सालों में टीम की फील्डिंग का स्तर काफी ऊंचा है।

क्या आप जानते हैं ?... विश्व कप फुटबॉल में पहली हैट्रिक करने का श्रेय फीफा अमेरिका के बेट्रेम को जाता है, वहीं कुछ लोग अर्जेंटीना के गुलिरेमा स्टे विल को यह सम्मान देते हैं।

भारत के युवा खिलाड़ियों का जलवा, जिम्बाब्वे तो 23 रनों से चटाई धूल, सीरीज में बनाई बढ़त

नई दिल्ली, 10 जुलाई। शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय टीम इस समय जिम्बाब्वे दौरे पर है। जहां, दोनों टीमों के बीच टी20 सीरीज खेली जा रही है। बुधवार को भारत ने जिम्बाब्वे को दूसरे तीसरे टी20 मुकाबले में 23 रन से हरा दिया और सीरीज में 2-1 की बढ़त भी बना ली है। इससे पहले जहां भारत को जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मुकाबले में हार झेलनी पड़ी। वहीं दूसरे मुकाबले में भारत की युवा टीम ने जिम्बाब्वे को 100 रन से हराया था। इसके साथ ही अब तीसरे मुकाबले में भी भारतीय टीम को 23 रन से बेहतरीन जीत मिली है। हरारे स्पोर्ट्स क्लब स्टेडियम में खेले गए तीसरे मैच में भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 183 रनों का टारगेट सेट किया। जिसके जवाब में जिम्बाब्वे की टीम 6 विकेट गंवाकर 159 रन पर ही सिमट गई।

टी-20 खिलाड़ियों की रैंकिंग जारी ऋतुराज गायकवाड़ की बड़ी छलांग, अभिषेक शर्मा की धमाकेदार एंट्री

नई दिल्ली, 10 जुलाई। आईसीसी ने बुधवार को टी20 खिलाड़ियों की रैंकिंग जारी की है। बल्लेबाजों की सूची में ऋतुराज गायकवाड़ 13 स्थान की छलांग लगाकर टॉप-10 में पहुंच गए हैं। वह 662 रेटिंग अंकों के साथ सातवें स्थान पर हैं। उन्होंने जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे टी20 मैच में 77 रन की शानदार पारी खेली। उन्होंने 47 गेंदों का सामना करने के बाद 11 चौके और एक छक्का मारा था।

शतकवीर अभिषेक शर्मा ने रैंकिंग में धमाकेदार एंट्री की है। वह 75वें पायदान पर आ गए हैं। इंटरनेशनल डेब्यू मैच में शून्य पर पवेलियन लौटने वाले अभिषेक ने इंडिया वर्सेस जिम्बाब्वे दूसरे टी20 में तूफानी शतक ठोका था। उन्होंने 47 गेंदों में 7 चौकों और 8 छक्कों की मदद से 100 रन बनाए। वह सबसे कम पारियों में टी20 इंटरनेशनल शतक लगाने वाले भारतीय हैं। उन्होंने गायकवाड़ के साथ दूसरे विकेट के लिए 137 रन की बेहतरीन पारी खेली थी।

इसके साथ ही रिंकू सिंह को भी फायदा हुआ है। वह चार ऊपर चढ़कर 39वें पर पहुंच गए हैं। उन्होंने 22 गेंदों में 48 रन बनाए थे, जिसमें दो चौके और पांच छक्के शामिल हैं। जिम्बाब्वे के ब्रायन बेनेट ने दो आक्रामक कैमियों की बदौलत 25 स्थान की छलांग लगाई। वह 96वें स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड (844) टॉप पर काबिज हैं। भारत के स्टार बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव (821) दूसरे नंबर पर हैं।

गौतम गंभीर की सैलरी को लेकर पेंच फंसा

नई दिल्ली, 10 जुलाई। भारतीय क्रिकेट टीम को अपना नया मुख्य कोच गौतम गंभीर के रूप में मिल चुका है। हालांकि, उनकी नियुक्ति की वित्तीय औपचारिकताएं अभी भी पूरी की जानी बाकी हैं। लेकिन इस समय उनके लिए सबसे अहम चीज तीन साल के कार्यकाल के दौरान आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार होने के मद्देनजर पसंदीदा सहयोगी स्टाफ रखना है। वहीं कहा जा रहा है कि गंभीर का वेतन अभी तय किया जाना बाकी है, हालांकि ये उनके पूर्ववर्ती राहुल द्रविड़ और रवि शास्त्री के समान होने की उम्मीद है। बीसीसीआई के एक सूत्र ने पीटीआई को बताया कि गौतम गंभीर के लिए जिम्मेदारी संभालना ज्यादा अहम था। वेतन और अन्य चीजों पर काम किया जा सकता है। ये 2014 में रवि शास्त्री जैसा मामला ही है जिसमें उन्हें पहली बार मुख्य कोच डंकन फ्लेचर की जगह क्रिकेट निदेशक बनाया गया था।

गौतम गंभीर के हेड कोच बनने के बाद हरभजन सिंह ने शेयर किया पोस्ट, लिखी दिल की बात

नई दिल्ली, 10 जुलाई। बीसीसीआई ने टीम इंडिया के हेड कोच के तौर पर गौतम गंभीर के नाम की घोषणा कर दी है। गौतम गंभीर भारत के 25वें मुख्य कोच बने हैं। इससे पहले वह आईपीएल में दो टीम के साथ काम कर चुके हैं।

कोच बनने के बाद दुनिया भर के तमाम क्रिकेटर्स उन्हें बधाई दे रहे हैं। हरभजन सिंह ने भी उन्हें इसके लिए बधाई दी है। भज्जी ने कहा है कि आपका एग्रेशन खिलाड़ियों को उत्कृष्टता के मार्ग पर ले जाएगा। हरभजन सिंह ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा कि, भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच के रूप में नई पारी के लिए गौतम गंभीर को बधाई। मुझे यकीन है कि आपका अनुभव, ऊर्जा, जुनून, एग्रेशन और प्रतिभा टीम को अच्छे मार्ग पर ले जाएगी। मेरी तरफ से आपको ढेरों शुभकामनाएं दोस्त।

पीसीबी ने चयनकर्ता वहाब और रज्जाक को किया बर्खास्त

लाहौर, 10 जुलाई। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने टी-20 विश्वकप के निराशाजनक अभियान के बाद चयनकर्ताओं वहाब रियाज और अब्दुल रज्जाक को बर्खास्त कर दिया है। रज्जाक पाकिस्तान की महिला टीम के भी चयनकर्ता थे और उन्हें पद से हटा दिया गया। इन दोनों की विदाई का आधिकारिक ऐलान इस सप्ताह के आखिर में होगा। वहाब को पीसीबी चैयरमैन मोहसिन नकवी का बहुत करीबी माना जाता है। वहाब रियाज और अब्दुल रज्जाक को हटाये जाने के बाद पाकिस्तान की चयन समिति में मोहम्मद युसुफ, असद शफीक और डेटा एनालिस्ट बिलाल अफजल बचे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि चयन समिति का पुर्नगठन होगा और समिति में एक मुख्य चयनकर्ता भी होगा। इस चयन समिति के सदस्यों की संख्या भी सात से कम होगी। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान पिछले चार वर्षो में छह मुख्य चयनकर्ता देख चुका है। वहाब से पहले हारून राशिद, शाहिद अफरीदी, इंजमाम उल हक, मोहम्मद वसीम और मिस्बाह उल हक भी छोटे-छोटे कार्यकाल में चयनकर्ता बन चुके हैं।

भारत को मुकाम तक पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करुंगा : सुनील छेत्री

नई दिल्ली, 10 जुलाई। भारतीय फुटबॉल के महान खिलाड़ी सुनील छेत्री ने भले ही अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कह दिया हो लेकिन वह टीम के साथ जुड़े रहेंगे और उनका कहना है कि वह देश को मुकाम पर पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को डूरंड कप फुटबॉल टूर्नामेंट के ट्रॉफी दौरे को हरी झंडी दिखाई। इस कार्यक्रम में मौजूद छेत्री ने कहा कि भारत एक दिन ऐसे मुकाम पर पहुंचेगा जिसका देश के लोगों ने सपना देखा है। कई राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ने के बाद पिछले महीने अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास लेने वाले छेत्री ने कहा, "मैंने अपने करियर में कई उतार चढ़ाव देखे हैं लेकिन एक

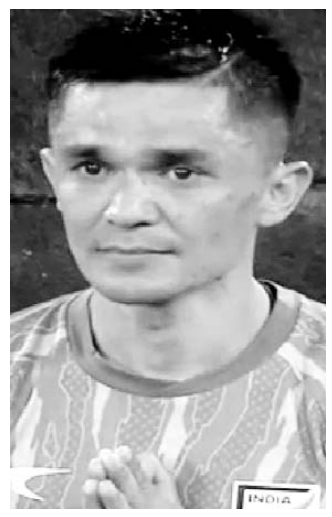

चीज बरकरार रहेगी कि एक दिन दिन हम उस स्तर पर पहुंचेंगे जिसका हम सभी ने सपना देखा है।" छेत्री इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) में खेलना जारी रखेंगे क्योंकि बेंगलुरु एफसी के साथ उनका अनुबंध अगले साल तक है। उन्होंने हालांकि अभी तक फैसला नहीं किया है कि वह कब तक घरेलू फुटबॉल में खेलते रहेंगे। छेत्री अगले महीने 40 साल के हो जायेंगे। 2022 में बेंगलुरु एफसी की अगुआई करते हुए डूरंड कप खिताब दिलाने वाले छेत्री ने कहा, "मैं अब ज्यादा कुछ नहीं कर सकता हूं क्योंकि मैं संन्यास ले चुका हूं लेकिन मैं भारत को उस मुकाम तक पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करूंगा।

नोवाक जोकोविच ने विंबलडन सेमीफाइनल में की एंट्री

नई दिल्ली, 10 जुलाई। दुनिया के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने कूल्हे की चोट के कारण बुधवार को एलेक्स डि मिनोर के हटने पर विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के पुरुष एकल के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ऑस्ट्रेलिया के नौवें वरीय डि मनोर ने सेंटर कोर्ट पर जोकोविच के खिलाफ होने वाले क्वार्टर फाइनल मुकाबले से घंटों पहले टूर्नामेंट से हटने की घोषणा की।

डि मिनोर ने प्रेस कांफ्रेंस में कहा, "बेशक यह वह घोषणा नहीं है जो मैं करना चाहता था। मैं टूट चुका हूं।" उन्होंने बताया कि सोमवार को चौथे दौर में आर्थर फिल्स पर 6-2, 6-4, 4-6, 6-3 की जीत के दौरान उन्होंने 'क्रैक' की आवाज सुनी थी। जब वह मैच समाप्त हुआ तो डि मिनोर सावधानी से नेट की ओर गए लेकिन बाद में मीडिया से बात करते समय उन्होंने स्थिति की गंभीरता को कम करके आंका। इस वॉकओवर से जोकोविच ने 13वीं बार विंबलडन सेमीफाइनल में जगह बनाई और इस तरह से उन्होंने पुरुष एकल में रोजर फेडरर के रिकॉर्ड की बराबरी की। दूसरे वरीयता प्राप्त जोकोविच ने पुरुष एकल में रिकॉर्ड 24 ग्रैंड स्लैम खिताबों में से सात विंबलडन में जीते हैं।

यामल और ओल्मो के शानदार गोलों की बदौलत स्पेन यूरो 2024 के फाइनल में

बर्लिन, 10 जुलाई। युवा सनसनी लैमिन यामल और दानी ओल्मो के शानदार गोलों की बदौलत स्पेन ने बुधवार को फ्रांस पर 2-1 की रोमांचक जीत दर्ज करते हुए यूरो 2024 के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। मैच के दौरान मैदान पर स्पेन के 16 वर्षीय यामल ने विलक्षण प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए गोल दागकर अपनी टीम की मैच में वापसी कराई और इसके साथ ही यूरोकप में सबसे कम उम्र के गोल करने वाले खिलाड़ी के रूप में अपना नाम इतिहास में दर्ज करा लिया। स्पेन ने मैच की शुरुआत शानदार तरीके से की। लेकिन नौवें मिनट में काइलियन एमबाप्पे के बेहतरीन पास रैंडल कोलो मुआनी ने हेडर के जरिए गोल दागकर फ्रांस को बढ़त दिलाई। स्पेन को मैच के दौरान फ्रांस की प्रशिक्षित और मजबूत रक्षापंक्ति का सामना करना पड़ा। हालांकि, 21वें मिनट में स्पेन के युवा खिलाड़ी यामल ने एक शानदार शॉट के जरिए गोलकर स्कोर को एक-एक से बराबर कर दिया। यह शॉट इतना जबर्दस्त था कि फ्रांस के गोलकीपर के पास बचाव करने का मौका भी नहीं मिला। इसके चार मिनट बाद स्पेन डैनी ओल्मो ने फ्रांसीसी रक्षापंक्ति को भेदते हुए गेंद को नेट में डालकर मुकाबला अपने पक्ष में कर लिया। दूसरे हाफ में फ्रांस ने वापसी का प्रयास करते हुए कई हमले किए।

अल्कराज और मेदवेदेव ने क्वार्टरफाइनल मुकाबले जीते

लंदन, 10 जुलाई। स्पेन के दिग्गज कार्लोस अल्कराज और रूस के पांचवें वरीयता प्राप्त डेनियल मेदवेदेव बुधवार को विंबलडन चैंपियनशिप में अपने क्वार्टरफाइनल मुकाबले जीत गये। क्वार्टरफाइनल मुकाबले में 21 वर्षीय अल्कराज ने पहले सेट में पिछड़ने के बाद जबरदस्त वापसी करते हुए अमेरिका के टॉमी पॉल को 5-7, 6-4, 6-2, 6-2 से हराया। मैच के बाद अल्कराज ने कहा, पहला सेट हारने के बाद मैंने अपने आपको मानसिक रूप से मजबूत किया। उन्होंने कहा, यह मेरे लिए थोड़ा मुश्किल था, लेकिन मुझे पता था कि यह एक लंबा मैच है। मैंने अगले सेट में जीत हासिल की और मैं खुश हूं।

मुर्मु ने किया डूरंड कप टूर्नामेंट की ट्रॉफियों का अनावरण

नई दिल्ली, 10 जुलाई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बुधवार को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित समारोह में डूरंड कप, प्रेसिडेंट्स कप और शिमला ट्रॉफियों का अनावरण किया। इस अवसर पर श्रीमती मुर्मु ने डूरंड कप टूर्नामेंट 2024 में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि फुटबॉल विश्व के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक है। जब पेशेवर फुटबॉल खिलाड़ी हजारों प्रशंसकों के सामने खेलते हैं, तो खिलाड़ियों और दर्शकों का उत्साह कई गुना बढ़ जाता है। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि वे जीतें या हारें खेल में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए और उन्हें दूसरी टीमों का सम्मान करना चाहिए। कभी-कभी खेल में आवेग और जुनून होता है, लेकिन खिलाड़ियों को अपनी भावनाओं पर काबू पाने और खेल में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए।

सुनील गावस्कर ने डेब्यू मैच से जमाई थी अपनी धाक

नई दिल्ली, 10 जुलाई। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान सुनील मनोहर गावस्कर आज यानी की 10 जुलाई को अपना 75वां जन्मदिन मना रहे हैं। सुनील गावस्कर लिटिल मास्टर के नाम से भी जाने जाते हैं। उनका नाम इस दुनिया के सबसे सफल बल्लेबाजों में से एक है। बता दें कि जब उन्होंने क्रिकेट की दुनिया में कदम रखा था, तो टेस्ट में वेस्टइंडीज की पेस बैटरी की तूती बोलती थी। वहीं अपने समय में वह बिना हेलमेट के बैटिंग किया करते थे। आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार : बॉम्बे (मुंबई) में 10 जुलाई 1949 को सुनील गावस्कर का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम मीनल गावस्कर और मां का नाम मनोहर गावस्कर है। साल 1974 में उन्होंने मार्शनील गावस्कर से शादी रचाई थी। सुनील गावस्कर का एक बेटा है, जिसका नाम रोहन गावस्कर है। रोहन भी अपने पिता की तरह भारतीय टीम में रह चुके हैं, लेकिन रोहन को अपने पिता की तरह कामयाबी नहीं मिली।

क्रिकेट में एंट्री : साल 1971 में सुनीव गावस्कर ने अपने इंटरनेशनल क्रिकेट की शुरुआत की थी। साल 1971 में गावस्कर ने वेस्टइंडीज दौरे पर पोर्ट ऑफ स्पेन में अपना टेस्ट डेब्यू किया था। गावस्कर के लिए यह सीरीज काफी यादगार रही थी। अपने करियर की पहली ही सीरीज में उन्होंने वेस्टइंडीज के खूंखार गेंदबाजों की क्लास लगा दी थी। उस डेब्यू सीरीज में गावस्कर ने वेस्टइंडीज के खिलाफ 4 टेस्ट मैचों में रिकॉर्ड 774 रन बनाए। बता दें कि इस सीरीज में उनके द्वारा लगाया गया दोहरा शतक सहित 4 शतक और 3 अर्द्धशतक निकले। गावस्कर का डेब्यू सीरीज में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड है। 53 साल बाद भी कोई बल्लेबाज उनके इस रिकॉर्ड को नहीं तोड़ पाया।

साल 1983 वर्ल्ड कप : साल 1983 में हुए वर्ल्ड कप का भी गावस्कर हिस्सा रहे हैं। हालांकि टूर्नामेंट के दौरान वह अच्छा प्रदर्शन करने में नाकामयाब रहे।

राहुल द्रविड़ ने साथियों के लिए किए 2.5 करोड़ रुपये कुर्बान!

नई दिल्ली, 10 जुलाई। राहुल द्रविड़ की विनम्रता एक बार फिर देखने को मिली, जब निवर्तमान मुख्य कोच ने बारबाडोस में टी20 विश्व कप जीत के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीओआई) द्वारा दिए जाने वाले 2.5 करोड़ रुपये के अतिरिक्त बोनस को लेने से इनकार कर दिया। द्रविड़ ने यह सुनिश्चित करने का फैसला किया कि सीनियर पुरुष टीम के सभी सहयोगी स्टाफ सदस्यों को समान बोनस पुरस्कार मिले। बीसीसीआई ने खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ सहित टीम इंडिया के सदस्यों के लिए 125 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि की घोषणा की। खिलाड़ियों और राहुल द्रविड़ को जहां 5 करोड़ रुपये दिए गए, वहीं बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौर, गेंदबाजी कोच पारस महाम्ब्रे और फील्डिंग कोच टी दिलीप सहित सहयोगी स्टाफ के अन्य सदस्यों को बोनस के रूप में 2.5 करोड़ रुपये मिलने वाले थे। हालांकि, इंडिया टुडे को एक सूत्र ने बताया कि राहुल द्रविड़ ने बोर्ड से कहा कि वह बोनस के रूप में केवल 2.5 करोड़ रुपये लेंगे।

रोहित शर्मा को लेकर कुलदीप यादव ने किया बड़ा खुलासा, कहा- वो मेरे भाई की तरह

नई दिल्ली, 10 जुलाई। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 विनिंग टीम का हिस्सा रहे कुलदीप यादव ने टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया था। उनकी कमबैक स्टोरी भी काफी इंस्पायरिंग है, कुलदीप यादव एक समय टीम इंडिया प्लान से आउट हो चुके थे। लेकिन उन्होंने अपनी गेंदबाजी में कुछ बदलाव किए और टीम इंडिया में बेहतरीन वापसी की। वहीं अपने करियर में नई उड़ान का श्रेय उन्होंने रोहित शर्मा को दिया है। इस दौरान उन्होंने रोहित शर्मा के बारे में कई खुलासे भी किए हैं।

दरअसल, कुलदीप से रोहित शर्मा के साथ कमेंट्री पर पूछा गया तो उन्होंने कहा कि, वो हमेशा से बहुत सपोर्टिव रहे हैं, और उनको हमेशा से मेरी स्किल्स में काफी ज्यादा विश्वास रहा है। एक समय था, जब मैं अपनी खुद की स्किल्स को लेकर कॉन्फिडेंट नहीं था। वो मुझसे बदलाव को लेकर बता करते रहते थे। 2019 के दौरान उन्होंने कहा कि मैं गेंदबाजी में क्या बदलाव करके बेहतर बन सकता हूं।

रोहित भाई को लगता था कि मैं कुछ क्षेत्रों में थोड़े बदलाव कर लूं तो मैं बल्लेबाजों के लिए ज्यादा मुश्किलें पैदा कर सकता हूं। जब मैं अपनी इंजरी से वापस आया, तो मुझसे लगातार बदलाव की बात करते रहते थे। जो मैंने अपनी गेंदबाजी में किए भी। वो बड़े भाई जैसे हैं, और मुझसे बहुत प्यार करते हैं। वो काफी ज्यादा मुंहफट हैं और सीधा बताते हैं कि उन्हें मुझसे क्या चाहिए। उनके पास मेरे लिए एक तय प्लान था कि मुझे बीत के ओवरों में आकर विकेट चटकाना है। वो मुझे अटैकिंग स्पिनर के तौर पर इस्तेमाल करना चाहते थे।

आईएचएफ ट्रॉफी हैंडबॉल में भारत की विजयी शुरुआत

भारतीय यूथ टीम की जीत में रवि के डेढ़ दर्जन गोल

बांग्लादेश को 45-35 गोलों से हराया, आज भी खेले जायेंगे चार मैच

जयपुर, 10 जुलाई। आईएचएफ ट्रॉफी हैंडबॉल चैम्पियनशिप में बुधवार को यूथ (अंडर-18) वर्ग में मेजबान भारत ने अपना विजयी अभियान शुरू करते हुए कप्तान रवि के शानदार 15 गोलो की बदौलत बाग्लादेश को 45-35 गोलो से पराजित किया। माध्यतर तक भारत ने 27-16 गोलो की बढत बनाये हुए थी। मैच के मोस्ट वैल्युएबल प्लेयर चुने गये रवि पूरे मैच में छाये रहे। उसने 15 गोलो के अलावा साथी खिलाड़ियों के साथ शानदार तालमेल भी बनाया। उसके अलावा प्रवीण गिल ने 9, रोहित-रोहित ने 8-8, मनिष यादव व नवदीप ने 2-2 और प्रवेश ने 1 गोल किया। बाग्लादेश के लिए मोहम्मद अतीक हुसैन आकाश ने सर्वाधिक 7 गोल किये। तोफिक कूर रहमान, मोहम्मद इबादत हुसैन रासेल ने 6-6,

मोहम्मद सोहाग अली ने 5, मोहम्मद फहीम फेजल माहिर ने 4, मोहम्मद रातुलिदीन, मोहम्मद अनिक इस्लाम ने 3-3 और रिजवान बिन फारूक अन्नान ने 1 गोल का योगदान दिया। दक्षिण एशियाई हैंडबॉल महासंघ के महासचिव डॉ. आनन्देश्वर पांडे ने मोस्ट वैल्युएबल प्लेयर भारत के रवि को पुरस्कार दिया। इससे पहले जूनियर (अंडर-20) के रोमांचक मैच में मालदीव ने नेपाल को हराया। पहले हॉफ (13-14) में एक गोल से पिछड़ने के बाद दूसरे हॉफ में शानदार वापसी करते हुए मालदीव ने पुरूषों की आईएचएफ ट्रॉफी हैंडबॉल चैम्पियनशिप के अंडर-20 आयु वर्ग के रोमांचक मैच में बाग्लादेश को 28 से मुकाबले 30 गोलो से हराया। मालदीव के लिए मोहम्मद यशमू अहमद ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए 10 गोल किये। इसके अलावा मोहम्मद अफानाथी ने 7, अहमद राउल असद ने 6, मोहम्मद अमसाल ने 2, मुसा हिबाह इस्माईल रिजा और अहमद उमेस ने 1-1 गोल का योगदान दिया।

कोपा अमेरिका के फाइनल में पहुंचा अर्जेंटीना

नई दिल्ली, 10 जुलाई। लियोनेल मेसी के अपने करियर के 109वें अंतरराष्ट्रीय गोल और वर्तमान टूर्नामेंट के पहले गोल के दम पर गत चैंपियन अर्जेंटीना ने कनाडा को 2-0 से हराकर कोपा अमेरिका फुटबॉल टूर्नामेंटके फाइनल में प्रवेश किया। अर्जेंटीना की तरफ से जूलियन अल्वारेज़ ने 22वें मिनट में पहला गोल किया जबकि मेसी ने 51वें मिनट में एन्जो फर्नांडीज के शॉट को गोल में भेज कर उसकी बढ़त दोगुनी की।

मेसी के सामने तब गोलकीपर मैक्सिम क्रेप्यू थे लेकिन इस स्टार फुटबॉलर के आगे उनकी एक नहीं चली। मेसी ने अर्जेंटीना के लिए अपने पिछले 25 मैचों में 28 गोल किए हैं। वह कोपा अमेरिका में अब तक 14 गोल कर चुके हैंजो रिकॉर्ड से तीन गोल कम हैं। अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में मेसी से अधिक गोल पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो के नाम पर दर्ज हैं जिन्होंने अभी तक 130 गोल किए हैं। ईरान के अल देई के नाम 1993 से 2006 तक 108 या 109 गोल दर्ज हैं। इक्वाडोर के खिलाफ 2000 में किए गए उनके गोल को लेकर विवाद है क्योंकि इस मैच के अंतरराष्ट्रीय दर्जे को लेकर मतभेद हैं। अर्जेंटीना ने यह जीत अपने स्वतंत्रता दिवस पर हासिल की जिससे उसका अजेय अभियान 10 मैच तक पहुंच गया है। अर्जेंटीना रविवार को होने वाले फाइनल में उरुग्वे या कोलंबिया का सामना करके रिकॉर्ड 16वां कोपा खिताब जीतने की कोशिश करेगा।

लोको पायलट्स का मुद्दा गर्माया, 17 विपक्षी सांसद सरकार के खिलाफ लामबंद हुये

विपक्ष के 17 से अधिक सांसदों ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर ट्रेन चालकों से जुड़े विभिन्न मुद्दों एवं परेशानियों को उजागर किया है

नई दिल्ली, 10 जुलाई। विपक्षी दलों के 17 से अधिक सांसदों ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर ट्रेन चालकों से जुड़े उन विभिन्न मुद्दों को उजागर किया है, जो उन्हें परेशान करते हैं और जिसके परिणामस्वरूप रेड-सिग्नल ओवरशूट के साथ-साथ रेल दुर्घटनाएं होती हैं। हालांकि, रेल मंत्री वैष्णव ने बुधवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि विपक्ष लोको पायलटों को हतोत्साहित करने के लिए गलत सूचनाएं फैला रहा है।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को कहा कि 'लोको पायलट' रेलवे परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य हैं लेकिन विपक्ष उनका मनोबल गिराने के लिए काफी दुष्प्रचार एवं नाटक कर रहा है। वैष्णव ने 'एक्स' पर ट्रेन चालकों की कार्यदशा सुधारने के लिए रेलवे द्वारा उठाये गये विभिन्न कदमों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, "लोको पायलट की ड्यूटी के घंटे पर सावधानीपूर्वक नजर रखी जाती है। यात्राओं (फेरों) के बाद ध्यानपूर्वक उन्हें आराम दिया जाता है। ड्यूटी के औसत घंटे निर्धारित घंटों (समय सीमा) के अंदर बनाकर रखे जाते हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "इस साल जून माह में (ड्यूटी की) औसत अवधि आठ घंटे से कम रही। आकस्मिक परिस्थितियों में यात्रा अवधि निर्धारित घंटों से अधिक हो जाती है।" रेल मंत्री ने कहा कि 7000 लोको कैब और लगभग सभी (558) रनिंग रूम अब वातानुकूलित हैं।

लोको पायलट यूनियन, ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन द्वारा इन सांसदों से संपर्क करने और उनसे अपनी समस्याओं को रेल मंत्री के संज्ञान में लाने का अनुरोध करने के बाद, 5 सांसदों ने अलग-अलग पत्र लिखे हैं, जबकि 12 सांसदों ने हाल ही में एक संयुक्त नोट भेजकर ट्रेन चालकों के लिए ज्यादा सुविधाएं और आराम देने की मांग की है।

डीएमके के राज्यसभा सांसद एम षणमुगम ने अपने पत्र में लिखा, "हमारा मानना है कि थकान और आराम के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलने के कारण ही नींद की आगोश में रहने वाले चालकों से सावधानी में कमी देखी जाती है। यहां तक कि रेलवे सुरक्षा पर उच्चाधिकार प्राप्त समिति ने भी सिफारिश की है कि रनिंग स्टाफ के लिए लगातार रात की ड्यूटी दो रातों तक ही सीमित होनी चाहिए। उन्हें फिर से ड्यूटी पर भेजे जाने से पहले कम से कम एक पूरी रात सोने की अनुमति दी जानी चाहिए।"

वर्तमान में, रेलवे के नियम लगातार चार रात की ड्यूटी की अनुमति देते हैं और लोको पायलट इसे घटाकर दो रात करने की मांग कर रहे हैं। षणमुगम के अनुसार, रेलवे प्रशासन ने उन लोको पायलटों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की है, जिन्होंने आराम के लिए साप्ताहिक छुट्टी ली थी। लोको पायलटों ने ऐसी कार्रवाई भी वापस लेने की मांग की है।

बता दें कि पिछले सप्ताह लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने 'लोको पायलट' के एक समूह के साथ बैठक की थी। इन 'लोको पायलट' ने "कम कर्मियों की वजह से पर्याप्त आराम नहीं मिलने" की शिकायत की थी। गांधी ने उन्हें आश्वासन दिया था कि वह संसद में उनके मुद्दे उठायेंगे।

'भाजपाई सबसे बड़े भूमाफिया, अयोध्या की जमीन भी नहीं छोड़ी'

इटावा , 10 जुलाई (वार्ता)। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को कहा कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण स्थल के आसपास भाजपाइयों ने बड़े पैमाने पर बेशकीमती जमीन अपने नाम करवा कर खुद को भू माफिया के रूप में पेश किया है।

सिविल लाइन स्थित आवास पर पत्रकारों से बात करते हुए उन्होने कहा कि भाजपा से जुड़े हुए लोग विपक्ष को भू माफिया बताते है जबकि असली भू माफिया भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लोग है,जिन्होंने अयोध्या की ही बेशकीमती जमीन को नहीं बख्शा है।

जैसे-जैसे अयोध्या की ज़मीन के सौदों का भंडाफोड़ हो रहा है, उससे ये सच सामने आ रहा है कि भाजपा राज में अयोध्या के बाहर के लोगों ने मुनाफ़ा कमाने के लिए बड़े स्तर पर ज़मीन की ख़रीद-फ़रोख़्त की है।

उन्होने कहा कि भाजपा सरकार द्वारा पिछले सात सालों से सर्किल रेट न बढ़ाना, स्थानीय लोगों के ख़िलाफ़ एक आर्थिक षड्यंत्र है। इसकी वजह से अरबों रुपये के भूमि घोटाले हुए हैं।

दिया कुमारी ने अपने पहले बजट में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घोषणा की गई है।

एनर्जी सेक्टर में 2031-32 का टारगैट रखकर 2.25 लाख करोड़ खर्च किए जाएंगे। वर्ष 2031 तक परंपरागत स्रोतों से 20,500 मेगावाट और अक्षय ऊर्जा के स्रोत से 35,600 मेगावाट बिजली उत्पादन करने की घोषणा की गई है। बजट में इस साल बिजली से वंचित 2.08 लाख घरों में बिजली कनेक्शन देने की घोषणा की है। पचास हजार मेगावाट से ज्यादा सोलर एनर्जी उत्पादन के लिए बीकानेर के पूगल, छतरगढ़ और जैसलमेर के बोडाना में सोलर पार्क विकसित किया जाएगा। हर जिले में एक आदर्श सौर ग्राम बनाया जाएगा, जिसमें दो मेगावाट तक के सोलर पावर प्लांट लगाए जाएंगे, इसमें 40 फीसदी अनुदान दिया जाएगा। प्रदेश के सभी सरकारी दफ्तरों को चरणबद्ध तरीके से सोलर एनर्जी से जोड़ा जाएगा।

- **बजट में एनर्जी सैक्टर पर 2031-32 का लक्ष्य रख कर 2.25 लाख करोड़ रूपए खर्च करने का प्रावधान रखा गया है।**
- **बजट में 5 साल में 13,000 किलो मीटर लम्बा सड़क नैटवर्क बनाने की घोषणा की गई है, जिस पर 60,000 करोड़ रूपए खर्च होंगे।**

बजट में पांच साल में 13 हजार किमी लंबाई का सड़क नेटवर्क विकसित करने की घोषणा की गई है, इस पर 60 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। प्रदेश में पहली बार 2750 किमी से अधिक लंबाई के 9 ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे बनाए जाएंगे, इसके लिए 30 करोड़ की लागत से डीपीआर बनाई जाएगी। स्टेट हाईवे, बायपास, फ्लाईओवर, आरयूबी की मरम्मत के लिए 9 हजार करोड़ रुपए दिए गए हैं। बिपरजॉय तूफान से टूटी सड़कों और ओवरब्रिज की मरम्मत के लिए 2 साल में 644 करोड़ रुपए खर्च होंगे। उपखंड और तहसील मुख्यालय को जिला मुख्यालय की सड़क से जोड़ने के लिए 306 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। शहरी क्षेत्र की सड़कों की मरम्मत और अपग्रेडेशन के लिए 500 करोड़ रुपए खर्च होंगे। नौ ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस वे में जयपुर किशनगढ़, अजमेर, जोधपुर 350 किमी, कोटपुतली-किशनगढ़ 181 किमी, जयपुर-भीलवाड़ा 193 किमी, बीकानेर-कोटपुतली 295 किमी, ब्यावर-भरतपुर 342 किमी, जालौर-झालावाड़ 402 किमी, अजमेर-बांसवाड़ा 358 किमी, जयपुर-फलौदी 342 किमी, श्रीगंगानगर-कोटपुतली 290 किमी शामिल हैं।

उद्योग और निवेश को बढ़ावा देने के लिए बजट में दिया कुमारी ने कई घोषणाएं की हैं। प्रदेश में 4 राम-जानकी औद्योगिक क्षेत्र बनाने का ऐलान किया गया है। बाड़मेर के धर्मपुरा, उदयपुर के माल की तूस, पाली के वरकाना और बूंदी के नैनवा में रामजानकी औद्योगिक क्षेत्र बनेंगे। प्रदेश में एक्सपोर्ट प्रमोशन पॉलिसी लाई जाएगी। इसमें थीम बेस्ड इंडस्ट्री पार्क, ट्रांसपोर्ट के लिए रिसर्च और टैक्नॉलजी और ग्रीन टैक्नॉलजी को बढ़ावा दिया जाएगा। इसके अलावा टैक्सटाइल पॉलिसी, राजस्थान वेयरहाउसिंग पॉलिसी, नई एमएसएमई पॉलिसी लाने की घोषणा की है। इस साल होने वाले इन्वेस्टर समिट के साथ नॉन रेजिडेंट राजस्थान कॉन्क्लेव आयोजित होगा।

'बजट की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बनाए गए जिलों का बजट में जिक्र नहीं होने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि एक जिला बनाने पर कम से कम 3 हजार करोड़ का खर्च आता है लेकिन पूर्ववर्ती सरकार ने बिना बजट तथा बिना आवश्यकता के ही नए जिलों की घोषणा कर दी थी। साइबर क्राइम पर रोक के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार कानून व्यवस्था का कड़ाई से पालन करवा रही है और अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाकर सफाया किया जा रहा है। पिछली सरकार में पेपरलीक का कोई आरोपी नहीं पकड़ा गया लेकिन हमने 6 माह में 100 से ज्यादा लोगों को पकड़ा है।

'हर महिला अपने पति से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पुरूष इस तथ्य से वाकिफ हैं, वे घरेलू व्यय के अलावा अपनी पत्नी को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए जॉइंट बैंक अकाउन्ट अथवा उसके खाते का ए.टी.एम. उपलब्ध करवाते हैं।

उन्होंने अपनी टिप्पणी में आगे कहा कि "विवाहित महिला की कमजोर आर्थिक स्थिति का समाधान करना वास्तव में एक संवैधानिक दायित्व है। इन महिलाओं में वह तलाकशुदा महिला भी शामिल है, जिसके पास आय का कोई स्वतंत्र स्त्रोत नहीं होता। यह सर्वविदित है कि विवाहित स्त्री अपने परिवार का पालन-पोषण करने, बच्चों को पालने और बुजुर्गों की सेवा के लिए अपने रोजगार के अवसरों का त्याग करती है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश में कहा गया है कि अपराध प्रक्रिय संहिता की धारा 125 के तहत एक मुस्लिम महिला को उसके पति से तलाक मिलने के बाद भी वह भरण-पोषण राशि प्राप्त करने की हकदार है और यह भरण-पोषण दान दया नहीं बल्कि विवाहित महिलाओं का मौलिक अधिकार है।

कोर्ट ने कहा, "यह अधिकार धार्मिक सीमाओं से परे है। लिंग की समानता के सिद्धांत को लागू करने वाला एवं समस्त विवाहित महिलाओं के वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने वाला है।"

धारा-125 व्यापक रूप से कहती है कि एक व्यक्ति जो साधन सम्पन्न है वह अपनी पत्नी, बच्चों अथवा माता-पिता को भरण-पोषण देने से इनकार नहीं कर सकता है।

कोर्ट का यह फैसला मोहम्मद अब्दुल समद की याचिका पर आया है जिसे एक परिवार न्यायालय ने उसकी तलाकशुदा पत्नी को 20,000 रूपये प्रतिमाह भरण-पोषण के बतौर अदा करने का निर्देश दिया था। समद ने इस निर्णय को तेलंगाना के उच्च न्यायालय में चुनौती दी थ जिसने इस राशि में संशोधन करके इसे 10,000 रूपये किया था। उसके बाद उसने इस निर्णय के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। उसकी ओर से वकील ने तर्क में कहा कि मुस्लिम महिलाएँ (प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन डायवोर्स) एक्ट 1986 के तहत ज्यादा संसाधन की मांग कर सकती है और इस बात पर जोर दिया कि यह अधिनियम सी.आर.पी.सी. की धारा 125 के तहत जो कुछ मिलता है उससे काफी अधिक मात्रा में प्रदान करता है।

वकील ने यह भी तर्क पेश किया कि एक्ट के संदर्भ में विशेष कानून सामान्य कानून के ऊपर लागू होगा।

कोर्ट मित्र सहायक गौरव अग्रवाल ने तर्क का जवाब दिया कि जैन्डर न्यूट्रल सी.आर.पी.सी. के तहत पर्सनल लॉ एक महिला के राहत पाने के हक को छीन सकता है।

थकाने वाले ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लेकिन शिवसेना की मन:स्थिति भाजपा से दूर रहने की ही बनी हुई है क्योंकि भाजपा में अब गिरावट आती जा रही है।

लोकसभा चुनाव में इस गठबन्धन की उपलब्धि अच्छी रही थी तथा गठबन्धन को उम्मीद है कि विधानसभा चुनावों में उसकी स्थिति और भी बेहतर रहेगी तथा वह सरकार बनायेगा।

ऐसी चर्चाएं हैं कि महाराष्ट्र चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस को सबसे ज्यादा सीटें मिल सकती हैं उसके बाद शिव सेना तथा सबसे कम सीटों पर एन.सी.पी. पर चुनाव लड़ेगी क्योंकि भाजपा इसके दो टुकड़े कर चुकी है।

ऐसा माना जा रहा है कि राहुल गांधी महाराष्ट्र में जबरदस्त प्रचार अभियान चलायेंगे क्योंकि भाजपा के हारने से कांग्रेस और उसके गठबन्धन पार्टनरों की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग जाएंगे। फिलहाल, राहुल गांधी छुट्टियां मनाने गये हुए हैं तथा ऐसी उम्मीद की जा रही है कि उनके लौटने के बाद ही, पार्टी के पुनर्गठन का एजेंडा क्रियान्वित होगा। इस प्रक्रिया में पुराने नेताओं का महत्व नगण्य हो जायेगा तथा विभिन्न राज्यों में चुनाव-अभियान के नेतृत्व के लिये समर्पित लोग आगे लाए जाएंगे।

भाजपा का नया अध्यक्ष बनाने में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में संशोधन किया था तथा इस प्रकार के मामलों में निर्णय लेने का अधिकार पार्टी के संसदीय बोर्ड को दे दिया था। इसलिए, पार्टी नड्डा के कार्यकाल को कानूनी रूप से बढ़ा सकती है। लेकिन संकट की बात यह है कि पार्टी की ओर से इस मामले में अभी तक कोई अधिकृत बयान नहीं आया है। इसलिये प्रश्न यह है कि नड्डा के कार्यकाल को बढ़ाने या कोई कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करने के सम्बन्ध में विधिवत रूप से कोई घोषणा करने में आखिर क्या बाधाएं आ रही हैं?

लोकसभा चुनावों के प्रचार अभियान के दौरान नड्डा ने एक विवादास्पद टिप्पणी करते हुये कह दिया था कि भाजपा अब किसी भी रूप में आर.एस.एस. पर निर्भर नहीं है। जाहिर है, आर.एस.एस. इस टिप्पणी से नाराज़ हो गई थी। अगर आज की स्थिति देखी जाये तो नड्डा के पास तीन पद हैं - वे राज्यसभा में सत्ता पक्ष के नेता हैं, वे स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री हैं तथा वे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। इस स्थिति को भाजपा के "एक व्यक्ति एक पद" के सिद्धान्त का उल्लंघन माना जा रहा है इसके अलावा इसे भाजपा द्वारा की जा रही आर.एस.एस. की अवज्ञा के रूप में भी देखा जा रहा है।

आर.एस.एस. चाहती है कि अगले भाजपा अध्यक्ष के मामले में वह हस्तक्षेप करे जबकि वर्तमान पार्टी नेतृत्व जनवरी 2025 तक नड्डा को ही इस पद पर बनाये रखना चाहता है क्योंकि तब तक महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड तथा जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनावों की प्रक्रिया पूरी हो जायेगी। सूत्रों का कहना है कि पार्टी का सदस्यता अभियान अगस्त से शुरू होना है तथा इसके बाद मंडल तथा राज्य स्तरीय चुनाव होंगे। इस प्रक्रिया के इस वर्ष के अन्त तक पूरा होने की सम्भावना नहीं है। और यह सब होने से पहले, नये अध्यक्ष की घोषणा सम्भावित दिखाई नहीं दे रही। 2019 में, जब भाजपा अध्यक्ष अमित शाह केन्द्र सरकार में शामिल किये गये थे, तब नड्डा कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किए गए थे। इस समय, ऐसे कोई संकेत नहीं है कि नड्डा को उनका कोई स्थानापन्न या उत्तराधिकारी अभी मिल जाएगा।

- **वैसे भी नड्डा इस समय तीन महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेवारी संभाले हुए हैं: पार्टी अध्यक्ष, राज्यसभा में सत्तापक्ष के नेता व कैबिनेट मंत्री। ये तीन जिम्मेवारियाँ एक ही व्यक्ति को देना पार्टी के एक व्यक्ति, एक पद के सिद्धांत का उल्लंघन है।**
- **पर, चर्चा यह है कि नड्डा दिसम्बर में चार राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों तक तीनों पदों पर बने रहेंगे।**

'विमानों जैसी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ये बसे बिजली से चलती हैं। उन्होंने कहा, इन बसों को देखने के बाद मैने टाटा को बोला कि चेकोस्लोवाकिया की स्कोडा कंपनी के साथ समझौता करो और इस तरह की बसों को भारत में लेकर आओ। उन्होंने बताया कि हिताची नामक कंपनी ने बताया कि 132 सीट की बस चार्ज होगी और एक बार चार्ज करने पर वह 40 किलोमीटर की दूरी तय करेगी।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600